जहरीली शराब से हुई मौतों का जिम्मेवार कौन?

● **मिथिलेश कुमार/ललन कुमार**

शराबबंदी को लेकर बिहार में बनाये गये कड़े कानून के बाद भी सूबे में शराब की बिक्री एवं पीने वालों की संख्या में कमी नही दिख रही है। और जहरीली शराब से हो रही लगातार मौतें शराबबंदी कानून को ठेंगा दिखा रही है। सूबे के सभी जेलों में अपराधियों से ज्यादा शराब पीने बालें गरीब मजदूर बंद हैं। यहाँ तक कि जेलों में 28 हजार कैदियों की रखने की जगह में वर्तमान में करीब पचास हजार कैदी बंद है। कई मंडल काराओं में तों कैदियों को शिफ्ट में सोने के लिये मजबूर किया जाता है। हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं। बीते दिनों विकास पुरूष के नाम से नामित बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के गृह जिलें में शराब से 13 व्यक्तियों की मौत पर जहाँ विपक्षी पार्टियां सरकार को घेर रही है वही डबल इंजन की सरकार में बड़ी इंजन की अहमियत रखने वाली भाजपा शराबबंदी कानून की समीक्षा की बात कर रही है। सुबे के नालंदा जिले के मुख्यबाजार बिहारशरीफ नगर पालिका क्षेत्र सोहसराय थाना क्षेत्र के छोटी पहाड़ी, पहाड़तल्ली , मंसूर नगर में मकर संक्राति के बाद दो दिनों में 13 व्यक्तियों की मौत जहरीली शराब पीने से हो गयी। हालांकि जिलाधिकारी शंशाक शुभंकर एवं आरक्षी अधीक्षक अशोक मिश्रा ने 11 व्यक्तियों के मरने की पुष्टि किया है। साथ ही साथ कई अन्य लोगों का इलाज नीजि क्लिनिक में कराया जा रहा है। सुत्रों की माने तो कई लोग डर से शराब पीने की बात नही कर रहें हैं और नीजि क्लिनिक में अपना इलाज करवा रहें है दो व्यक्तियों के आखँ की रोशनी भी चले जाने की बात सामने आ रही है। स्थानीय लोगों की माने तो मकरसंक्राति के दो दिन पहले छोटी पहाड़ी एवं मंसूर नगर में देशी एवं विदेशी शराब की बड़ी खेप उतारी गयी थी जिसमें भारी मात्रा में कच्चा स्प्रीट होने की भी बात सामने आ रही है। स्थानीय प्रशासन को इसकी भनक तक नही मिली। हालांकि दो दिन तक मौत का सिलसिला जारी था। हालांकि दो अन्य व्यक्तियों के मरने की सूचना भी मिली है परन्तु प्रशासन के द्वारा अधिकारिक पुष्टि नही की गयी है। नांलदा जिले के मानपुर थाना क्षेत्र दो व्यक्तियों की मौत पर प्रशासन चुप्पी साध लिया क्योंकि मृतक के परिजनो के द्वारा शव का पोस्टमार्टम नही कराया गया था। मामले की गंभीरता को देखते हुये आईजी के आदेश पर कार्य में लापरवाही बरतने के आरोप में सोहसराय थानाध्यक्ष सुरेश प्रसाद को निलंबित कर दिया गया है। वही उत्पाद विभाग के अधिकारियों पर डीएम ने शो कॉज किया है। शराब कांड में एक दर्जन से अधिक लोग बीमार भी बतायें जा रहें है। मंसुर नगर निवासी शशि कुमार के आंखों की रोशनी चली गयी है। घटना के बाद स्थानीय प्रशासन के द्वारा आस पास के धरों से कई लोगों को इलाज के लिये हॉस्पीटल में भर्ती कराया गया है। जिसमें राजकुमार, दिलिप कुमार, सुबोध कुमार वर्मा, पीडित शक्ति लाल, राजेन्द्र पंडित सहित कई अन्य लोंगों का भी इलाज प्राइवेट हॉस्पीटल में कराये जा रहें हैं। घटना के बाद शराब के संदिग्ध कारोबारियों में छोटी पहाड़ी निवासी मुन्ना कुमार, राहुल कुमार जितेन्द्र पासवान सहित 34 अन्य लोगों को भी हिरासत में लिया गया है।

☞ **शराब से मौत पर सियासत तेज :-** बिहार में शरारबबंदी कानून के लागू होने के बाद अब तक शराब बंदी से लाभ और हानियों के साथ साथ लगातार हो रही मौतें पर जहॉ विपक्षी पार्टियां सरकार को घेर रही है। गठबंधन की सरकार में बड़े घटक दल भाजपा के नेताओं ने शराबबंदी कानून की समीक्षा की मांग करने लगे है। वैसे अगर देखा जाये तो शराबबंदी कानून लागू होने के बाद कुछ घटनाओं में कमी आयी है और गरीब तबके के लोगों के रहन सहन और जीवन स्तर में सुधार की बातें सरकार कह रही है। यह तो ठीक है। परन्तु शराबबंदी कानून का इफेक्ट और इसक दुष्परिणाम से सरकार अनभिज्ञ है। सूदूरवर्ती गाव एवं छोटे छोटे शहरों के अलावे बड़े शहरों में भी नशा का प्रचलन काफी बढ़ गया है। कई प्रतिबंधित दवाईयों का इस्तेमाल नशा के लिये किया जाने लगा है।

जहरीली शराब से हुई मौत में मृतकों की सूचिः-
☞ धर्मेन्द्र उर्फ नागेश्वर प्रसाद, पिता-लेखा महतों, उम्र-50
☞ मन्ना मिस्त्री, पिता-स्व० नीरू मिस्त्री, उम्र-55
☞ भागो मिस्त्री, पिता-फगु मिस्त्री, उम्र-55
☞ सुनील तांती, पिता-विजय तांती, उम्र-30
☞ अर्जुन पंडित, पिता-स्व० भतु पंडित, उम्र-40
☞ जयपाल प्रसाद, पिता-वीरेन्द्र शर्मा, उम्र-30
☞ अशोक शर्मा उर्फ कालीचरण, पिता-सुखदेव शर्मा
☞ राजेश प्रसाद, पिता-कौलेश्वर प्रसाद, उम्र-45
☞ प्रहलाद कुमार, पिता-जगदीश प्रसाद, उम्र-40
☞ सिन्टू मिस्त्री, पिता-नरेश मिस्त्री, उम्र 45
☞ शंकर कुमार, पिता-बालेश्वर मिस्त्री, उम्र 35 वर्ष
☞ अन्य ईलाजरत्त गंभीर अवस्था में।

वही वॉनफिक्स और स्टेशनरी में प्रयुक्त होने वाले रासायनिक अवयवों का इस्तेमाल भी घड़ल्ले से हो रहा है। शायद सरकार को इसके बारे में कोई जानकारी नही है और नही इसके बारें में कुछ सोच पा रही है।

बिहार में अप्रैल, 2016 से पूर्ण शराबबंदी लागू है, किंतु महाराष्ट्र, तेलंगाना और गोवा की तुलना में बिहार में शराब की खपत आज भी ज्यादा है. 2015 में नीतीश कुमार भारतीय जनता पार्टी से अलग होकर राष्ट्रीय जनता दल के साथ महागठबंधन की छतरी के तले बिहार विधानसभा का चुनाव लड़े. उस वक्त पुरुषों की शराब की लत से परेशान महिलाओं ने पारिवारिक कलह, घरेलू हिंसा, शोषण व गरीबी का हवाला देते हुए राज्य में शराबबंदी की मांग की थी.नीतीश कुमार ने वादा किया कि अगर वे फिर सत्ता में आए तो शराबबंदी लागू कर देंगे. आधी आबादी ने उन पर भरोसा किया और महिलाओं का मतदान प्रतिशत 59.92 से ज्यादा हो गया. कई क्षेत्रों में 70 फीसदी से अधिक महिलाओं ने मतदान किया. नीतीश विजयी हुए और सत्ता में लौटते ही राज्य में शराबबंदी की घोषणा कर दी.वैसे नीतीश कुमार के निर्णय के कारण ही राज्य में पंचायत स्तर तक शराब की दुकानें खुल गई थी. यही वजह रही कि 2005 से 2015 के बीच बिहार में शराब दुकानों की संख्या दोगुनी हो गई. शराबबंदी से पहले बिहार में शराब की करीब छह हजार दुकानें थीं और सरकार को इससे करीब डेढ़ हजार करोड़ रुपये का राजस्व आता था. 1

अप्रैल, 2016 को बिहार देश का ऐसा पांचवां राज्य बन गया जहां शराब के सेवन और जमा करने पर प्रतिबंध लग गई.प्रतिबंध की अवज्ञा पर सख्त सजा के प्रावधान किए गए. यही वजह रही कि बीते चार साल में करीब दो लाख लोगों को शराबबंदी के उल्लंघन पर जेल हुई जिनमें करीब चार सौ से अधिक लोगों को सजा मिली. स्थिति अब ऐसी हो गई है कोई भी दिन ऐसा नहीं बीतता जब राज्य के किसी ना किसी कोने से शराब की बरामदगी और शराबबंदी कानून तोड़ने की खबरें सुर्खियां ना बनती हों.

☞ **बिहार के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में शराब की खपत महाराष्ट्र से अधिक :-** राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस), 2020 की रिपोर्ट के अनुसार ड्राई स्टेट होने के बावजूद बिहार में महाराष्ट्र से ज्यादा लोग शराब पी रहे हैं. आंकड़े बताते हैं कि बिहार में 15.5 प्रतिशत पुरुष शराब का सेवन करते है. महाराष्ट्र में शराब प्रतिबंधित नहीं है लेकिन शराब पीने वाले पुरुषों की तादाद 13.9 फीसदी ही है. अगर शहर और गांव के परिप्रेक्ष्य में देखें तो बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में 15.8 प्रतिशत और शहरी इलाकों में 14 फीसदी लोग शराब पीते हैं.

☞ **शराब के सिंडीकेट को तोड़ने में सरकार असफल :-** कानून लागू होने के बाद कुछ दिनों बाद तक तो सब ठीक रहा. सख्त सजा के प्रावधान के कारण ऐसा लगा कि वाकई लोगों ने शराब से तौबा कर ली. इसका सबसे ज्यादा फायदा निचले तबके के लोगों को मिला. परिवारों में खुशियां लौटीं. हालांकि समय के साथ धीरे-धीरे शराब शहर क्या, दूरदराज के इलाकों तक पहुंचने लगी. आज आम धारणा यह है कि यह हर जगह सुलभ है. हां, इतना जरूर है कि कीमत दो या तीन गुनी हो गई है.बिहार में झारखंड, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश एवं नेपाल से शराब की बड़ी खेप तस्करी कर लाई जाती है. हालात यह है कि पुलिस और मद्य निषेध विभाग की

टीम यहां हर घंटे औसतन 1341 लीटर शराब जब्त कर रही है, मिनट के हिसाब से आंकड़ा 22 लीटर प्रति मिनट आता है.आंकड़े बताते हैं कि राज्य में इस साल करीब एक करोड़ लीटर से अधिक अवैध देशी और विदेशी शराब पकड़ी जा चुकी है. मुजफ्फरपुर, वैशाली, गोपालगंज, पटना, पूर्वी चपारण, रोहतास और सारण वाले इलाकों में शराब की अधिकतम बरामदगी हुई है. जाहिर है, इतना बड़ा खेल संगठित होकर ही किया जा रहा है. हालांकि ऐसा नहीं है कि बिहार सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी है. चेकपोस्ट की संख्या दोगुनी की जा रही है तथा धंधेबाजों को पकडने के लिए शराब के पुराने और डीलरों को रडार पर रखा गया है. भारी मात्रा में शराब की बरामदगी से साबित होता है कि ''शराब व्यापारियों के सिंडिकेट को सरकार नहीं तोड़ पा रही है. आज तक किसी बड़ी मछली को नहीं पकड़ा जा सका है. पकड़े गए अधिकतर लोग या तो शराब पीने वाले हैं फिर इसे लाने के लिए कैरियर का काम करने वाले हैं.

☞ **चूहे पी गए शराब :-** इस अवैध कारोबार के फलने फूलने में पुलिस भी पीछे नहीं है. इसका पता तब चला जब साल 2018 में कैमूर में जब्त कर रखे गए 11 हजार बोतल शराब के बारे में पुलिस ने अदालत को बताया कि चूहों ने शराब की बोतलें खराब कर दीं. एक अन्य घटना में पुलिस ने नौ हजार लीटर शराब खत्म होने का दोष चूहों के मत्थे मढ़ दिया.उस समय विपक्षी दलों ने यह कहकर खूब हंगामा किया कि अब तो चूहे भी शराब पीने लगे हैं. मुजफ्फरपुर का तो एक पूरा थाना ही शराब की बिक्री के आरोप में निलंबित कर दिया गया. पुलिसकर्मियों द्वारा शराब की बिक्री करने से संबंधित वीडियो भी आए दिन खूब वायरल हुए. शराबबंदी कानून की आड़ में पुलिस पर लोगों को उत्पीड़ित करने के आरोप भी खूब लगे. यह बात दीगर है कि आला अधिकारी समेत पूरा महकमा इस बात की शपथ लेता है कि शराब के सेवन या उससे संबंधित किसी भी तरह की गतिविधि में शामिल नहीं होगा और कानून को लागू करने के लिए विधि सम्मत कार्रवाई करेगा.''इस कानून को गलत तरीके से लागू किया गया. अब तक शराब के कैरियर्स ही पकड़े गए, सप्लायर्स पुलिस की पकड़ से बाहर हैं. जिस तरह से शराब की बरामदगी हो रही है उससे तो यही लगता है कि शराबबंदी असफल रही है.

तेजस्वी यादव भी बराबर कहते रहे हैं कि बिहार में शराब की होम डिलीवरी हो रही है. इस धंधे में ना केवल माफिया बल्कि पुलिस-प्रशासन तथा कुछ राजनेता भी शामिल हैं. पैसे के लोभ में नए उम्र के लडके-लड़कियां पढ़ाई-लिखाई छोडकर शराब की होम डिलीवरी में लग गए हैं. राज्य में नई सरकार बनने के बाद कांग्रेस ने एक बार फिर इस मामले को उठाया है. भागलपुर के विधायक व कांग्रेस विधायक दल के नेता अजीत शर्मा ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को पत्र लिखकर इस कानून को खत्म करने की मांग की है. अपने पत्र में उन्होंने कहा है कि आज दो-तीन गुना कीमत पर लोग शराब खरीद कर पी रहे हैं. महंगी देशी-विदेशी शराब खरीदने के कारण गरीब परिवार भी आर्थिक बोझ से दब गया है. सरकार को चार से पांच हजार करोड़ के राजस्व का नुकसान हो रहा है, वहीं इससे दोगुनी राशि शराब माफिया और उससे जुड़े लोगों की जेब में जा रही है. इस कानून की हकीकत अब कुछ और ही है इसलिए इसकी समीक्षा कर शराब की कीमत दो-तीन गुना बढ़ा कर शराबबंदी खत्म की जाए. अजीत शर्मा ने इससे हासिल होने वाले राजस्व से कल-कारखाने खोलने की बात कही है ताकि प्रदेश में रोजगार के मौके बनाए जासकें. शराब बनाने वाली कंपनियों के संगठन कंफेडरेशन ऑफ इंडियन अल्कोहलिक बेवरेजेज कंपनीज (सीआइएबीसी) ने भी सरकार को पत्र लिखकर राज्य में नियंत्रित तरीके से शराब की बिक्री की व्यवस्था करने की मांग की है. उधर राजद नेता कहते हैं, ''बिहार में शराबबंदी कानून बिल्कुल फेल है. भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय ने जो रिपोर्ट जारी की है उसके अनुसार बिहार में महाराष्ट्र से ज्यादा शराब पी जाती है. इसका मतलब है कि यह कानून ढोंग है. इसके जरिए सत्ता संरक्षित भ्रष्टाचारियों ने सामानांतर अर्थव्यवस्था खड़ी की है. बिहार में आ रही शराब की बड़ी खेप पकड़े जाने पर कितने एसपी-डीएसपी पर कार्रवाई की गई.

''शराबबंदी की नाकामी में पैसे की बड़ी भूमिका है. चंद लोग बहुत अमीर बन गए हैं. जो लोग पकड़े जा रहे, वे बहुत छोटे लोग हैं. असली धंधेबाज या फिर उन्हें मदद करने वाले ना तो पकड़ में आ रहे और ना ही उन पर किसी की नजर है. जाहिर है, जब तक असली गुनाहगार पकड़े नहीं जाएंगे तबतक राज्य में शराबबंदी कानून की धज्जियां उड़ती ही रहेंगीं। ●

कार्यकर्ता विहीन लोकतंत्र का नया दौर : राम रतन प्रसाद सिंह रत्नाकर

● **मिथिलेश कुमार**

व्यक्तिवादी, परिवारवादी, धन बल और बाहुबल के प्रभावकारी होने के कारण नेता, नीति और कार्यक्रम को धरती पर उतरने वाले कार्यकर्ता आज घर में बैठ जाने को विवश है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में कभी नीतियों का जोर हुआ करता था। तब नेता नीति के ध्वजवाहक कार्यकर्ता जनता नेता और अधिकारियों के बीच समन्वय स्थापित करने एवं विकास योजनाओं को धरती पर उतारने का काम कार्यकर्ता किया करते थे। कभी गांधीवाद समाजवाद, साम्यवाद जैसे विषयों पर चर्चा भी किया करते थे। लेकिन जैसे -जैसे आजादी के दिन बढ़ते गए उसी गति से नितिवीहीन राजनीति का प्रभाव बढ़ता गया। अब आदमी महत्वपूर्ण नहीं रहे। भौतिक साधन महत्वपूर्ण हो गया। परंपरा संस्कार एवं लोकतांत्रिक मूल्यों के ह्रास के कारण नीति प्रधान राजनीत, आत्मा मुखी राजनीति का अंग हो गया। इस कारण इस दौर को कार्यकर्ता बिहिन लोकतत्र के रूप में देखा या समझा जा सकता है।

आजादी के संघर्ष, सामंतवादी व्यवस्था के खिलाफ के संघर्ष रूढ़ीवाद अंधविश्वास के खिलाफ अलख जगाने वाले लोग आज निराश है। और शांत भाव से बेचैन मन से घर में बैठ जाने को विवश हो गए हैं। जिस वंशवादी राजनीति से अलग समाजवादी समतावादी लोकतांत्रिक व्यवस्था के कारण कई सामान्य लोग विशिष्ट बन सके। आज उसी के सामने चुनौती के रूप में खड़े हैं। यूं तो कार्यकर्ता विहीन लोकतंत्र का आगमन 80 के दशक में होने लग गया था। लेकिन 1990 के आते-आते बिल्कुल विकृत रूप में सामने है। बिहारी राजनीति में 1967 से ही परिवर्तन का दौर चल पड़ा था। तब लोहिया के सप्त क्रांति की चर्चा होती थी। लेकिन 1974 के संपूर्ण क्रांति के समय और उसके बाद 1977 आते आते कार्यकर्ता का स्थान कई ढंग से बिचौलिया वर्ग ने अपना लिया। यह बर्ग जाति धर्म गोत्र का नाम लेकर कई ढंग के राजनीतिक गतिविधियों में उपस्थित रहता है। उसका मुख्य उद्देश्य किसी ढंग से धन अर्जन करना होता है। नेता इस बात के लिए खुश होते है कि उनकी सभा का आयोजन फूल माला तोरण द्वार बनाने की व्यवस्था यहीं बिचौलियों वर्ग करता है। माफिया शब्द की चर्चा सबसे पहले कोयलांचल में शुरू हुआ और देखते देखते कई ढंग के सरकारी साधनों एवं संपदा का दोहन करने वाले लोगो का एक नया वर्ग आज सामने है। माफिया वर्ग या बिचौलिया वर्ग अपना काम नेता अधिकारी के सहयोग से करता है। कई बार इस वर्ग के लोग मंत्री विधायक सांसद के दरबार के नवरत्न के रूप में जाने जाते हैं। आमतौर से नीतिवान कार्यकर्ताओं को बेदखल करने का काम इसी वर्ग ने किया है। कार्यकर्ता सभी दिन अभाव में रहकर भाव भरे जीवन की संभावनाओं का दर्शन आम लोगों को कराते हैं। खेत खलिहान से लेकर छोटे कस्बा और नगरों तक की जनसमस्याओं के समाधान के लिए सदा प्रयत्नशील रहना कार्यकर्ताओं की नियति रही है। लेकिन वर्तमान महाजनी सभ्यता के दौर में दलों के द्वारा और माननीय के द्वारा ठगे कभी कई ढंग के बोर्ड निगम 20 सूत्री समिति में स्थान पाकर समाज में पहचान बनाने वाले कार्यकर्ता उपेक्षित है। फिर भी कभी कभी माननीय विधान बनाने वालों ने विशेष क्षमता वालों के लिए जो जनता के लिए उपयोगी माने जाते हैं को विधान परिषद और राज्यसभा में स्थान देने की व्यवस्था की थी। लेकिन आज करोड़पति लोगो का विश्राम स्थल बनकर रह गया है। यही कारण है कार्यकर्ता और नेताओं के बीच दूरी बढ़ती जा रही है और जन सरोकार की समस्या से अलग महज कुर्सी सुरक्षित रखने की राजनीत बिहार में चल रही है। सांस्कृतिक इतिहास जानने वालों का मानना है की महाभारत युद्ध के बाद और भगवान बुद्ध के अवतरण के पूर्व का लगभग 1000 साल को अंधेरा युग माना गया है। लगता है 1980 से लेकर आज तक का समय को आने वाली पीढ़ी अंधेरा युग मानकर चलेगी। ●

भारत के 12 सूर्य मंदिरों में एक है हण्डिया

नवादा जिला के नारदीगंज स्थित हंडिया सूर्य मंदिर के प्रांगण में आज पटना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश संजय करोल ने पूरे परिवार संग पूजा अर्चना की। मुख्य न्यायाधीश का यह कार्यक्रम पूरी तरह निजी था, जिसमें नवादा व्यवहार न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश आर एन एस पांडे, एसीजेएम 2 व्यवहार न्यायालय नवादा कुमार अविनाश पूरी मुस्तैदी के साथ आगमन से लेकर प्रस्थान तक मौजूद रहे। कार्यक्रम के बारे में लोगों के द्वारा बताया गया है कि मुख्य न्यायाधीश एवं उनकी पत्नी एवं बेटी सूर्य मंदिर में सूर्य नारायण पूजा की अर्चना की एवं मौके पर मौजूद पंडितों एवं बच्चों को प्रसाद एवं रूपये भी दान दिया। मुख्य न्यायधीश को इतिहास बताते हुये छोटे लाल पाण्डेय ने कहा कि इस मंदिर का गौरवशाली अतित रहा है। महाशय इस मंदिर के बगल में पीपल का वृक्ष के बारे में इस गॉव के दस पुस्त तक नही बताते है। यह मंदिर भारत में 12 सूर्य मंदिर में एक है। बिहार के पाँच सूर्य मंदिर में एक है। यह मंदिर द्वापर कालीन जरासंधा जमाने का सूर्य मंदिर है। कृष्ण के श्राप से उनके पुत्र साम्भ को कुष्ट रोग हुआ था उसकी मुक्ति के लिए उनके पुत्र ने भारत में 12 सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया था। जरासंध की पुत्री धनिया भी रोज पुजा अर्चना करने हण्डिया सूर्य मंदिर के तालाब में स्नान कर सूर्य मंदिर में पूजा अर्चना कर गॉव के देवी स्थान में पूजा करती थी। फिर रथ से धनिया पहाड़ी शिव मंदिर में पूजा अर्चना कर तपोवन को जाती थी एवं झखनी कुण्ड होते हुए पुन: राजगृह को लौट जाती थी। यहा चैत्री छठ एवं कार्तिक छठ दोनो में काफी भीड़ लगती है पुरे भारत वर्ष से लोग आकर अर्घ देते है यहाँ कार्तिक पूर्णिमा मे देश के कोने-कोने से दिया प्रवाह करने आती है। यहाँ प्रत्येक रविवार को मेला लगता है। यहाँ कुष्ट रोग एवं पुत्र रत्न की प्राप्ति पुरी होने पर छठ मे बच्चो का मुण्डन बड़े धुमधाम से करते है। इस मौके पर नवादा सदर एसडीओ उमेश भारती, नारदीगंज प्रखंड विकास पदाधिकारी अमरेश कुमार मिश्रा, नारदीगंज अंचलाधिकारी अमिता सिन्हा, नारदीगंज थाना अध्यक्ष मोहन कुमार, पूर्व जिला पार्षद कृष्णदेव प्रसाद सिंह उर्फ सुकन सिंह, पूर्व मुखिया प्रत्याशी अनीता सिंह हंडिया पंचायत के मुखिया अजय पंडित, हंडिया पंचायत के उप मुखिया संतोष कुमार, पूर्व मुखिया प्रमोद कुमार, माननीय पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता विपिन कुमार, अधिवक्ता अरविंद कुमार, पेशकार नवादा व्यवहार न्यायालय जैकी हैदर एवं अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। ● **रिपोर्ट :- अमित कुमार सिंह/मिथिलेश कुमार/अनिता सिंह**

पुरातात्विक विभाग की उपेक्षा का शिकार
प्राचीन नाग स्थान

बिहार का गौरवशाली अतीत इतिहास के पन्नों में आज भी स्वर्ण अक्षरों से लिखा हुआ है, इस राज्य में महाभारत काल से ही कई पौराणिक, ऐतिहासिक, धार्मिक स्थल भरा पड़ा है, वही मगध साम्राज, बौद्ध, जैन, ब सूफी, संतो से लेकर, महान क्रांतिकारियों और बलिदानयों और दानवीरों का इतिहास बिहार के इतिहास को गौरवान्वित करती रही है, हिंदुस्तान की चर्चा करें तो आधा इतिहास, बिहार के पौराणिक धार्मिक ऐतिहासिक ,अवशेषों और मंदिरों से ही जुड़ा हुआ है, अगर इन पौराणिक, और धार्मिक स्थलों को पर्यटन से जोड़ दिया जाता तो, उपेक्षित बिहार और भी विकसित और समृद्ध होता, बिहार का प्रगतिशील मुख्यमंत्री जी के द्वारा पर्यटन के क्षेत्र में कई प्रयास भी किए जा रहे हैं, लेकिन आज भी हजारों महत्वपूर्ण, ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल सरकार के नजरों से ओझल है, काश इन क्षेत्रों के स्थानीय सांसद, विधायक, मंत्री, एमएलसी,और जिलाधिकारी से लेकर जो जनप्रतिनिधि हैं, अगर इन धार्मिक और ऐतिहासिक स्थलों के लिए भी उनके पास विजन और मिशन हो, तो निश्चित तौर पर, जहां सरकार का राजस्व बढ़ेगा, वही बिहार का गौरवशाली अतीत की भी चर्चा देश और विदेशों में भी होगी, आज हम एक ऐसे ऐतिहासिक और प्राचीन कालीन नाग स्थान की चर्चा करते हैं, जो नवादा जिले के नारदीगंज प्रखंड के ओरो ग्राम में स्थित है, जो अपनी दुर्दशा पर आंसू बहा रहा है। **अरविंद मिश्रा** की रिपोर्ट :-

नवादा जिले के अंतर्गत नारदीगंज प्रखंड ओरो ग्राम काफी वैभवशाली, ऐतिहासिक, धरोहरों से सुसज्जित है, पौराणिक काल से ही दर्जनों धार्मिक मंदिर रहने के वजह से भी, इस ग्राम को धार्मिक और पवित्र स्थल के रूप में भी जाना जाता है। ग्राम ओरो जिला मुख्यालय नवादा से 22 किलोमीटर हिसुआ, राजगृह मार्ग पर बस्ती बीघा से 2 किलोमीटर पश्चिम है, ग्राम ओरो प्राचीन गढ़ पर बसा हुआ है, माना जाता है कि प्राचीन राजगृह का दक्षिण सीमा ओरो तक ही था, इसे राजगृह का दक्षिण द्वार ''ओडप'' भी कहा जाता है, इसका उल्लेख बौद्ध साहित्य में भी है, इस ग्राम का कई पवित्र धार्मिक स्थलों का इतिहास आज भी सुरक्षित है, जिसमें आज जिक्र करते हैं, प्राचीन ऐतिहासिक देवस्थल को जिसे नाग स्थान कहा जाता है, इस नाग स्थान के पास, प्राचीन कालीन बुद्ध, अब्लोकितेश्वर, एवं विष्णु की भी कई मूर्तियां है, इस नागस्थान के बारे में कहा जाता है कि मगध सम्राट जरासंध का यह दक्षिणी द्वार था, इस स्थान पर नागों का पहरा रहता था,

यहां पर एक विशाल तालाब भी है, जिसे दिग्गी तालाब के नाम से जाना जाता है, इसी तालाब में जरासंध की हाथी पानी पिया करते थे, और हाथी के रक्षक और उनके सेना भी इसी स्थल पर रहा करते थे, और उनकी सेना दक्षिणी द्वार को सुरक्षा प्रदान करते थे, किदवंती है कि भगवान श्री कृष्ण, अर्जुन और भीम के साथ राजगृह, जरासंध के वध के लिए जा रहे थे, तब इसी ग्राम के प्राचीन मां बागेश्वरी के मंदिर में भगवान श्री कृष्ण, अर्जुन और भीम के साथ पूजा अर्चना कर युद्ध की विजय कामना का आशीर्वाद लिए थे, इस प्राचीन मंदिर में माता बागेश्वरी घोड़े पर सवार है, इस माता बागेश्वरी के मंदिर में भी सैकड़ों प्राचीन मूर्तियां आज भी हैं, जो विभिन्न मुद्राओं में हैं, माता बागेश्वरी के मंदिर में भी

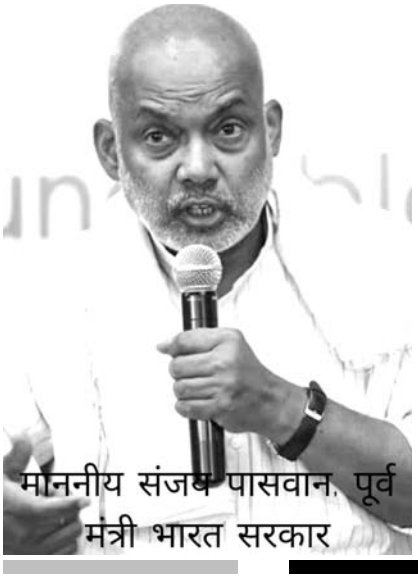

माननीय संजय पासवान, पूर्व मंत्री भारत सरकार

विभा देवी
विधायक, नवादा

अमरेश कुमार बी.डी.ओ. नारदीगंज

राघवेंद्र मिश्रा, अधिवक्ता पटना उच्च न्यायालय

यशपाल मीणा
जिला समाहर्ता एवं दण्डाधिकारी, नवादा

सैकड़ों कोसों से भी श्रद्धालु अपने मन्नते को मांगने के लिए प्राय: आया करते हैं, आज भी नाग स्थान, और मां बागेश्वरी का प्राचीन मंदिर खुले आसमान में ही है, दिलचस्प कहानी एक और भी जुड़ा हुआ है कि नवादा संग्रहालय की स्थापना के समय नवादा के तत्कालीन जिलाधिकारी नरेंद्र पाल के द्वारा अपने सशस्त्र पुलिस कर्मियों के सहयोग से रात्रि में जबरदस्ती नागस्थान की मूर्तियों को उखाड़ कर ले जाने का प्रयास कर रहे थे, लेकिन इस गांव के ग्रामीणों ने अपनी जान की बिना प्रवाह किए, जिलाधिकारी से लड़ कर अपने पवित्र धरोहरों को बचाने का प्रयास किए, जो इस गांव के सामाजिक समरसता के लिए मिसाल है, लेकिन कितने सरकार बदली, कितने सांसद, विधायक, जिलाधिकारी आते जाते रहे, लेकिन आज भी पवित्र नाग स्थान विकास से कोसों दूर है, जबकि आज भी दूरदराज के ग्रामीण श्रद्धालु उस उपेक्षित पवित्र स्थल में पूजा अर्चना करते हैं ताकि किसी सांप से किसी भी परिवार को क्षति नहीं हो, मान्यता है कि नाग बाबा सदैव इस गांव को सुरक्षा प्रदान करते हैं, आज भी इस स्थल से नए घर के निर्माण के लिए मीठी लेने के लिए बहुत दूर दराज से आदमी आया जाया करते हैं,नवादा विधानसभा के सदैव विकास के लिए समर्पित रहने वाली माननीय विधायक विभा देवी कहती हैं, कि यह मेरे लिए गौरव की बात है कि हमारे विधानसभा में इस तरह के कई धार्मिक स्थल है, जिसका विकास होने से सरकार का भी राजस्व बढ़ेगा, और हमारा विधानसभा का भी नाम और भी चर्चित होगा, मैं ऐसे पवित्र धरोहरों के विकास के लिए, विधानसभा में भी आवाज उठाऊंगा और अपने विधायक फंड से भी विकास कराने का प्रयास करूंगा, वही इस ग्राम के काफी प्रतिष्ठित और पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता राघवेंद्र मिश्रा जी कहते हैं, कि इस धार्मिक स्थलों को लिए दीर्घ सूत्री विजन और मिशन जिला प्रशासन को पास भी होना चाहिए, ताकि उपेक्षित पवित्र धार्मिक धरोहरों को बचाया जा सके, ओर यह तभी संभव है, जब इसके लिए दृढ़ इच्छाशक्ति, जिला प्रशासन के भी पास हो, और यहां के सांसद, विधायक और अन्य जनप्रतिनिधियों के पास ही हो, अगर इसी तरह से ऐतिहासिक और पवित्र स्थल अपेक्षित रहेगा तो हाईकोर्ट में एक पीआईएल करवा दिया जाएगा, ताकि सरकार और जिला प्रशासन संज्ञान ले,वही इस प्रखंड के कर्मठ और ऊर्जा वान प्रखंड विकास पदाधिकारी अमरेश मिश्रा कहते हैं कि, वैसे धार्मिक धर्मो के बारे में जानकारी लेकर जिला के वरीय पदाधिकारियों को भी, और पर्यटन विभाग को भी, प्रतिवेदन विकास के लिए भेजा जाएगा, ताकि ऐतिहासिक धरोहरों को बचाया जा सके, वैसे इस गांव में प्रतिवर्ष लक्ष्मी पूजा के शुभ अवसर पर, माननीय केंद्रीय मंत्री, बिहार सरकार के मंत्री, सांसद, एमएलसी, जिलाधिकारी से लेकर कई गणमान्य व्यक्ति आते हैं, लेकिन दुर्भाग्य है कि आज तक ओरो जैसे गौरवशाली ऐतिहासिक धरोहरों और पवित्र स्थलों के लिए कोई भी प्रयास नहीं हुआ, आज ऐसे सैकड़ों पवित्र और ऐतिहासिक धरोहर, विकास के अभाव में विलुप्त होते जा रहे हैं, और गलत तबके के लोग से पवित्र स्थलों के पुराने अवशेषों को देश विदेशों में भी बेच दे रहे है, आखिर सरकार कब धार्मिक, धरोहरों,पुरातात्विक अवशेषों को बचाने के लिए, कदम उठाएगी, यह तो सरकार ही जाने, लेकिन गांव के युवाओं को, बुद्धिजीवियों को, सामाजिक कार्यकर्ताओं को अपने गांव के धरोहरों के बचाने के लिए आगे आना होगा, नहीं तो पुराने धार्मिक स्थल डायनासोर की भांति विलुप्त हो जाएंगे, क्योंकि हर गांव कस्बा जिला का नाम अपने प्रमुख स्थलों, और इतिहास के वजह से ही गौरवशाली माना जाता है, वैसे नवादा के जिलाधिकारी जो काफी कर्मठ और ऊर्जावान है, और विकास के लिए सदैव समर्पित रहने वाले हैं, उनसे काफी अपेक्षाएं है, आखिर कौन होता है इस पवित्र नाग स्थान को विकास करने वाला माननीय सांसद श्री चंदन सिंह जी, माननीय विधायक विभा देवी जी, माननीय एमएलसी श्री संजय पासवान जी या अन्य कोई यह तो समय ही बताएगा, लेकिन इस ऐतिहासिक धरोहरों और पवित्र स्थलों की उपेक्षा पर पर, एक शेर याद आ जाता है। ***'पक्षी कहता है कि चमन बदला है, धरा कहती है कि गगन बदला है, मगर शमशान की खामोशियां कहती है, ना चमन बदला है, ना धरा बदला है, मुर्दा वही है, सिर्फ कफन बदला है'।*** ●

माननीय सांसद चन्दन सिंह

23 करोड़ की लागत से पुल-पुलिया का सांसद ने किया शिलान्यास

● अब्दुल कय्युम

भाजपा सांसद प्रदीप कुमार सिंह ने शनिवार को अररिया से पलासी जाने वाली सड़क पर करीब 23 करोड़ की लागत से आधा दर्जन पुल पुलिया के शिलान्यास किया। इस अवसर पर पलासी हाई स्कूल में भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा एक शिलान्यास समारोह का आयोजन किया गया। शिलान्यास समारोह की अध्यक्षता भाजपा जिलाध्यक्ष संतोष सुराणा ने की। शिलान्यास समारोह को सम्बोधित करते हुए सांसद प्रदीप कुमार सिंह ने कहा कि सभी पुलिया के निर्माण के बाद अररियाव पलासी की दूरी कम हो जायेगी। उन्होंने कहा कि बिहार में आज डबल इंजन की सरकार है, जिस के कारण चारोओर विकास की गंगा बह रही हैं। सांसद ने कहा कि आज डबल इंजन की सरकार में जिले के सभी प्रखंडों नरपतगंज, कुर्साकांटा, रानीगंज, भरगामा, फारबिसगंज आदि में विकास की लहर चल रही हैं। सभी प्रखंड में सड़क, पुल पुलिया,आदि का ताबड़तोड़ शिलान्यास किया जा रहा हैं। सांसद ने नए साल में अररिया जिलावासियों को अररिया पचकोड़ी चौक से पलासी की और जाने वाली सड़को पर सात पुल पुलिया के शिलान्यास किया गया हैं। उन्होंने कहा कि उनके ढाई साल के कार्यकाल में अररिया में 200 पुलिया व सैकड़ो सड़को का निर्माण किया जा चुका हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले पांच वर्षों में अररिया जिला में कोई पुल पुलिया नही बचेगा। उन्होंने कहा कि अररिया को नया अररिया बनाने का संकल्प लिया है। सांसद प्रदीप कुमार सिंह ने कहा कि सिकटी विधानसभा में आने वाले समय में 81 सड़क व 60 पुलिया के शिलान्यास किया जायेगा। सांसद प्रदीप सिंह ने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अररिया जिला का चहुमूखी विकास हो रहा हैं। सड़को पूल, पुलिया, ऑक्सीजन प्लांट, ब्लड बैंक, पॉलिटेक्निक कॉलेज की स्थापना हुई हैं। कहा कोरोना जांच के लिये जिला में आरटीपीसीआर जांच का कार्य शुभारंभ हुआ। सांसद ने कहा कि आने समय में अररिया जिला में मेडिकल कॉलेज की स्थापना, सुपौल से गलगलिया रेल लाइन सेवा करीब 22 सौ करोड़ की लागत से शुरू की जायेगी। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी के नेतृत्व में देश आगे बढ़ रहा हैं। उन्होंने कहा कि अररिया जिला को बाढ़ से मुक्ति के लिये योजनाए बनी हैं। समारोह को संबोधित करते हुए विधायक विजय मंडल ने कहा कि यह पुल बनने से लोगो को पलासी से अररिया जाने में सहूलियत होगी। उन्होंने कहा कि शीघ्र सिकटी विधान सभा में विकास की गाड़ी दौड़ेगी। समारोह को संबोधित करते हुए जीप अध्यक्ष आफताब अजीम उर्फ पप्पू ने कहा कि सांसद प्रदीप कुमार सिंग, विधायक विजय मंडल के नेतृत्व में सिकटी विधान सभा का विकास जोरो पर हैं। उन्होंने जनप्रतिनिधि को लोक कल्याणकारी योजनाओं को पूरी ईमानदारी से धरातल पर उतारने की अपील की। तथा क्षेत्र से बिचौलिया वाद को मिटाने के लिये जो कदम उठानी पड़ेगी उसके लिये वे तैयार हैं। ही विकास की गति में तेजी लाना होगा। इस अवसर पर भाजपा नेता बी.के झा ने कहा कि अररिया जिला के सर्वांगीण विकास में सांसद की अहम भूमिका हैं। उन्होंने शिक्षा विभाग सिहित अन्य विभागों को दुरुस्त करने की बात कही। साथ ही साथ पलासी हाई स्कूल में भवन देने का भी मांग की। इस क्रम में पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष आलोक भगत,भाजपा अध्यक्ष संतोष सुराणा ने भी समारोह को संबोधित किया। मौके पर जीप सदस्य आकाश राज, अमर सिंह, जागेश्वर ठाकुर, जगन्नाथ झा, रमेश चौधरी, मुखिया प्रतिनिधि शोएब आलम, संतोष मंडल, बिहारी ठाकुर, एचएम प्रदीप वर्णवाल, ओबेद आलम, आदि मौजूद थे। समारोह का संचालन भाजपा अध्यक्ष संतोष सुराणा ने की। ●

नववर्ष, गणतंत्र दिवस एवं बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर प्रखण्ड तरारी, भोजपुर की समस्त जनता को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई।

निवेदक :-लाल बिहारी सिंह

जिला परिषद सदस्य, तरारी सह उपाध्यक्ष, आरा, भोजपुर

शिक्षा का अलख जगाना चाहते हैं मनिष

● विकाश कुमार/संतोष कुमार मिश्रा

कोरोना महामारी के आगमन के बाद अपने बिहार में बड़ी मुश्किलों से डेढ़ साल बाद स्कूल-कॉलेज खोले गए थे। परन्तु तीसरी लहर के तेजी से बढ़ने के कारण फिर से स्कूल, कॉलेज और कोचिंग संस्थानों को बंद किया गया। शिक्षा आज के लिए बहुत ही जरुरी है। वही उच्य शिक्षा के लिए बिहार में कई संस्था है जो छात्रों को अधिक से अधिक सुविधाएं देती है। वही MIITJEE के director मनिष कुमार ने अपने बिहटा क्षेत्र के छात्रों के लिए छात्रवृति परीक्षा का आयोजन किया। जिसे MIITJEE MANTHAN 2021 के नाम से आयोजित किया है। जिसे 18 दिसम्बर और 19 दिसम्बर 2021 को आयोजित किया गया था जिसमें 1500 छात्र, छात्रायें उपस्थित हुए थे। संस्थान के अकादमिक निर्देशक प्रभात रंजन के अनुसार यह छात्रवृति प्रतिभाशाली छात्र, छात्राओं के लिए वरदान है। क्योंकि 90-95 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को पाठ्यक्रम शुल्क में 80 प्रतिशत की छुट मिलेगी और वही 95 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को 100 प्रतिशत छात्रवृति मिलेगी। वही टॉपर्स को संस्था के संस्थापक मनीष सिंह के हाथों संस्थापना दिवस 20 जनवरी 2022 को सम्मानित किया जाना था। परन्तु तीसरी लहर के कारण 20 जनवरी 2022 का प्रोग्राम को मार्च या अप्रैल 2022 में किया जा सकता है। वही MIITJEE BIHTA के केन्द्र प्रमुख नीतिश सिंह ने बताया है कि बिहार बोर्ड और सीबीएसई के लिए अलग-अलग बैच होंगे। ताकि छात्रें को परेशानी नही हों। संस्थान में हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यम से कक्षाएं चलाई जायेगी। प्रभात रंजन ने कहा कि बिहार में मेघावी छात्र है पर साधन-सनसाधन के कमी के कारण बच्चे आगे कि पढाई पढ़ नही पाते है। यहॉ पर MIITJEE कि शुरूआत किया गया था कि यहॉ साधन सनसाधनो कि कमी थी जिसके करण आगे कि पढ़ाई के लिए बच्चों को दूसरे राज्यों में जाना पड़ता है। अगर इस क्षेत्र के बच्चों को सारी सुविधा यही बिहटा में मिल जायेगा तो उन्हें दूसरे राज्यों में जाना नही पड़ेगा। हम कोशिश करते है कि इस क्षेत्र के मेघावी बच्चों को ढूंढ़ कर उन्हें प्रेरित करें। और जो बच्चा 95 प्रतिशत से अधिक अंक लाये उसे नि:शुल्क शिक्षा प्रदान करें तथा उन्हें कुछ नगद पुरस्कार भी देंगें। 20 जनवरी जिस दिन मेरे संस्था का आयोजन दिवस या संस्थपना दिवस है उस दिन कुछ चीफ गेस्ट के द्वारा नगद पुरस्कार देना था। अब इसे मार्च या अप्रैल 2022 में दिया जा सकता है। ताकी बच्चो का मनोबल बढ़े और मेघावी बच्चे जुड़ सके। संस्था का मुख्य उददेश्य यह भी है कि इस क्षेत्र कि लड़कीयॉ जिनका पढ़ाई छुट जाती है जो बाहर नही जा सकती है उनको यहॉ रूक कर जो कि घर के पास होने के कारण वो लोग IIT और MEDICAL जैसे प्रतिष्ठित परीक्षा की तैयारी कर सके।

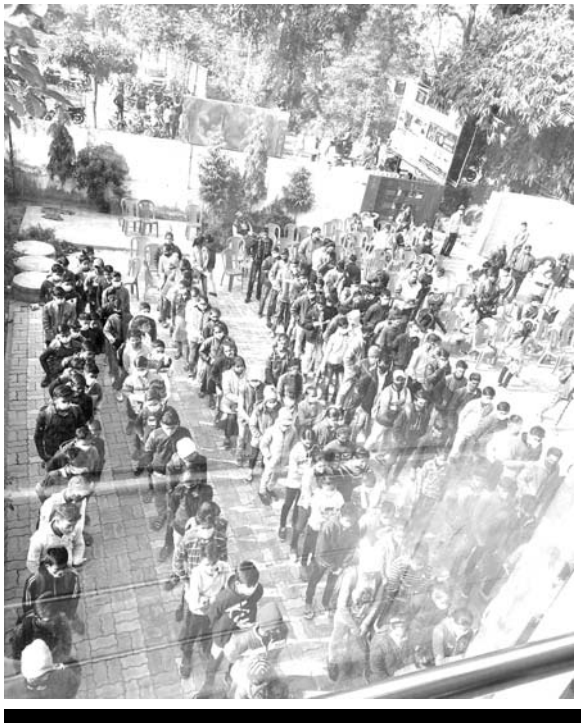

इस संस्था के director मनिष सिंह का कहना है कि इस क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए काफी किफायती फि के साथ-साथ कोटा और पटना की सुबिधा देने की कोशिश किये है। जो भी फैकलटीज है वे न्यूनतम 7 साल से 14 साल तक के अनुभवी हैं IIT के, और इस तरह के व्यवस्था गॉव में लाने का मेन उददेश्य यही था कि गॉव के बच्चों का प्लायन को रोका जा सके। इसी लिए बिहटा में लाया गया साथ ही साथ मै इसी क्षेत्र के रहने वाले है इसलिए इस क्षेत्र के छात्रों के समस्याओं को भली-भाति समझता हूॅ। सनसाधनों कि कमी के कारण मेघावी छात्र IIT और MEDICAL की परीक्षा नही पास कर पाते है। इसलिए मेरा उददेश्य यही है कि इस क्षेत्र के कोई भी मेघावी छात्र उच्य शिक्षा प्राप्त करने से बंचीत न रह जाये। इनका कहना है कि बच्चे देश के भविष्य होते है, तो सनसाधनो कि कमी के कारण उनकी पढ़ाई बाधीत नही हों, उनके भविष्य के साथ खिलवाड़ नही हों यही सोच कर इस संस्था को इस क्षेत्र में स्थापित किया गया है। ●

भाजपा कार्यकर्ताओं ने पंजाब सीएम का फूंका पुतला

● मंटू कुमार

पंजाब के भटिंडा में पीएम मोदी के काफिले में सुरक्षा की चूक का आरोप लगाते हुए गुरुवार को भाजपा कार्यकर्त्ताओं ने सासाराम पोस्ट ऑफिस चौक पर प्रदर्शन किया और पंजाब के सीएम चरणजीत सिंह चन्नी का पुतला फूंका। इस अवसर पर पर पार्टीजनों ने पंजाब के मुख्यमंत्री और पंजाब सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और उन्हें बर्खास्त किए जाने की मांग की। भारतीय जनता पार्टी के रोहतास उपाध्यक्ष इंद्रजीत सिंह ने पुतला दहन कार्यक्रम का नेतृत्व करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री जी की सुरक्षा में चूक देश की सुरक्षा में चूक के समान है। उन्होंने पंजाब के मुख्यमंत्री को तत्काल बर्खास्त किए जाने की मांग करते हुए कहा कि दोषियों को चिंहित कर उनपर भी विधि सम्मत कार्रवाई की जाए। पंजाब सरकार की तीव्र निंदा करते हुए कहा कि घटना की पुनरावृत्ति न हो, इसका पुख्ता इंतजाम किया जाना चाहिए।

बीजेपी विजय सिंह पंकज सिंह शनिदेवल चंद्रवंशी आदि गणमान्य लोगों ने भी पंजाब सरकार के क्रिया – कलापों की कटु निंदा की। उल्लेखनीय है कि बुधवार सुबह पीएम नरेंद्र मोदी पंजाब के भटिंडा पहुंचे थे, जहां से उन्हें हेलिकॉप्टर से हुसैनीवाला स्थित राष्ट्रीय शहीद स्मारक जाना था। बारिश और खराब विजिबिलिटी के चलते पीएम ने करीब 20 मिनट तक मौसम साफ होने का इंतजार किया। जब मौसम में सुधार नहीं हुआ, तब यह तय किया गया कि वे सड़क मार्ग से जाएंगे। हुसैनीवाला में राष्ट्रीय शहीद स्मारक से करीब 30 किमी पहले जब पीएम का काफिला एक फ्लाईओवर पर पहुंचा तब यहां कुछ प्रदर्शनकारियों ने सड़क को अवरुद्ध कर दिया। पीएम करीब 20 मिनट फ्लाईओवर पर फंसे रहे। यह पीएम की सुरक्षा में एक बड़ी चूक मानी जा रही है। ●

राजेन्द्र सिंह के द्वारा तेंनुआ शिव शंकर धाम का उद्घाटन

● मंटू कुमार

ग्राम तेनुआ, नोखा में शिव शंकर धाम मुख्य द्वार का उद्घाटन पूर्व संगठन महामंत्री भाजपा दिनारा विधानसभा प्रत्याशी राजेन्द्र सिंह के कर कमलों द्वारा ग्रामीण जनता के बीच हर्षोल्लास एवम भगवान शिव के नारों के साथ हुआ। मुख्य द्वार का निर्माण करने वाले सचितानंद सिंह उर्फ सीटू सिंह ने उद्घाटनकर्ता राजेन्द्र सिंहजी को अंगवस्त्र से सम्मानित किया। उदघाटन कार्यक्रम में मुख्य रूप से जिला महामंत्री भाजपा विजय सिंह, युवा जिला उपाध्यक्ष इंद्रजीत सिंह,बृहस्पति बाबा, दया सिंह सत्यनारायण चंद्रवंशी मुखिया, बृजबिहारी प्रसाद, मुकेश सिंह, बबलू सिंह उपस्थित रहे। धन्यवाद ज्ञापन माल बाबू मुखिया जी ने किया। मुख्य अतिथि उद्घाटनकर्ता राजेन्द्र सिंह जी ने सम्बोधन में कहा कि शिवशंकर धाम मुख्य द्वार का निर्माण करने वाले सीटू सिंह सहित ग्रामीण जनता का अभिवादन करते हुए भगवान शंकर से नए साल में आमलोगों के लिए खुशी की कामना की तथा किसानों की समस्या के निदान के लिए हमेशा साथ खड़े रहने का वचन दिया। ●

न्याय के लिए तड़प रही न्याय

आंकड़ों के खेल में नीतीश की जीत, न्याय की हार

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

नीतीश कुमार यदि सही मायने में बिहार के विकास का सपना बुनते हैं तो वे सत्ता का चश्मा हटाकर देखें। तभी उन्हें सही बात का पता चलेगा कि उनके द्वारा चलाए जा रहे तमाम सरकारी योजनाएं कर्मचारियों तथा पदाधिकारियों द्वारा पोषित दलालों की रखैल बनकर रह गई है।

ज्ञात हो कि सरकार की आँख, कान, नाक, दिमाग सरकारी कर्मचारी और पदाधिकारी होता है। सत्ता का चश्मा और दिमाग से घूसखोर, धूर्त, बेईमान, कमीशनखोर कर्मचारी और जनप्रतिनिधि सत्यहरिश्चन्द्र झलकने लगता है तथा सत्ता के कुर्सी पर बैठाने वाली (गरीब जनता जो रोटी, दवा और न्याय के अभाव में तड़प-तड़प कर दम तोड़ देती है। कफन तो दूर जिन्हें जलाने के लिए लकड़ी तक नसीब नहीं होती तथा अधजली लाशें नदी में बहा दी जाती है।) नहीं झलकता है बल्कि कमीशनखोर अधिकारियों द्वारा विकास का आंकड़ा देखकर नीतीश कुमार गदगद है तथा चुनाव के मैदान में आने के लिए ताल ठोक रहे हैं। नीतीश की जयकारों में तीन तरह के लोग लगे हैं। पहला वह जो व्यक्ति फटेहाली की स्थिति में सत्ता मिला था तथा जो सत्ता मिलते ही मकान, गाड़ी ऐशो-आराम जुटाने में लग गया। दूसरा वह जो भाड़े के लोग जयकार मना रहे हैं तथा तीसरा वे लोग हैं जो लोहे का चश्मा पहनकर जयकार मनाते हैं। नीतीश कुमार को लग रहा है कि समुचे बिहार में जीरो टॉलरेंस और सुशासन है।

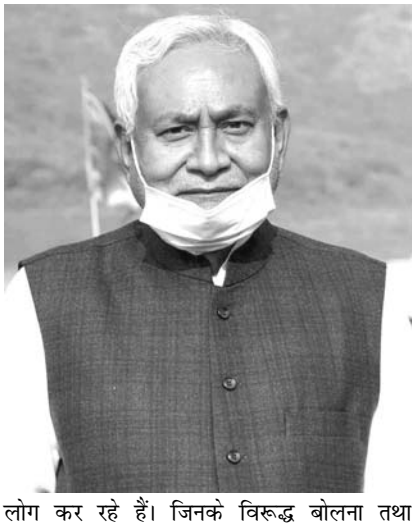

भ्रष्टाचार की शिकायतें कम हो रही है तथा अखबार की सुर्खी नहीं बन रहा है, लेकिन सच्चाई यह है कि भ्रष्टाचार वैसे लोग कर रहे हैं। जिनके विरूद्ध बोलना तथा अखबार में प्रकाशित करना मौत को गले लगाना हो गया है। दलालों के रखैल अधिकारियों द्वारा बनाए गये आंकड़ों के मुताबिक बिहार में 37 लाख प्रधानमंत्री आवास योजना का निर्माण हो चुका है। लेकिन सच्चाई है कि प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत सरकार द्वारा 2 लाख 69 हजार रुपये आवंटित होता है, जिसमें घूसखोर कर्मचारी एवं बिचौलिया द्वारा 50 से 60 हजार रुपये झटक लिया जाता है। यदि योजनाओं का सच जानना चाहते हैं तो सत्ता का चश्मा हटाकर चरित्रवान महिला के गर्भ से पैदा लिए हुए अधिकारी से जांच करवा लें जैसे किशोर कुणाल, किरण बेदी, शोभा अहोतकर, आर. एस. भट्टी आदि से स्वयं योजनाओं के स्थल पर जाकर देख लें लेकिन यदि स्वयं जायेंगे तो वैसे अवस्था में आंकड़ा तैयार करने वालों को साथ रखना नहीं होगा तो धूर्त लोग प्रधानमंत्री आवास के जगह दूसरे मकान को दिखला देंगे एवं भाड़े पर महिला जुटाकर अक्षर आंचल योजना सफल दिखला रहे हैं। नीतीश के कमीशनखोर लोगों ने ऐसे-ऐसे करिश्मा कर दिखलाया है सो सुनकर आप दंग रह जाएंगे। बीपीएल के लायक को बीपीएल से बाहर कर दिया गया है तथा नौकरी पेशा महल वालों को बीपीएल धारी बना दिया गया है। एक उदाहरण काफी है कि फतुहा प्रखंड के अंतगर्त सुडीहा ग्राम के स्वर्गीय रामजतन राम की पत्नी को न घर है और न ही जीविका के लिए खेत, एक पुत्र है सुजान कुमार जो फतुहा बाजार में रहकर ठेला पर छोटा-मोटा रोजगार कर परिवार का भरण-पोषण कर रहा है। मोस्मात रामरती देवी की सिर्फ एक ही गलती थी कि नीतीश की घोषणा पर घूस नहीं था जिसके कारण प्रधानमंत्री आवास के कौन कहे बी.पी.एल. तथा मतदाता सूची से नाम भी हटवा दिया गया है। आज पूरे परिवार में घूस देकर काम करवाने की होड़ लग चुकी है। इस तरह के उदाहरण फतुहा में तो हजारों की संख्या में है ही पूरे बिहार में भी लाखों उदाहरण है। रामरती देवी न्याय मांगते-मांगते स्वर्ग सिधार गई।

नीतीश के विकास के बारे में वह शब्द याद आती है जब हरियाणा के मुख्यमंत्री स्व. पंडित भगवत दयाल ने कहा था कि जिस राज्य में जितनी ज्यादा विकास की योजनाएं बनेगी, उतना ही वहां के नेतागण खुशहाल होंगे, क्योंकि उन्हें मोटा कमीशन मिलेगा। नीतीश कुमार यदि निष्पक्ष रूप से विकास योजनाओं को गति देना चाहते हैं तो उन्हें सत्ता को दलालों के चंगुल से बाहर निकालना होगा तथा कमीशनखोर विधायकों, अफसर को पहचान कर उनके ऊपर नजर रखने की जरूरत है। लेकिन दुर्भाग्य है कि नेताओं के साथ ही इनके समय के करोड़पति कलंकों की संख्या में भी बढ़ोतरी हो रही है। किसी भी ऑफिस में चले जाए खुलकर घूस की बात की जाती है। नाजायज नहीं देने पर अनेक तरह के रोड़े अटकाकर काम को रोका जाता है। कार्यालयों में व्याप्त भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाना नीतीश कुमार के समक्ष एक चुनौती है। वे यदि इस चुनौती से निबटेंगे तभी पुनः सत्ता में उनकी वापसी संभव है क्योंकि उन्हीं की पार्टी के दलाल कार्यकर्ता सत्ता के मद में अपना कर्तव्य भूलते जा रहे हैं।●

● कुणाल कुमार सिंह

बिहार से झारखण्ड बनने के बाद कुशेश्वर स्थान को बिहार का देवघर कहा जाता है। यह स्थान दरभंगा जिला अन्तर्गत बिरौला अनुमण्डल में पड़ता है। कुशेश्वर स्थान के नजदीक रेलवे स्टेशन हसनपुर एवं रोसड़ा है जो समस्तीपुर, सहरसा रेलवे खण्ड पर स्थित है। एवं सकरी सनपुर प्रस्तावित रेल लाईन पर विरौल स्टेशन से मात्र 14 किमी0 की दूरी पर स्थित है। यहाँ से पटना, मुजफफरपुर, समस्तीपुर, रोसरा, लहेरिया सराय एवं दरभंगा से बसों के द्वारा भी कुशेश्वर स्थान आया जा सकता है। यह बिहार का प्रमुख तीर्थ स्थल भी है। यहाँ तीन नदियों जैसे (1) कोसी (2) कमला तथा (3) बलान का संगम भी है। यहाँ यात्रियों को ठहरने के लिए बहुत सी धर्मशालाएँ हैं। उनमें खगड़िया धर्मशाला, दरभंगा का मारवाड़ी धर्मशाला तथा शिवगंगा घाट धर्मशाला प्रमुख है।

पवित्र तपोभूमि मिथिला के बीच त्रियुगा और कौशिक कोशी नदी के अंचल में एक सघन जंगल था। उसके मध्य में परक मनोहर कुश का वन था। वहाँ एक कालीवत्सतरी (गाय की बच्ची) नित्य घास चरने बाहर से आती थी और कुश वन के बीच में खड़ी होकर स्तनों से दूध गिराकर चली जाया करती थी। जंगल के समीप में कुछ हजारी लोग थे। एक रोज संयोगवश किसी ने देखा। उसे बड़ा आश्यर्च लगा, वह हजारी से कहा। धीरे–धीरे बात फैल गई। लोगों ने आकर देखा तो बात सही निकली। कौतुहल वश हजारी लोगों ने वहाँ जमीन खोदना आरम्भ किया। रात में किसी ने स्वप्न देखा कि एक साधु आकर कह रहा है, अरे तुमलोग सावधानी से जमीन खोदना। जमीन के भीतर शिवलिंग है। सुबह होने पर उसने स्वप्न की बात बताई। सभी सावधानी से जमीन खोदे तो बहुत नीचे में शिवलिंग होने से उसे उखाड़ने का यत्न किया गया मगर उखड़ न सका।

वहाँ बेर–अबेर के राजा भी थे। उनको जब यह खबर मिली तो वे भी अपने दलबल के साथ वहाँ आये और उखाड़ने का पूरा प्रयत्न किए। शिवलिंग नहीं उखड़ा। भीतर से पानी निकल आया और लिंग नीचे उत्तरोत्तर अधिक मोटा होता गया। अन्त में राजा घर चले गए। उखाड़नेवाले भी क्रोध से वहाँ आग लगाकर दिनांत में चले गए। कुछ देर में किसी ने हजारी से कहा। उसने आकर आग बुझाइ। शिवलिंग भी आग लगने से तप्त हो गया था। इस दोष से बहुत अल्प काल में बेर–अबेर का राजा सवंश मर गया । उस गाँव में आग लग गई और सारी संपत्ति जल गई। पीछे वह राजा चिण्डेलक्षत्री और कायस्थ को हुआ। खागा हजारी बड़ी भक्ति के साथ शिवलिंग के ऊपर एक कुश की झोपड़ी बना दिया और वहाँ जंगल काटकर रास्ता बनाया। पानी का बड़ा अभाव था इस उसे स्वप्न हुआ कि जलधरी के नजदीक एक कलसी रूपैया है उससे तुम पोखरा खुदाओ। हजारी ने वैसा ही किया। वह पोखरा अभी भी मन्दिर से पश्चिम में मौजूद है। बाद में उनकी पूजा होने लगी। बहुत दिनों के बाद हजारी वंश में एक खागा हजारी बड़ा प्रतापी हुआ। उसने मंदिर बनाया जो सन् 1341 साल मे भूकम्प में नष्ट हो गया। वर्त्तमान का मन्दिर महात्मा श्री निर्मलदास जी के उद्यम से शकरपूरा की रानी श्रीमति कमला देवी ने बनाया।

श्री कुशेश्वरनाथ स्थापना विषयक स्कन्द महापुराणेक्त प्रमाण–

ततः कुशेश्वरं देव विधारा च लबेश्वरम्।
स्वां तनुं च महाभागौ भ्रातरौ तौ रघुत्तमौ ।।
निबेद्य ब्राह्माणेन्द्राणां कूत्वावति यथोचिताम्।
अयोध्यां नगरी तूर्णं कृत कृतत्यो विनिर्गतो ।।

उक्त प्रमाण से सिद्ध होता है कि श्री भगवान राम के पुत्र कुश ने कुशेश्वर की

स्थापना और वहाँ की सारी व्यवस्था की ।

Jh d'k'ojukFk egkRE; ikjEHk

श्री सूतजी कहते हैं– हे शौनक ? जब अखिल ब्रह्मण्ड नायक श्री रामचन्द्रजी की आज्ञा से श्री लक्ष्मणजी सरयू के किनारे योगाग्नि द्वारा शरीर को छोड़कर परमधाम चले गये, तब उनके बिछोह से भगवान श्री राम ने अपने पुत्र कुश को राज्य भार सौंपकर किस्किन्धा होते हुए लंका गये। वहाँ विभीषण ने बड़ा स्वागत किया और प्रार्थना की कि हे प्रभो मुझे भी साथ रखने की कृपा करें।

भगवान ने कहा तुम्हें में अक्षय राज्य दे चुका हूँ अतः मद रहित होकर राज्य करो। मेरी सेवा तुझे यहाँ ही प्राप्त होगी। अब मैं अपने धाम को जाऊँगा, इस हेतु तुमको दर्शन दिया। आज मेरी इच्छा होता है कि सेतु के आदि, मध्य और अन्त में एक–एक शिवलिंग की स्थापना करूँ, इस हेतु तुम सारी व्यवस्था करो। श्री भगवान् की आज्ञा होते ही विभीषण ने सारी व्यवस्था कर शुभ मुहुर्त में अपने प्रभु के द्वारा शिवलिंगो की स्थापना करायी। उनके नाम रामेश्वर हुये। यहाँ पर पाठकों को ध्यान रखना चाहिये कि एक बार लंका जाते ही भगवान् ने रामेश्वर की प्रतिष्ठा की थी। उस लिंग से यह भिन्न है। प्रायः मैं अनुमान करता हूँ कि दूसरा लिंग श्री रामचन्द्र ने वैसा कर यहाँ पर पाँच प्रासाद बनवाये। सुग्रीव आदि जितने थे वे सभी एक–एक शिवलिंग की स्थापना किये। राक्षसों ने कुछ पश्चिम हट कर एक चतुर्मुख शिवलिंग की स्थापना कीं। बाद में भगवान् श्री राम ने भी हाटकेश्वर को सविध पूजा आदि कर श्री अयोध्या जी के लिये चल पड़े। श्री अयोध्या में सभी को उपदेश देकर अपने–अपने स्थान को भेजकर कुछ समय के बाद ही श्री राम ने अपनी शाश्वत परमधाम की यात्रा की।

श्री रामचन्द्र के चले जाने पर कुश बड़े दुःख के साथ राज्य चलाने लगे। कुछ दिन बाद लंका के राक्षस अपनी स्थापित, मूर्ति की पूजा के लिये हाटकेश्वर आने लगा और रास्ते में मनुष्यों को मारने लगा। यह उपद्रव बहुत बढ़ गया। बहुत से तपस्वी भी मारे गये। किसी ने कुछ भी प्रतीकार नहीं कर पाया। अन्त में कुछ ब्राह्मण भी अयोध्या जी गये और वहाँ राजा श्री कुश को बहुत धमकाये। उन्होंने कहा कि आप अपने पिता का धर्म पालन नहीं कर रहे है।, इस हेतु मालूम होता है कि आप भी उसी दल के हैं। यदि ऐसा हो तो आप शाप देकर चले जायेंगे, नहीं तो शीघ्र आप उसकी व्यवस्था करें। राजा श्री कुश भयभीत हो गये और उन्होंने कहा विप्रवर? आप शांत हो जाएँ। अभी तक मुझे खबर नहीं थी। अतः मैं कुछ न कर सका। अभी मैं विभीषण के पा दूत भेजता हूँ और प्रजा की रक्षा के लिये प्राणप्रण करता हूँ।

राजा श्री कुश ने पत्र में लिखा कि पूज्य श्री विभीषण जी! मेरे पिताजी की आज्ञा आपके राक्षण लोग उल्लंघन कर रहे हैं, जिस कारण मेरी कितनी प्रजा मारी गयी हैं, अतः इसकी शीघ्र व्यवस्था करें नही तो मैं खुद लंका जाकर संग्राम के साथ आपका राज्य छीन कर चिरकाल के लिए संसार में शांति स्थापना करूँगा। दूत ने पत्र लेकर बड़ी शीघ्रता से श्री रामेश्वर पहुँच गया। वहाँ की जनता ने पुछे जाने पर दूत ने पूरा विवरण बताया। सारी बातों को समझकर वहाँ के आदमी कहने लगे कि आप उस पार जाने का कष्ट न करें। यहाँ रात में श्री विभीषण जी रोज पूजा के लिए आते हैं, आप उनसे मिलकर यहीं पत्र दे दें। दूत ने वैसा ही किया। आधी रात में श्री विभीषण जी बड़े प्रेम और विधि के साथ भगवान शंकर की पूजा कर जब जाने लगे तब दूत ने सामने जाकर नम्रता के साथ पत्र दिया। भक्त विभीषण ने नत्र में ज्योंही श्री कुश का नाम देखा कि उनकी आँखें में प्रेम के आँसू उमड़ आये शरीर के रोंगटे खड़े हो गये और कण्ठ भी भर आया। किसी तरह पत्र पढ़ा। समाचार जानने से अपने को दोषी समझ उनका शरीर कापने लगा और क्रोध से आँखें लाल–लाल हो उठीं। उन्होंने वहीं राक्षसों को बुलाया और कहा कि तुमलोगों ने बड़ा अनर्थ किया है अतः लंका के द्वार पर बिना अन्न और पानी के आज से मेरी आज्ञा मानकर सर्वदा के लिए खड़े रहो। दूत श्री विभीषण जी की दशा देखकर चकित हो गया।

दूत ने विदाई मांगी। श्री विभीषण अनेक रत्न और वस्त्र दूत को देकर राजा श्री कुश के लिये क्षमापत्र प्रदान किया। श्री अयोध्या जी लौटते समय दूत ने कहा कि महाराज हाटकेश्वर क्षेत्र में जो चतुर्भुज शिवलिंग है उसे उखाड़ दिया जाय, जिस कारण राक्षसों का गमन वहाँ होने से हिंसा होती है।

श्री विभीषण ने कहा दूत, स्थापित शिवलिंग को उखाड़ने में बहुत दोष है। और मैं स्वयं यहाँ से उत्तर नहीं दे सकता, अतः इस विषय पर राजा श्री कुश ही विचार करेंगे।

राक्षस लोग बड़े दुःखी होकर करूण क्रन्दन के साथ श्री विभीषण से प्रार्थना करने लगे। श्री विभीषण ने कहा, मैं कुछ नहीं कर सकता। तब तेरे लिए राजा श्री कुश ही कोई उपाय कर सकते हैं। उन्होंने दूत से कहा कि आप इन लोगों की दशा उन्हें बतायेंगे। उनकी जैसी इच्छा हो करेंगे। राक्षसों ने दुःख के साथ बड़े जोर से अपनी प्रार्थना सुनाई। दूत ने बड़ी शीघ्रता से श्री अयोध्या जी आकर राजा श्री कुश को सभी समाचार सुनाया। राजा श्री कुश बड़े प्रसन्न हो गए। उन्होंने फिर श्री विभीषण जी को बड़ी नम्रता से पत्र दिया। पत्र में लिखा था कि मेरी आज्ञा से राक्षस लोग कार्तिक मास में हाटकेशवर आवें और वहाँ धूली से शिवलिंग को ढँक दें। उनलोगों का अपराध मैं क्षमा करता हूँ। अब उन्हें भोजन भी मिलेंगे। श्री विभीषण जी ने वैसा ही किया। कार्तिक मास में राक्षस लोग हाटकेश्वर में धूली की वर्षा करने लगे। इस उत्पात से वहाँ के मातृगण क्रोधित होकर वायु बनकर धूल को उड़ाने लगे। बहुत दिन हो गए लेकिन शिवलिंग बालू से न ढँक सका। राक्षस लोग थक गए। इधर राजा की इस व्यवस्था से सभी लोग प्रसन्न हुए। राजा श्री कुश दोनों भाई राज्य में सर्वत्र भ्रमण कर प्रजा की रक्षा में तत्पर हो गए। सर्वत्र आनंद छा गया। ब्राहाण और तपस्वी प्रसन्न हो गए।

राजा श्री कुश ने ब्राहाणों को बहुत दान दिया और दोनों भाई अपने–अपने नामानुसार दो जगह शिवलिंग की स्थापना किए। लव के नाम से लवेश्वर हुए और मिथिला में राजा श्री कुश के स्थापित श्री कुशेश्वर हुए। श्री कुशेश्वर की स्थापना कर वहाँ पूजा की सारी व्यवस्था उन्होंने कर दी। बाद में ब्राह्मणों के हाथ श्री कुशेश्वर और श्री लवेश्वर की पूजा का भार देकर दोनों भाई श्री अयोध्या जी लौट आए।

श्री अयोध्या जी आने पर हाटकेश्वर से एक राक्षस आकर कहा कि महाराज राक्षस लोग थक गए, मगर वहाँ के मातृगण शिवलिंग को ढकने नहीं देते। अब आप स्वयं विचार करें। महाराज श्री कुश ने शीघ्र ही हाटकेश्वर जाकर वहाँ की स्थिति देखी। उन्होंने उन्होंने कहा कि यहाँ बल से काम न होगा। तुमलोग काम में लगे रहो, मैं श्री शंकर भगवान को तपस्या करता हूँ। वे कोई उपाय करेंगे।

श्री कुश ने बहुत सोच–विचार कर परम पुनीत श्री कुशेश्वर क्षेत्र समझ कर वहाँ तपस्या के विचार से चल पड़े।

रास्ते में तपस्वी लोगों का भी विचार लिए। वे भी शंकर की आराधना करने का विचार दिए। राजा श्री कुश महाराज ने ब्राह्मणों के साथ अपने स्थापित श्री कुशेश्वर क्षेत्र में एक वर्ष तक कठिन तपस्या की। वर्ष के अन्त में वहाँ आशुतोष भगवान श्री शंकर प्रत्यक्ष होकर दर्शन दिए और वर मांगने के लिए कहे।

श्री कुश ने कहा, प्रभा! राक्षसों का काम सफल हो अर्थात धूलि की वृष्टि से वह स्थान भर जाय, यह वरदान हमें दें। श्री शंकर तथास्तु कह अन्तर्ध्यान हो गए। भगवान श्री शंकर की प्रत्यक्षता से कुशेश्वर स्थान की महिमा भूमण्डल में अत्यधिक हो गई। विप्र और तपसिव्यों से राजा श्री कुश प्रशंसा और आशीर्वाद प्राप्त कर श्री अयोध्या जी चले गए।

i;ek.k&

तेपांतद्वचनं श्रुत्वा ततः कुश महीपतिः।
रूद्रमाराध्यामास तत्क्षंत्रं प्राप्त सद्विजाः।।
ततस्तस्य गतस्तुष्टि वर्षान्ते भगवान हरः।
प्रावाच प्रार्थयाभीष्ट पत्ते पनसि वांछितम्।।

d'k mokpA

यथा संपूर्यते चाशुः पाँसुभिभूर्मि मण्डलम्।
एतत्प्रेत प्रयुक्तेश्च प्रसादात्ते तथा कुरू।।
एवं तस्य वरं दत्वा भगवान बृभावाहनः।
जगामादर्शन पश्चात्सार्धं सर्वेगणोद्विजाः।।
कुशोपि ब्राह्मणैः सवैः तापसैंश्च प्रसंसितः।
लब्धाशीः प्रययौ तस्मादयोध्या नगरौ प्रति।।

इत्यादि.....।।

इसके बाद भगवार शंकर ने मातृगणों को बुलाकर कहा कि आपलोग उस स्थान को छोड़कर भारतवर्ष को क्षेत्रों में निवास कीजिए। मातृगण तथास्तु कह चल दिए। राक्ष्झंस द्वारा स्थापित शिवलिंग के ऊपर बालू का पहाड़ हो गया। सभी लोग प्रसन्न हो गए। कालांतर में राजा श्वेत ने जब श्री हाटकेश्वर की स्थापना की तब वहाँ एक कुशेश्वर शिवलिंग की भी स्थापना हुई जो हाटकेश्वर क्षेत्र माहात्म्य पढ़ने पर मालूम होता है। सूतजी शौनक से कहे हैं कि हे शौनक! ठस महात्म्य को पढ़कर जो कुशेश्वरनाथ की पूजा करेंगे उनकी इच्छा पूरी हागी। यहाँ दूध, घृत और गंगाजल चढ़ाने की बड़ी महिमा है।

nlj dFkk %& सत्ययुग में एक कुश नाम का रक्षस परम शिव भक्त हुआ। वह शंकर की प्रसन्नता प्राप्त कर बड़ा बलवान हुआ। उसकी इष्ट देव। विप्र और तपस्वीजन से बैर नहीं करता था, इस हेतृ वह निर्भय पृथ्वी पर विचरता

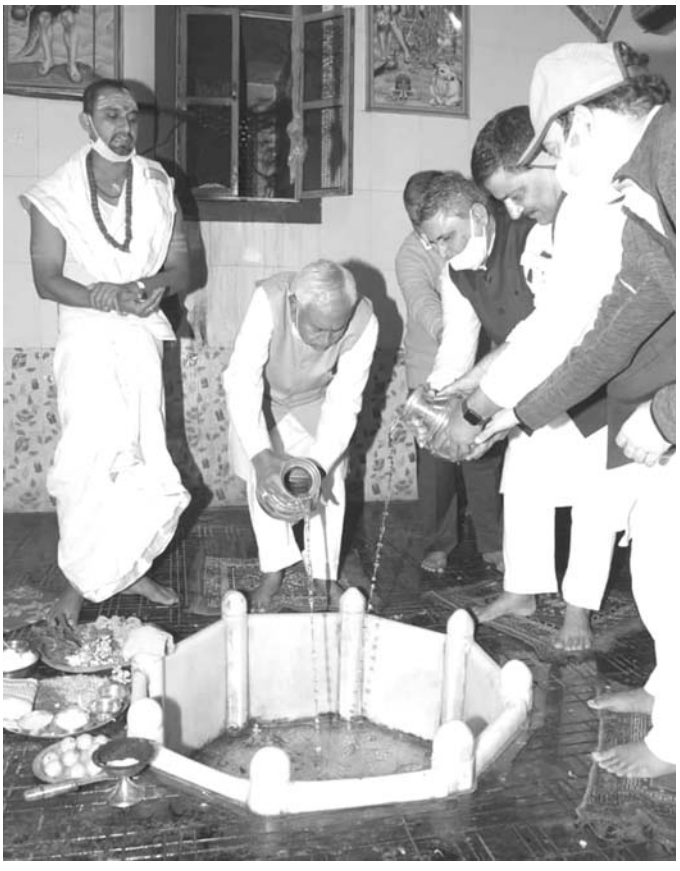

था। देवताओं ने कितनी बार उनको मारने का यत्न किया किन्तु सदा उनका प्रयत्न विफल रहा। अंत में देवताओं ने ब्रहाजी से प्रार्थना की। श्री ब्रह्माजी ने राजा बलि के यहाँ से त्रिविक्रम भगवान को भूमण्डल पर लाए त्रिविक्रम भगवान ने बहुतों दिन तक कुश के साथ लड़ाई की, मगर वह मर नहीं सका। इस अवस्था को देखकर देवताओं के साथ ब्रह्मा ने आद्या की अराधना की। एक मास के बाद आकाशवाणी हुई कि कुश मरेगा नहीं लेकिन यदि उसे पृथ्वी के भीतर किसी प्रकार घुसाकर उसके ऊपर शिवलिंग की स्थापना हो तो वह ऊपर नहीं आएगा। ब्राह्माजी तपस्या छोड़कर भगवान से मिले और आकाशवाणी सुनाए। त्रिविक्रम भगवान ने आद्या का ध्यान कर दूसरे रोज कुश के साथ लड़ने लगे। बीच में बिजली की तरह प्रकाश हुआ और उसमें आद्याा की मोहनी मूर्ति कुश के द्वारा देखी गई। मूर्ति को देखने से कुश मोहित हो गया। युद्ध की ओर प्रवृत्ति कम हो गई। इसी समय आद्या को दया से त्रिविक्रम भगवान ने कुश को नीचे दबाकर पृथ्वी में घुसा दिया। देवताओं ने बड़ी शीघ्रता से शिवलिंग देकर त्रिविक्रम भगवान के हाथ में दिया और चारों तरफ से मिट्टी गिराने लगे। विष्णु ने कुश का शिवलिंग दिखाकर उसके ऊपर वेद मंत्रों द्वारा कुशेश्वर नाम से शिवलिंग की स्थापना की।

कुश अपने आराध्यदेव को अपने ऊपर से हटाना उचित न समझ कर युद्ध से विरक्त होकर अपनी आराध्या हिरण्यदा से प्रार्थना किया कि हे देवि, जो कोई यहाँ शिवलिंग की पूजा करे उसे धन का अभाव न हो और उसकी कामना पूरी हो। त्रिविक्रम

भगवान ने कुश की प्रशंसा करते हूए कहा कि तुम मुझसे भी कुछ मांग लो। कुश ने कहा– हे भगवान! मृत्युलोक में सबसे ऊँचा स्थान आपका द्वारका जी है, इस हेतु जो कोई कुशेश्वर नाथ की पूजा न कर द्वारकाधीश का दर्शन करे तो उसका आधा पुण्य मुझे प्राप्त हो। भगवान ने तथास्तु कह शिवलिंग की पूजा की। बाद में ब्रह्मा आदि देवताओं ने भी शंकर की स्तुति कर प्रसन्न मन से भगवान के साथ अपने–अपने स्थान को चले गए। इस कथा के आधार पर द्वारका जी में जब कुशेश्वर शिवलिंग की खोज हुई तो, पता नहीं चलने पर वहाँ उत्तर फाटक के नजदीक एक कुशेश्वर नाथ शिवलिंग की स्थापना वहाँ की जनता ने की। द्वारका जाने पर पहले कुशेश्वर का दर्शन कर द्वारकाधीश का दर्शन करना चाहिए। वहाँ के महात्म्य में भी यह बात लिखी है। कुश जहाँ था वहाँ घना जंगल था और कुश बहुत था। यह बात जब कुशेश्वरनाथ का कलियुग में प्रादुर्भाव हुआ तब भी देखी गई। उसको जो इष्ट देवी हिरण्यदे थी वह कुशेश्वर स्थान हिरणी ग्राम में अभी भी हिरण्यदे नाम से विख्यात है। कल्प भेद से प्रत्येक कथा में कुछ भेद रहता है इसलिए पाठकों को संदेह नहीं करना चाहिए। एक कल्प में कुश द्वारा स्थापित कुशेश्वर हुए और दूसरे कल्प में कुश राक्षस द्वारा एवं तीसरे कल्प में कुश मुनि ने कुशेश्वर की स्थापना की। इसकी कथा आगे दी जाती है।

vkxekä rhljh dFkkA

शंकर समय एकांत में कुशासन पर प्रसन्नचित से बैठे हुए भगवान श्री शंकर जी को देखकर पार्वती ने पूछा कि हे प्रभो! घोर कलियुग में मनुष्य अनेक दुःख से दुःखी रहेंगे अतः उनके उद्धार का कोई उपाय बनाइये। पार्वती के प्रश्न से प्रसन्न होकर श्री शंकर जी ने कहा कि प्रिये! जब कुश मनि मेरे लिए कठिन तप करेंगे तब मैं उनको दर्शन देकर एक अपना लिंग दूँगा। उस लिंग के स्थापनार्थ नारदादि ऋषि और देवता लोग वहाँ जाकर वेदोक्त विधि से कुशेश्वर नाम से शिवलिंग की स्थापना करेंगे। स्थापना के बाद कलियुग में मैं तुम्हारे साथ वहाँ रहूँगा। वहाँ हमारे दर्शन से सभी का उद्धार होगा। जैसे प्रमाण–

वत्सयामि च जलौ धीरे सर्वदा उमया सह।
वत्र गत्वा नरः साक्षात् दर्शनं प्राप्नुयात् कलो।।
अनायासेन संसारात् उद्धरिष्यति मानबा।

जो कोई गंगाजल चढ़ायेगा उसे शरीर सुख, यश और प्रतिष्ठा होंगी। हरिद्धार का जल चढ़ाकर पंचोपचार पूजा भक्तिभाव से करने पर संसार का कष्ट नाश होकर नया स्थान मिलेगा। ●

प्रधानमंत्री सुरक्षा

जाके राखो साईंया, मार सके न कोय

● ललन कुमार प्रसाद

फिरोजपुर-मोगा रोड के प्यारेआना गांव स्थित फ्लाईओवर पर प्रधानमंत्री के काफिले के 18 से 20 मिनट तक फंसे रहने के दौरान आसपास में मौजूद ढ़ेर सारे लोगों ने अपने-अपने मोबाईल में प्रधानमंत्री के काफिले का वीडियो शूट किया। टी०वी० पर साफ दिख रहा था कि 25 से 30 की संख्या में प्रदर्शनकारी प्रधानमंत्री के काफिले से महज 50 फीट की दूरी पर हाथ उठा-उठाकर प्रधानमंत्री के विरोध में नारे लगा रहे थे। इस तरह से असुरक्षित जिस प्यारेआना गांव के फ्लाईओवर पर स्थित प्रधानमंत्री के काफिले को 18 से 20 मिनट तक असहज हालात में रूकना पड़ा था, वह बेहद संवेदनशील सरहदी इलाका है। वहां से इंडो-पाक बॉर्डर महज 30 किलोमीटर के फासले पर है। उस क्षेत्र में पाकिस्तान द्वारा ड्रोन से गिराये गये टिफीन बम और विस्फोटक अक्सर मिलते रहते हैं। नवम्बर 2021 में दिवाली के पहले भारत-पाक सीमा के समीप के गांव में पंजाब पुलिस ने टिफीन बम और हैंड ग्रेनेड बरामद किये थे। पंजाब के पूर्व

"मैं बठिंडा एयरपोर्ट पर जिंदा लौट आया हूं, अपने मुख्यमंत्री को थैंक्स कहना।"

कार्यकारी डीजीपी सिद्धार्थ चट्टोपध्याय को हटाकर बनाये गये नये डीजीपी वी.के. भवरा ने बताया कि हाल ही में पठानकोट में आतंकवादियों द्वारा हैंड ग्रेनेड फेकने की दो बड़ी वारदातें हुई है-पहली चक्की पुल के निकट (11 नवम्बर 2021 को रात 9 बजकर 30 मिनट पर) और दूसरी पठानकोट आर्मी कैंट के त्रिवेणी गेट पर (21 नवम्बर 2021 को)। सितम्बर 2021 में फिरोजपुर गांव में पुलिस द्वारा टिफिन बम की बरामदगी और आसपास के जिलों में आईईडी विस्फोट हो चुके हैं। जलालाबाद में हाल ही में जहां बम विस्फोट हुआ, वह जगह भी उक्त फ्लाईओवर के नजदीक है। फिरोजपुर में बीते महज पांच महीने में छः बार हमले हो चुके हैं। प्रधानमंत्री के 5 जनवरी 2022 के दौरे के ठीक दो दिन बाद बीएसएफ को सतलज नदी में खाली पड़ी एक पाकिस्तानी वोट मिली। जहां वोट मिली, वह सतलुज नदी पाकिस्तान से निकलकर भारत में दाखिल होती है। फिर वह नांव सतलुज नदी के बहाव की उलटी दिशा में चलकर भारत में उस स्थल पर पहुंची होगी, जो पाकिस्तानी साजिश की ओर इशारा करती है। 5 जनवरी 2022 से ठीक 13 दिन पहले 23 दिसम्बर 2021 को लुधियाना कोर्ट परिसर में जबर्दस्त बम

विस्फोट हुआ है, जिसमें दो लोग मारे गये थे, कई लोग घायल हुए थे और कोर्ट परिसर का एक बड़ा हिस्सा ध्वस्त हो गया था। वैसे भी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आतंकवादियों व खालिस्तानियों के हिट लिस्ट में टॉप पर हैं। फिर आजकल तो एक से बढ़कर एक ऐसे घातक हथियार आतंकवादियों व खालिस्तानियों के पास है, जिनसे काफी दूर से भी सटिक निशाना लगाया जा सकता है, 20 मिनट तो बहुत लंबी अवधि है। एक सेकेंड में हैंड ग्रेनेड फट सकता है। स्नाईपर रायफल और क्लोज क्वाटर वेपन का इस्तेमाल कर विशिष्ट व्यक्ति की जान ली जा सकती है। उक्त फ्लाईओवर के ऊपर और नीचे दोनो तरफ प्रदर्शनकारी मौजूद थे। कई प्रदर्शनकारी तो प्रधानमंत्री के काफिले से महज 18-20 फीट तक नजदीक पहुंच गये थे। इतना ही नहीं, भारत-पाक सीमा के समीप के भारतीय इलाके में पाकिस्तानी ड्रोन से हमला कर पलक झपकते ही वापस पाकिस्तान की सीमा में दाखिल कराया जा सकता है। फ्लाईओवर के नीचे आईईडी रखकर आसानी से उसे ध्वस्त किया जा सकता है। 5 जनवरी 2022 को भारत में प्रतिबंधित सिख फॉर जस्टिस के संस्थापक व मुखिया गुरपतवंत सिंह पन्नू का एक वीडियो इंटरनेट मीडिया पर वायरल हो रहा था, जिसमें वह पंजाब के लोगों को प्रधानमंत्री मोदी की फिरोजपुर रैली को रोकने के लिए भड़काता दिख रहा था। उक्त वीडियो में प्रधानमंत्री को जूता दिखाने को एक लाख अमेरिकी डॉलर का इनाम देने का लालच किया जा रहा था। पन्नू का ऐसा ही भड़काऊ वीडियो पहले 15 अगस्त 2021 को सामने आया था। सिख फॉर जस्टिस का मुख्यालय अमेरिका में है। पन्नू पाकिस्तान का पीठू है और वहां के आईएसआई के निदेशानुसार भारत में आतंकी घटना को अंजाम दिलाने का कार्य करता है। उसका एक ही मकसद है कि भारत के पंजाब में पंजाब से अलग एक खालिस्तान देश की स्थापना करना। ऐसी बेहद असुरक्षित हालात में प्रधानमंत्री की सांसे 20 मिनट तक अटकी रही। उस दौरान कुछ भी अनिष्ट हो सकता था, लेकिन गलिमत था कि कुछ भी अनिष्ट नहीं घटा। परंतु प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को एहसास हो गया कि वह मौत के मुंह में फंस गये हैं। तभी तो बठिंडा एयरपोर्ट पर वापस सकुशल लौट आने पर उन्होंने पंजाब पुलिस के अधिकारियों से कहा-'मैं बठिंडा एयरपोर्ट पर जिंदा लौट आया हूं, अपने मुख्यमंत्री को थैंक्स कहना'। प्रधानमंत्री मोदी ने ऐसा कहा तो निश्चित रूप से सुरक्षा की दृष्टि से फ्लाईओवर पर हालात बेहद नाजुक रही होगी, वरना हमारे जांबाज प्रधानमंत्री ऐसा कभी नहीं कहते। हमारे प्रधानमंत्री कितने दिलेर हैं, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वर्ष 2015 में जब फोन पर अचानक पाकिस्तान के तत्कालिन प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के मौखिक निमंत्रण पर उनकी पोती की शादी में शामिल होने के लिए उनके घर पहुंच गये थे और वह भी रावलपिंडी से नवाज शरीफ के हेलीकॉप्टर पर सवार होकर। वैसे में पाकिस्तान में उनकी हत्या कर दी जाती तो सौ फीसदी दोषी नरेन्द्र मोदी ही होते। ईश्वर की कृपा से उस समय भी कुछ अनिष्ट नहीं घटा। खैर जो

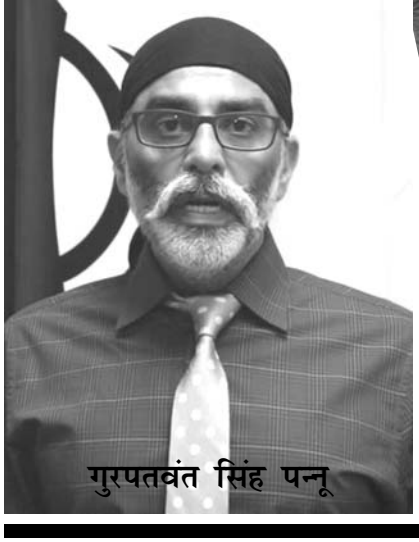

गुरपतवंत सिंह पन्नू

भी हो, ईश्वर की कृपा से नरेन्द्र मोदी प्यारेआना गांव के फ्लाईओवर से बठिंडा एयरपोर्ट वापस सकुशल लौट आये। सच ही कहा गया है-'जाके राखे साईया, मार सके न कोई'।

★ प्रधानमंत्री के दौरे या यात्रा का प्रोटोकॉल :- जब भी प्रधानमंत्री किसी राज्य के दौरे पर जाते हैं तो उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी पूरी तरह से राज्य विशेष के सरकार की होती है। सुरक्षा के प्रत्यक्ष व परोक्ष दोनो प्रकार के पहलु को समझकर

योजना बनायी जाती है। पहले से निर्धारित जगह पर कैसे पहुंचेंगे, कहां हवाई जहाज का इस्तेमाल होगा, कहां हेलीकॉप्टर, रेल, वोट, सड़क मार्ग का सहारा लिया जायेगा, सबकुछ पहले से ही तय रहता है। एक दफा जब निर्णय ले लिया जाता है कि कहां जाना है, कब जाना है, कैसे जाना है और कितनी तैयारी के साथ जाना है, तब सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए तमाम छोटी-बड़ी बातों पर गौर किया जाता है। यदि मौसम खराब होगा और हेलिकॉप्टर भी नहीं जा पायेगा तो किस सड़क मार्ग से प्रधानमंत्री के काफिले को ले जाना होगा, यह सब योजना में शामिल होता है। अगर प्रधानमंत्री अचानक हवाई मार्ग से नहीं जा पायेंगे तो यह पहले से ही तय रहता है कि किस सड़क मार्ग से होकर जायेंगे। हमेशा सड़क के कम से कम दो रूट तय होते हैं, जिसकी जानकारी एसपीजी (स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप) को छोड़कर पहले से किसी भी अन्य को नहीं रहती है। अंतिम समय में एसपीजी तय करती है कि उक्त दोनो में से किस रूट से जाना है। एसपीजी और स्टेट पुलिस का कॉर्डिनेशन सतत बना रहता है। एसपीजी द्वारा स्टेट पुलिस से रूट क्लीयरेंस मांगी जाती है। स्टेट पुलिस द्वारा एसपीजी को रूट क्लीयरेंस देने के बाद ही एसपीजी आगे की ओर बढ़ती है। जब प्रधानमंत्री का जहाज निर्धारित एयरपोर्ट पर पहुंचता है तो उनको रिसिव करने के लिए पहले से ही राज्य विशेष के मुख्यमंत्री, डीजीपी (पुलिस महानिदेशक) और चीफ सेक्रेटरी (मुख्य सचिव) एयरपोर्ट पर मोजूद रहते हैं। फिर सड़क मार्ग से निर्धारित स्थान पर जाने के लिए प्रधानमंत्री का काफिला बढ़ता है तो उस काफिले में डीजीपी और चीफ सेक्रेटरी की कार का स्थान तय रहता है।

★ पंजाब की कांग्रेसी सरकार ने प्रोटोकॉल का पालन किया की नहीं? :- पंजाब सरकार ने

चरणजीत सिंह चन्नी
मुख्यमंत्री, पंजाब

सुखजिंदर सिंह रंधावा

वी.के. भंवरा
डीजीपी, पंजाब

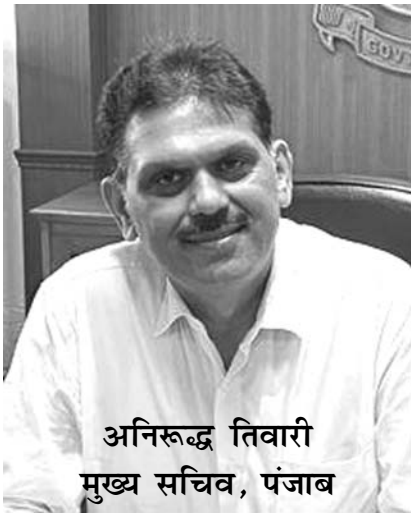

अनिरूद्ध तिवारी
मुख्य सचिव, पंजाब

निश्चित रूप से प्रोटोकॉल का पालन नहीं किया। पहला बठिंडा एयरपोर्ट पर प्रधानमंत्री को रिसिव करने के लिए मुख्यमंत्री, डीजीपी और चीफ सेक्रेटरी मौजूद नहीं थे। दूसरा प्रधानमंत्री के काफिले में शामिल कारों के बीच डीजीपी के कार में डीजीपी मौजूद नहीं थे और चीफ सेक्रेटरी के कार में चीफ सेक्रेटरी मौजूद नहीं थे। ऐसे में प्रधानमंत्री के कारों के काफिले में पंजाब सरकार द्वारा उक्त दोनो खाली कारों को काफिले में शामिल किया जाना एसपीजी को गफलत में रखना नहीं तो और क्या है? जब प्रधानमंत्री का काफिला बठिंडा एयरपोर्ट से फिरोजपुर की ओर जा रहा था, तो ये दोनो वरिष्ठ आईपीएस और आईएएस, जिनके कंधों पर प्रधानमंत्री के सुरक्षा की जिम्मेदारी थी, कौन सी दूसरी जिम्मेदारी निभा रहे थे, जो प्रधानमंत्री की सुरक्षा वाली जिम्मेदारी के मुकाबले अधिक अहमियत रखती थी। उक्त दोनो आला अधिकारी उस समय किस स्थान पर थे और कौन सी जिम्मेदारी निभा रहे थे। खैर जो भी हो, इतना तो तय है कि उक्त दोनो अधिकारी पंजाब के मुख्यमंत्री के सम्पर्क में थे और उनके निदेशानुसार प्रधानमंत्री की सुरक्षा को कोई अहमियत नहीं दे रहे थे, वरना अपनी मर्जी से प्रोटोकॉल का उलंघन करने की हिमाकत नहीं करते। पंजाब के मुख्यमंत्री के तरफ से ऐसी गुश्ताखी करने का आदेश न मिला होगा, तभी

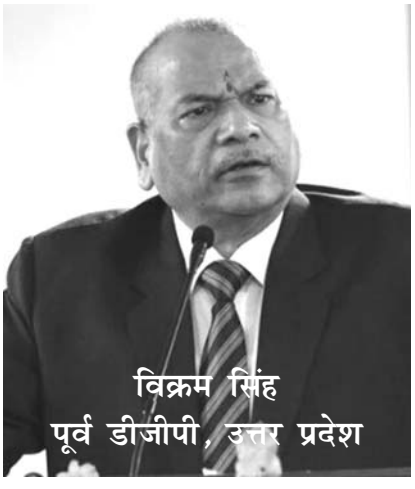

विक्रम सिंह
पूर्व डीजीपी, उत्तर प्रदेश

दोनो आलाधिकारियों ने किया। अब प्रश्न उठता है कि जब प्रधानमंत्री का काफिला सड़क पर हो तो ऐसी नाजूक स्थिति में उक्त दोनो आलाधिकारी मुख्यमंत्री के निदेशानुसार कौन सा कार्य कर रहे थे? इसको उन्हें बताना होगा, क्योंकि इसको जानने का हक जनता को है।

प्रधानमंत्री का काफिला 2 बजकर 40 मिनट पर जब रैली स्थल से 11 किलोमीटर पहले फिरोजपुर-मोगा रोड पर प्यारेआना गांव पहुंचा तो फ्लाईओवर पर हजार-ग्यारह सौ की संख्या में प्रर्दशनकारी ट्रक, ट्रैक्टर और बस के साथ पहले से ही सड़क जाम कर धरना दे रहे थे। ट्रैक्टर पर चढ़कर लाउडस्पीकर से घोषणा कर रहे थे कि गोली खायेंगे, लेकिन प्रधानमंत्री के काफिले को यही रोक लेंगे। किसी भी सूरत में आगे नहीं बढ़ने देंगे। जब करीब 18-20 मिनट तक फ्लाईओवर पर रूकने के बाद प्रधानमंत्री का काफिला वापस लौटने लगा तो प्रदर्शनकारियों ने जश्न मनाया कि प्रधानमंत्री के काफिले को लौटने के लिए विवश कर दिया।

अब प्रश्न उठता है कि जिस रूट की जानकारी सिर्फ पंजाब सरकार और पंजाब पुलिस के आला अफसरों को थी, वह जानकारी आखिरकार प्रदर्शनकारियों के पास कैसे पहुंची और कैसे प्रधानमंत्री के काफिले के पहुंचने के चंद मिनट पहले प्रदर्शनकारी बड़ी संख्या में पूरे लाव-लश्कर

विक्रम सिंह मजिठिया

के साथ पहुंचकर रास्ता जाम करने में सफल हो गये।

पंजाब के मुख्यमंत्री कहते हैं कि प्रधानमंत्री की सुरक्षा में 10 हजार पुलिसकर्मी तैनात थे तो उसके बारे में ऑडिट होनी चाहिए कि वे पुलिसकर्मी किन-किन मुख्य जगहों पर तैनात थे और उनका मार्ग-दर्शन कौन कर रहा था? ऐसा इसलिए कि न केवल सड़क मार्ग पर, बल्कि इमारतों की छतों पर भी उनकी ड्यूटी नगण्य थी। फिर सुरक्षा के प्रति लापरवाह पुलिसकर्मी प्रदर्शनकारियों के सराथ प्रसन्न मुद्रा में चाय पीते नजर आ रहे थे, जो टी०वी० पर स्पष्ट दिख रहा था। इससे तो यही अच्छा होता कि दस हजार के बजाय सिर्फ 500 पुलिसकर्मी तैनात होते और संजिदगी के साथ अपनी ड्यूटी निभाते। उत्तर प्रदेश के पूर्व डीजीपी विक्रम सिंह ने कहा कि मैंने अपने 36 साल के सेवा में अनेक विशिष्ट व्यक्तियों का आगमन सुनिश्चित किया है, लेकिन

श्रीनिवास वी.वी. प्रधान

ऐसी दुर्व्यस्था कभी नहीं देखी।

प्रधानमंत्री दिल्ली में अपने निवास से बाहर जाते हैं तो उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी एसपीजी के साथ ही दिल्ली पुलिस की भी होती है। ये दोनो मिलकर प्रधानमंत्री की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं। एसपीजी पर प्रधानमंत्री के समीप की सुरक्षा का जिम्मा होता है, क्योंकि एसपीजी का काम प्रधानमंत्री को सुरक्षा का घेरा देना होता है, जैसा कि फ्लाईओवर पर फंसे प्रधानमंत्री के काफिले को टी०वी० पर देखने को मिला। बाकि जगहों पर सुरक्षा की जिम्मेदारी स्थानीय पुलिस की होती है, चाहे वह अपने निवास स्थान से बाहर दिल्ली में ही क्यों न हो। बावजूद इसके पंजाब सरकार कहती है कि प्रधानमंत्री का सकुशल दौरा सुनिश्चित करने दायित्व एसपीजी का है। पंजाब सरकार का इससे अनर्गल आरोप संभव नहीं है। शिरोमणी आकाली दल के नेता विक्रम सिंह मजीठिया का कहना है कि प्यारेआना गांव स्थित फ्लाईओवर पर जो घटा, वह प्रधानमंत्री की सुरक्षा में चूक नहीं, बल्कि उनकी हत्या की सुनियोजित साजिश थी, जो मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी के आवास पर रची गई थी। उन्होंने आगे कहा कि मुख्यमंत्री चन्नी और पंजाब के गृह मंत्री सुखजिंदर सिंह रंधावा मुख्य साजिशकर्ता थे। अगर विक्रम सिंह मजीठिया का बयान गलत है तो पंजाब सरकार उनपर जनता को भड़काने का मुकदमा क्यों नहीं चलाती?

प्यारेआना गांव स्थित फ्लाईओवर पर प्रधानमंत्री के निजी स्टॉफ द्वारा बार-बार फोन करने के बाद भी पंजाब के मुख्यमंत्री द्वारा फोन न उठाना सिर्फ प्रधानमंत्री के संवैधानिक पद की तौहीन ही नहीं बल्कि देश के संविधान और

शिवराज सिंह चौहान

लोकतांत्रिक मूल्यों पर भी कुठाराघात है। साथ ही पंजाब के मुख्यमंत्री के नियत पर भी शक पैदा करता है कि उन्होंने प्रधानमंत्री के हत्या की साजिश तो नहीं रची थी।

देश के हर विवेकशील व्यक्ति के लिए यह हतप्रद करने वाली स्थिति थी। प्रधानमंत्री की सुरक्षा में पंजाब सरकार की व्यापक लापरवाही को लेकर पूरा देश जब चिन्तित था तब कई कांग्रेसी नेता बहुत खुश थे और खुशी जता भी रहे थे कि प्रदर्शनकारियों ने प्रधानमंत्री को अपना ताकत दिखा दिया, जिससे उनको फौरन वापस लौटना पड़ा। युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीनिवास बी.बी. प्रधान अपने दोनो हाथों को उठाकर कह रहे थे-'मोदी जी हाउ इन द जोश'। उन्ही युवा कांग्रेसी कार्यकर्ताओं में से एक ने यहां तक कह दिया-'शुक्र कीजिए मोदी जी की आप बच गये, किसान आपकी प्रतीक्षा कर रहे थे'। कांग्रेसजनों के अत्यधिक घिनौनी हरकत से साबित हो जाता है कि कांग्रेस पार्टी कितनी बेशर्म है। साथ ही यह भी शक पैदा होता है कि पंजाब सरकार ने प्रधानमंत्री की हत्या की साजिश तो नहीं की थी।

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता संवित पात्रा पंजाब के मुख्यमंत्री से सवाल पूछते हैं कि प्रधानमंत्री के काफिले की रूट जैसी सुरक्षा से जुड़ी बेहद गोपनीय जानकारी प्रियंका गांधी वाड्रा को क्यों दी? जिसे मुख्यमंत्री स्वयं स्वीकारते हैं। मुख्यमंत्री बताये कि प्रियंका गांधी किस संवैधानिक पद पर हैं, जो उन्होंने ऐसा किया। यह तो मुख्यमंत्री चन्नी द्वारा अपने पद के शपथ-ग्रहण के समय ली गई संवैधानिक गोपनीयता का खुल्लम-खुल्ला उलंघन है। इससे शक पैदा होता है कि प्रधानमंत्री की सुरक्षा में की गयी भयंकर लापरवाही किसी अनहोनी की साजिश तो नहीं थी?

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि राष्ट्रीय चैनलों पर प्रधानमंत्री की सुरक्षा में हुई चूक को लेकर किये गये कई खुलासों से स्पष्ट हो गया है कि पूरी घटना पंजाब सरकार द्वारा प्रायोजित थी। वह कोई संयोग नहीं, बल्कि खूनी साजिश और षड्यंत्र था। प्रधानमंत्री के काफिले के मोटर कारों में पंजाब के मुख्यमंत्री, डीजीपी और चीफ सेक्रेटरी के बगैर उनकी मौजूदगी के उनकी खाली कार चले तो शक पैदा होना स्वभाविक ही है कि पंजाब के मुख्यमंत्री को किस घटना का इंतजार था। शिवराज सिंह चौहान का सवाल है कि प्रधानमंत्री के काफिले के रूट की जानकारी प्रदर्शनकारियों को किसने दी और पुलिस की मौजूदगी के बावजूद भारी संख्या में प्रदर्शनकारियों को पूरे लाव-लश्कर के साथ कैसे इकट्ठा होने दिया गया तथा प्रधानमंत्री के फ्लाईओवर पर फंसे रहने के दौरान भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा का फोन मुख्यमंत्री क्यों नहीं उठा रहे थे? आखिर वह

जे.पी. नड्डा

किस घटना का इंतजार कर रहे थे? क्या ये सारे तथ्य प्रधानमंत्री की हत्या किये जाने की साजिश की ओर इशारा तो नहीं करते?

पंजाब की पृष्ठभूमि और स्थिति के बारे में भलां किसे पता नहीं है। कश्मीर के बाद कोई राज्य आतंकवाद व अलगाववाद की हिंसा की दृष्टि से सबसे ज्यादा संवेदनशील है तो वह पंजाब ही है। ईश्वर की कृपा से कोई अनहोनी नहीं घटी। यदि घट जाती तो पंजाब की कांग्रेसी सरकार और कांग्रेस पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्षा सोनिया गांधी तथा पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी क्या जवाब देते? गुस्सायी जनता के आक्रोश से बचने के लिए क्या बिल में समा जाते या चांद पर चले जाते, क्या करते?

★ **क्या पंजाब सरकार प्रधानमंत्री की हत्या करा देने पर आमदा थी? :-** पंजाब सरकार की बेहद संगीन चूक के चलते फ्लाईओवर पर तीन तरफ से बेहद असुरक्षित हालात में प्रधानमंत्री जिस तरह से घिर गये थे, वह जालियां वाला बाग की घटना को ताजा कर देती है। अमृतसर के

राहुल गांधी

सोनिया गांधी

प्रियंका गांधी वाड्रा

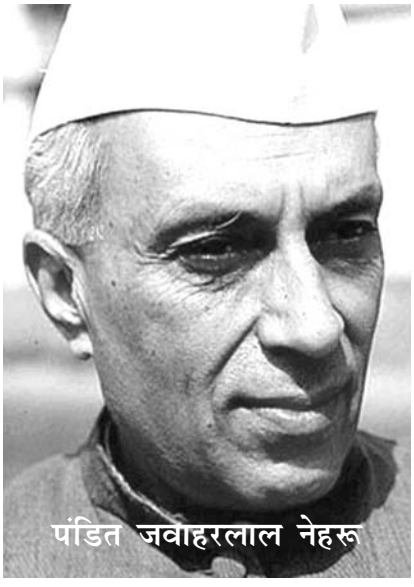
पंडित जवाहरलाल नेहरू

इंदिरा गांधी

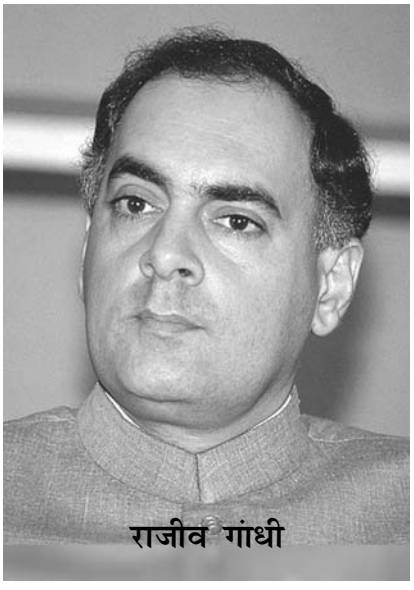
राजीव गांधी

स्वर्ण मंदिर के पास एक छोटा सा बाग है, जिसे जलियां वाला बाग कहते हैं। चारों ओर दीवार से घिरे इस बाग में अंदर जाने और अंदर से बाहर निकलने का एक ही संकरा रास्ता है। वैशाखी पूर्णिमा के दिन 13 अप्रैल 1919 को जनरल माइकल डायर ने बगैर किसी चेतावनी के जलियावाला बाग में एकत्रित कई हजार लोगों की भीड़ पर फायर करने का आदेश दे दिया। साथ ही जलियां वाला बाग के एकमात्र सकरे रास्ते पर तोप लगवा दिया, जिससे कि कोई भी व्यक्ति अंदर से निकलकर बाहर न भाग सके। महज 10 से 15 मिनट के अंदर पुलिस द्वारा 1650 राउंड गोलियां चलायी गयी। तीन हजार से ज्यादा औरत, मर्द और बच्चे तड़प-तड़पकर वीर गति को प्राप्त हो गये। करीब-करीब उसी तरह पंजाब सरकार 5 जनवरी 2020 को 18 से 20 मिनट तक प्यारेआना गांव स्थित फ्लाईओवर पर बिल्कुल असुरक्षित हालात में प्रधानमंत्री को छोड़ दिया। प्रदर्शनकारी तीन तरफ से बिल्कुल ही असुरक्षित हालात में प्रधानमंत्री को घेर रखा था, सिर्फ चौथी तरफ से बाहर निकला जा सकता था। अगर प्रदर्शनकारियों द्वारा प्रधानमंत्री को चौथी तरफ से घेरने में विलंब न होती तो क्या वह जिंदा बठिंडा एयरपोर्ट के लिए सकुशल वापस लौट सकते थे? क्या प्रदर्शनकारी प्रधानमंत्री की नृशंस हत्या नहीं कर देते? क्या प्रधानमंत्री जिंदा बच सकते थे? क्या पंजाब के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी और कांग्रेस पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्षा सोनिया गांधी के पास उक्त प्रश्न का कोई उत्तर है?

★ क्या कांग्रेस पार्टी की नजर में देश की जनता की जान की कोई कीमत है या नहीं? :-

☞ भारत के तीन टुकड़ों भारत, पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान में बांटने की शर्त पर पंडित जवाहरलाल नेहरू का पहला प्रधानमंत्री बनने की घटना ने बंगाल और पंजाब को दंगे की भट्टी में झोंक दिया था। उस दंगे में कई लाख लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था, जिनमें भारी संख्या में बंगाली और पंजाबी थे। वह विश्व की क्रूरत्तम घटनाओं में से एक थी।

☞ 31 अक्टूबर 1984 को जब इंदिरा गांधी को उन्ही के बॉडीगार्ड ने गोली मारकर हत्या कर दी थी, तो उस दर्दनाक घटना को लेकर पूरे देश में हजारों की संख्या में निर्दोष सिखों की हत्या कर दी गई थी और उनकी संपत्ति लूट ली गई थी। केवल दिल्ली में करीब 5 हजार सिखों की निर्मम हत्या कर दी गई। कांग्रेसजनों द्वारा सैकड़ों सिखों को जिंदा जला दिया गया और उनकी संपत्ति लूट

कैप्टन अमरिंदर सिंह

ली गई। दिल्ली में तीन दिनों तक मौत का तांडव चलता रहा। कुछ वरिष्ठ कांग्रेसी नेता दंगे की अगुवाई कर रहे थे। लेकिन कांग्रेस की सरकार और पार्टी ने किसी को भी दंडित नहीं किया, उलटे केश को रफा-दफा करा दिया गया। धन्य है केन्द्र की नरेन्द्र मोदी सरकार, जिसने बंद करा दिये गये मुकदमों को खुलवाया और कई दोषियों को उम्रकैद की सजा दिलवायी तथा छोटी-छोटी सजा तो ढ़ेर सारे दोषियों को मिली।

☞ 3 दिसम्बर 1984 को रात बारह बजे भोपाल के बरसिया रोड पर स्थित अमेरीकी यूनियन कार्बाइड कारखाने से अत्यधिक जहरीली मिथाइल आइसोसाइनेट गैस के रिसाव के चलते पूरा भोपाल जहरीली गैस के चैंबर में बदल गया। तीन से चार घंटे के अंदर करीब 15 हजार लोग मारे गये। कई हजार लोगों के आंखों की रौशनी चली गयी। यूनियन कार्बाइड कारखाने से पांच वर्ग किलोमीटर के दायरे में कई हजार पशु मारे गये और कई हजार बीमार पड़ गये। अगली सुबह पुराने भोपाल की गलियों में कही भी पक्षियों का कलरव सुनने को नहीं मिला, क्योंकि वे रात में ही तड़प-तड़पकर मर गई थी। उस समय केन्द्र में राजीव गांधी की सरकार थी और राज्य में अर्जुन सिंह की सरकार। अर्थात् केन्द्र और राज्य दोनो जगहों पर कांग्रेस की सरकार थी। दोनो सरकारों ने मिलकर युनियन कार्बाइड के मालिक को सरकारी विमान द्वारा देश से बाहर भगा दिया। भोपाल गैस काण्ड संसार की क्रूरत्तम दुर्घटनाओं में से एक है।

☞ 4 अक्टूबर 2018 को रावण दहन के दौरान अमृतसर में कुछ सेकेंड के अंदर ट्रेन से कटकर 450 से भी अधिक लोगों की मृत्यु हो गयी थी। उस रावण दहन समारोह के लिए राज्य प्रशासन

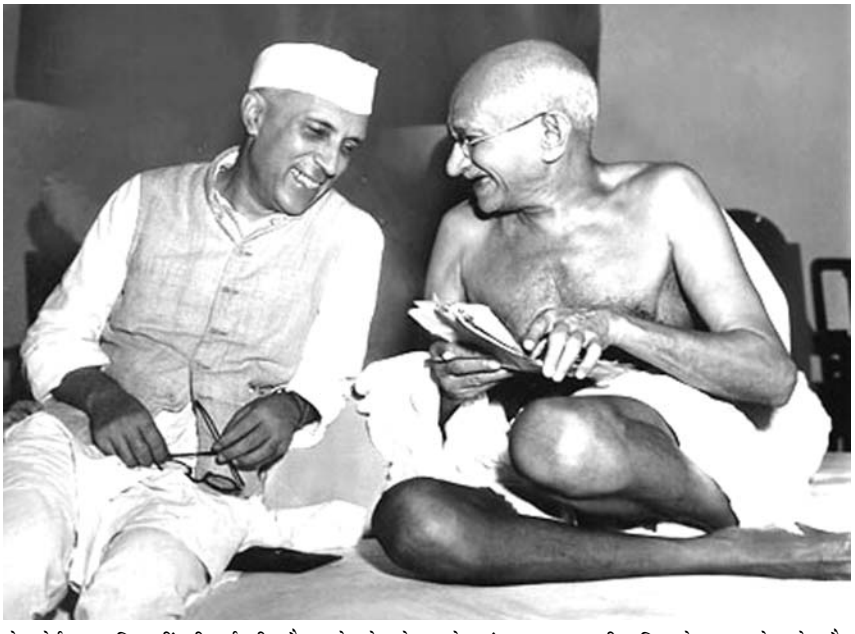

से कोई अनुमति नहीं ली गई थी और न रेलवे को सूचित किया गया था। रावण दहन जो शाम साढ़े पांच बजे होना था, वह भारी भीड़ जुटाने को लेकर रात सवा सात बजे शुरू हुआ। उस समय बिल्कुल अंधेरा हो गया था और पटाखों की आवाज में भीड़ में मौजूद लोग ट्रेन की सिटी की आवाज नहीं सुन सके। इतनी बड़ी दुर्घटनाओं को देखने के लिए पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह को चंडीगढ़ से अमृतसर आने में 17 घंटे लगे। उक्त हृदय विदारक घटना को लेकर पंजाब की कांग्रेसी सरकार ने एक जांच कमिटि बैठा दी और चार सप्ताह के अंदर रिपोर्ट जमा करने का आदेश दे दिया। पंजाब के मुख्यमंत्री ने उस समय कहा था कि रिपोर्ट आने के बाद दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की जायेगी, लेकिन रावण दहन के आयोजक कांग्रेसी विधायक नवजोत सिंह सिद्धू और उनकी पत्नी एवं कांग्रेसी मंत्री नवजोत कौर सिद्धू को पंजाब सरकार की ओर से कोई दंड नहीं दिया गया। उक्त मुकदमे को पंजाब सरकार ने बंद कर दिया। उक्त दुर्घटना विश्व की क्रूरत्तम दुर्घटनाओं में से एक है। उक्त दुर्घटना रेयरेस्ट ऑफ द रेयर अपराध है। इसलिए नवजोत सिंह सिद्धू और उनकी पत्नी दोनो को वर्ष 2018 में ही फांसी पर लटका दिया जाना चाहिए था। भारत सहित दुनियां का कोई भी देश ऐसा ही करता। कांग्रेस की वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा सोनिया गांधी ने इतने बड़े अपराधी को पंजाब का प्रादेशिक अध्यक्ष बना दिया।

☞ सिर्फ और सिर्फ पंडित नेहरू के हिमालयन ब्लंडर के चलते 1962 के भारत-चीन युद्ध में देश के पांच हजार से भी अधिक भारतीय सेना के जांबाज जवान वीरगति को प्राप्त हो गये और 38 हजार वर्ग किलोमीटर जमीन पर चीन का कब्जा हो गया।

☞ सिर्फ और सिर्फ पंडित नेहरू की गलती के चलते 1947 में पाकिस्तान, भारत के 32 हजार वर्ग किलोमीटर भूमि पर कब्जा कर उसे आजाद कश्मीर का नाम दे दिया। फिर पंडित नेहरू द्वारा संविधान में अनुच्छेद 370 और अनुच्छेद 35 ए को समाहित करने के चलते पाकिस्तान, कश्मीर में पाकिस्तानी आतंकवादियों का घुसपैठ कराकर तथा ब्रेनवाश करके कश्मीरी युवाओं को आतंकवादी व अलगाववादी बनाकर कश्मीर में खूनी वारदात कराते रहता है, जिसके चलते भारतीय सेना के कई हजार जवान शहीद हो गये और आज भी हो रहे हैं।

☞ कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्षा सोनिया गांधी के द्वारा चीन के साथ किये गये गलत समझौता तथा चीनी सेना द्वारा धोखे से हमला करने के चलते लद्दाख के गलवान घाटी में भारतीय सेना के निहत्थे 20 जवान शहीद हो गये। निहत्था होने के बावजूद भारतीय सेना के बहादूर जवानों ने इस्पात के कांटेदार रड से सुसज्जित चीनी सेना के 60 से भी अधिक जवानों को मौत के घाट उतार दिया।

और कितने उदाहरण का उल्लेख करूं। नेहरू-गांधी परिवार के घिनौने करतूतों से कांग्रेस पार्टी का इतिहास भरा-पटा है। बावजूद इसके सोनिया गांधी और राहुल गांधी अपने आप को देश का प्रधानमंत्री बनाये जाने वाला सबसे मजबूत व योग्य दावेदार मानते हैं।

★ क्या आतंकवादियों और अलगाववादियों का घोर समर्थक है नेहरू-गांधी परिवार :-

इस शीर्षक से तो आप पाठकों को लगता होगा कि मैं नेहरू-गांधी परिवार का घोर विरोधी हूं, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं है। भारत के तीन टुकड़ों-भारत, पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान बांटने की शर्त पर पंडित नेहरू देश के पहले प्रधानमंत्री बन बैठे। महात्मा गांधी, जो हमेशा पंडित नेहरू को आगे बढ़ाते रहे, को गफलत में रखकर उन्ही की मदद से पंडित नेहरू ने प्रधानमंत्री की कुर्सी को हथिया लिया। दरअसल महात्मा गांधी, पंडित नेहरू को हमेशा ओवरएस्टिमीट करते थे और सरदार पटेल को अंडरएस्टिमीट करते थे। अर्थात् उपरोक्त दोनो व्यक्तियों को लेकर महात्मा गांधी निष्पक्ष नहीं थे बल्कि पक्षपाती थे। उन्होंने सरदार पटेल की हकमारी कर पंडित नेहरू को देश का प्रधानमंत्री बनवा दिया, जबकि पंडित नेहरू ने आजादी के पहले एक भी आंदोलन का नेतृत्व नहीं किये थे और सरदार पटेल कई आंदोलनों का सफलतापूर्वक नेतृत्व कर अंजाम तक पहुंचाये थे। फिर देश की 15 प्रांतीय समितियों में से 12 ने सरदार पटेल को प्रधानमंत्री बनाने के पक्ष में वोट दिया था और पंडित नेहरू को एक भी प्रांतीय समिति ने प्रधानमंत्री बनाने के लिए वोट नहीं दिया था। लेकिन महात्मा गांधी द्वारा पंडित नेहरू को भारत का प्रधानमंत्री बनवाने की जिद्द ने देश का बंटाधार कर दिया, क्योंकि पंडित नेहरू की नजर में राष्ट्रीय हितों की कोई अहमियत नहीं थी। उन्हें तो दुश्मन देश पाकिस्तान और चीन के हुक्मरानों की नजर में अच्छा कहलाना पसंद था। फिर वह भारत देश को अपनी निजी संपत्ति समझते थे, जबकि भारत देश भारत की जनता की अनमोल धरोहर है। अगर ऐसा नामझ व्यक्ति किसी देश का मुखिया बन जाये तो उस देश का बंटाधार होना निश्चित है। इसलिए भूलकर भी ऐसे व्यक्ति को भारत का प्रधानमंत्री नहीं बनाया जाना चाहिए था। यह तत्कालिन भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता महात्मा गांधी की पहाड़ जैसी भूल थी। जिसका खामियाजा भारत आजादी के समय से ही भुगतता आ रहा है और आगे भविष्य में भी हमेशा भुगतता रहेगा। 26 अक्टूबर 1947 को इंडियन इंडीपेंडेंस एक्ट 1947 के तहत कश्मीर भारत का अभिभाज्य अंग बन गया। ऐसा कश्मीर के तत्कालिन राजा हरी सिंह ने पाकिस्तानी कबायलियों के हमले से कश्मीर को बचाने के लिए कश्मीर का विलय भारत में कराया था। बावजूद इसके पाकिस्तान के संस्थापक व पहले गर्वनर जनरल मोहम्मद अली जिन्ना तथा नेशनल कांफ्रेंस के संस्थापक शेख अब्दुल्लाह को खुश करने के लिए पंडित नेहरू ने देशहीत को ताख पर रख दिया और अपने मंत्रीमंडल से बगैर

सलाह मशवरा किये 1948 में भारत में जम्मू कश्मीर के विलय वाले मुद्दे को लेकर बेवजह संयुक्त राष्ट्र संघ में चले गये। इस तरह बैठे बिठाये उन्होंने पाकिस्तान को भारत के खिलाफ एक खतरनाक मुद्दा दे दिया।

पाकिस्तान के साथ आज जो पाक अधिकृत कश्मीर (पीओके) की समस्या है, उसका निदान 1947 में ही हो गया होता, यदि पंडित नेहरू युद्ध विराम की घोषणा नहीं करते। देश का मुखिया होने के नाते तत्कालिन गृह मंत्री सरदार पटेल पर दबाव डालकर भारतीय सेना को आगे बढ़ने से रूकवा दिया। तभी तो पाकिस्तान करीब 32 हजार वर्गकिलोमीटर इलाके पर कुंडली मारकर बैठ गया और उसे आजाद कश्मीर का नाम दे दिया। इस तरह हम पाते हैं कि कश्मीर समस्या के जन्मदाता नेहरू हैं। इतना ही नहीं इस समस्या को काफी जटिल बना दिया। यह समस्या भारत-पाकिस्तान का द्विपक्षीय सीमा विवाद है। इसलिए इस विवाद को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाने का कोई मतलब ही नहीं था। उसी समय से पाकिस्तान, भारत को क्षद्म युद्ध के जरीय लगातार परेशान करते आ रहा है। पाकिस्तान, भारतीय हिस्से में रह रहे कश्मीरियों को भड़काकर तथा उन्हें हथियार देकर, गोला-बारूद की आपूर्ति कर, धन देकर तथा पाकिस्तानी आतंकवादियों का घूसपैठ कराकर लगातार खून-खराबा कराते आ रहा है, जिससे कि पूरे कश्मीर पर कब्जा करने में सफल हो जाये। इस बात को ध्यान में रखकर पाकिस्तान ने 2 मार्च 1963 को अवैध तरीके से भारत के पीओके के रूप में कब्जाई गई लद्दाख की 5180 वर्ग किलोमीटर जमीन चीन को तौफे में दे दिया और चीन ने सहज स्वीकार कर लिया। चीन तो पड़ोसी देश की जमीन को अवैध

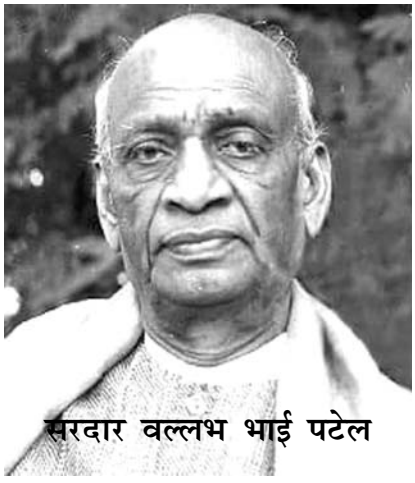
सरदार वल्लभ भाई पटेल

तरीके से जबरन हड़पने में माहिर है। इस तरह कुल मिलाकर 43180 वर्ग किलो मीटर लद्दाख के भारतीय इलाके पर चीन का अवैध कब्जा हो गया, जिसे चीन ने अस्काई चीन का नाम दे दिया।

1947 के आजादी के समय से ही समय-समय पर उलटा-सीधा काम करते हुए तथा संसद को धोखा देते हुए पंडित नेहरू ने 26 जनवरी 1950 को अनुच्छेद 370 और 14 मई 1954 को अनुच्छेद 35 ए को संविधान में समाहित कर दिया, जो देश को तोड़ने वाला अनुच्छेद था। महीनों तक संविधान के एक-एक धारा का गहराई से मंथन के साथ अध्ययन करते हुए मौजूदा नरेन्द्र मोदी सरकार ने अनुच्छेद 35 ए और अनुच्छेद 370 को भारतीय संविधा से बाहर का रास्ता दिखा दिया। इसके लिए नरेन्द्र मोदी की दूरदर्शिता की जितनी तारीफ की जाये, कम ही होगी। एक तरह से 5 अगस्त 2019 को उन्होंने देशहीत में बगैर किसी खून-खराबे के बिल्कुल शांतिपूर्वक असंभव को संभव बनाने का शानदार काम किया। इसके लिए हम समस्त देशवासी उनके आभारी हैं। उक्त काम को अंजाम तक पहुंचाने में गृह मंत्री अमित शाह ने कंधे से कंधा मिलाकर नरेन्द्र मोदी का भरपूर साथ दिया, इसलिए भारतीय जनता अमित शाह की भी आभारी है। कांग्रेस आज भी संवैधानिक तरीके से संविधान से उपरोक्त दोनो अनुच्छेदों के बाहर किये जाने का पूरजोर विरोध कर रही है।

वर्ष 2017 में लोकसभा के चुनाव के समय कांग्रेस पार्टी के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी ने अपनी पार्टी की चुनावी घोषणा पत्र में घोषणा किया था कि अगर मेरी पार्टी सत्ता में आयी तो संविधान के अनुच्छेद 124 ए को खत्म कर देगी। अर्थात् देशद्रोहियों, आतंकवादियों और अलगाववादियों को खूली छूट दे दूंगा कि वह देश को तोड़ने के लिए कितना भी अपराध क्यों न करें, उनपर मुकदमा नहीं चलाया जायेगा। अर्थात् देश को बर्बाद करने वाला कितना भी अपराध कोई क्यों न करें, उसपर मुकदमा नहीं चलाया जायेगा। वह सौ फीसदी निर्दोश माना जायेगा। क्या ऐसे में देश को बर्बाद होने से बचाया जा सकता है, हरगीज नहीं। ऐसे देशद्रोही व्यक्ति को तो देशद्रोह के आरोप में जीवन भर के लिए जेल में डाल देना चाहिए।

राजीव गांधी फाउंडेशन, पिपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना से भारत स्थित चीनी दूतावास के माध्यम से 2005-2006 में तीन लाख अमेरिकी डॉलर (करीब 90 लाख रूपये) दानप में लिया। इस फाउंडेशन की अध्यक्षा सोनिया गांधी हैं। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह, पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी, कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा, पूर्व वित्त मंत्री पी. चिदम्बरम

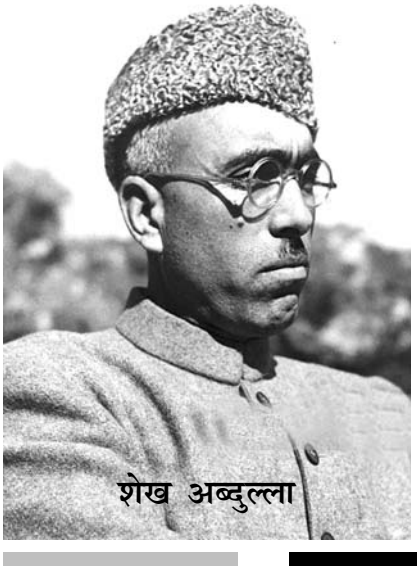
शेख अब्दुल्ला

राजा हरी सिंह

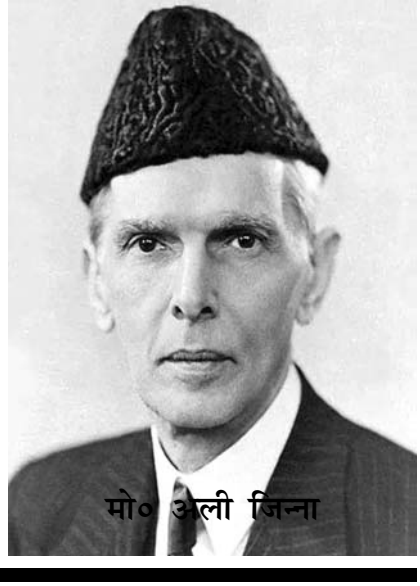
मो० अली जिन्ना

आदि ट्रस्टी हैं। चीन से दान में पैसा लेने के लिए फाउंडेशन ने सरकार से अनुमति नहीं ली थी और ना ही सरकार को बताया था कि चीन से किन शर्तों पर पैसा दान में लिया है। क्या फाउंडेशन के अध्यक्षा से लेकर ट्रस्टी तक किसी को भी कानून की जानकारी नहीं है? क्या ये सब अनपढ़ और नादान हैं? क्या इनसे अनजाने में गलती हो गई है? कांग्रेस चीन से गुप्त दान क्यों लेती है? इंकार क्यों नहीं करती। इससे स्पष्ट है कि कांग्रेस पार्टी गद्दार पार्टी है।

चीनी सेना 1962 का भारत-चीन युद्ध के बाद भी मौका देखकर भारतीय भू-भाग को हड़पती रही है, लेकिन राहुल गांधी इस सच को नहीं स्वीकारते हैं। मसलन, 2008 में चीन ने चुसुर क्षेत्र के पैंगनाक में 250 वर्ग किलोमीटर भारत की जमीन पर कब्जा कर लिया। उस समय गांधी परिवार के चाटुकार डॉ० मनमोहन सिंह देश की सत्ता पर काबिज थे। इसलिए उन्होंने गांधी परिवार के इशारे पर चुप्पी साध ली। देश की जनता तक इस समाचार को पहुंचने नहीं दिया और ना ही कोई ऐसा उपाय किया कि भविष्य में ऐसी घटना पर रोक लग सके। यह दर्शाता है कि गांधी परिवार चीन का बहुत ही विश्वासी एजेंट हैं, चीन के हाथों बिका हुआ है। तभी तो राहुल गांधी फाउंडेशन चुपके से चीन से दान या चंदा लेता है। भारतीय सीमा की सुरक्षा को लेकर बड़ी-बड़ी डिंग हांकने वाले राहुल गांधी में दम है तो 2008 की उक्त घटना को लेकर एक भी शब्द बोलकर दिखाये।

★ पंडित नेहरू ने ही तिब्बत को चीन का गुलाम बनाया :- 14वें दलाईलामा, जो आज भी तिब्बत के वर्तमान दलाई लामा हैं, वह भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू को बहुत ही

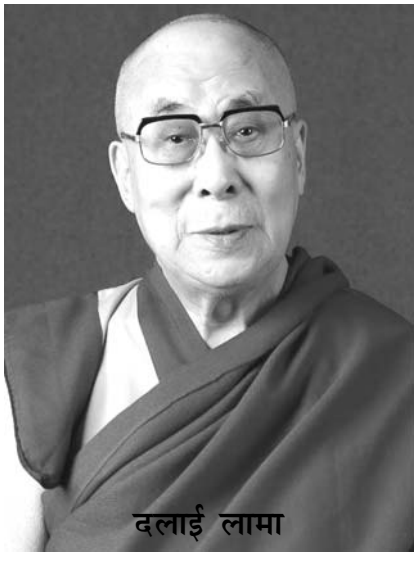
दलाई लामा

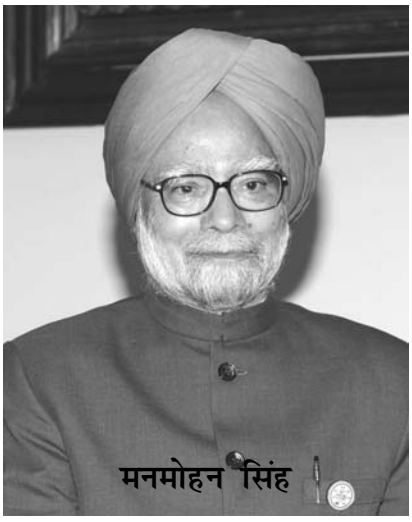
मनमोहन सिंह

पढ़ा-लिखा निहायत नेक इंसान मानते थे। पंडित नेहरू का पहनावा और बातचीन करने का सलीका बहुत अच्छा लगता था। उसी का नाजायज फायदा उठाते हुए बेजां दबाव डालकर पंडित नेहरू ने तिब्बत के तत्कालिक शासक व धर्मगुरू भोले-भाले दलाईलामा से जबरन 17 बिन्दुओं वाले संधि पर 23 मार्च 1951 को हस्ताक्षर करवा लिया। उस संधि के तहत एक स्वतंत्र देश तिब्बत, चीन का एक स्वशासित प्रांत बन गया और उस स्वशासित प्रांत का मुखिया दलाईलामा बना दिये गये। जब 24 जून 1954 को चीन के प्रधानमंत्री चाउ एन लाई भारत की राजकीय यात्रा पर आये थे, तो उसी दिन भारत ने चीन से समझौता कर चीन को मान्यता दे दिया कि तिब्बत चीन का एक स्वशासित प्रांत है। बगैर किसी अधिकार के भारत, चीन को बिना सिरपैर वाला तथा सरासर नाजायज उपरोक्त मान्यता प्रदान करने वाला भारत पहला और आखिरी देश बन गया। ऐसा इसलिए कि भारत द्वारा चीन को दी गयी मान्यता गला, बिना सरपैर वाला और अवैध था। बात यह है कि पंडित नेहरू न तिब्बत के नागरिक थे और ना ही तिब्बत ने उन्हे ऐसा करने के लिए अधिकृत किया था। चीन के पास ऐसा कोई भी दस्तावेज नहीं है, जिसे वह संयुक्त राष्ट्र संघ के पटल पर रखकर साबित कर सके कि तिब्बत कभी भी चीन का हिस्सा रहा है। सच में पंडित नेहरू पर यह कहावत सटिक बैठती है-'मान न मान, मैं तेरा मेहमान'। वह जर्बजस्ती अपने आप को तिब्बत का बहुत बड़ा हितैशी मानते थे, लेकिन उन्हें चीन का लात-जूता खाते हुए उसका खुशामत करना बहुत अच्छा लगता था।

पहले चीन हमारा पड़ोसी देश था, लेकिन पंडित नेहरू ने चीन को पड़ोसी देश बना दिया। आज वही चीन सुरसा के मुंह के तरह भारत की भूमि को निगलता जा रहा है। यह तो नरेन्द्र मोदी की सरकार है, जिसने डोकलाम और गलवान, दोनो जगहों पर चीन की ठुकाई करके चीन को स्पष्ट संदेश दे दिया कि आज का भारत 1962 वाला भारत नहीं है। जो हमको छेड़ेगा, उसको हम छोड़ेंगे नहीं, माकूल जवाब देकर रहेंगे। चाहे सामने वाला देश दुनियां का सुपरपावर देश चीन ही क्यों न हो।

★ गांधी परिवार के लिए असहनीय है परिवार के बाहर के किसी का प्रधानमंत्री बन जाना :- पहले चोरी, फिर सीनाजोरी। पंजाब के बेशर्म कांग्रेसी मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सुरक्षा को लेकर सवाल पूछ रहे हैं-'क्या तुम्हें किसी ने पत्थर मारा, क्या तुम्हे कोई खरोच आयी क्या तुम्हे कोई गोली लगी, क्यो किसी ने तेरे खिलाफ नारे लगाये, इत्यादि'। ये सवाल पंजाब के मुख्यमंत्री पूछ रहे हैं, जिनके अपने दो-दो प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और राजीव गांधी आतंकवाद की भेंट चढ़ गये तथा जिनकी याद में कांग्रेस जन आज भी रोते-रोते नहीं थकते। लेकिन बहुत ही दुख की बात है कि वे ही कांग्रेस जन प्रधानमंत्री लालबहादूर शास्त्री का नाम भूल जाते हैं, जो पार्टी विशेष से ऊपर उठकर देश के निष्पक्ष प्रधानमंत्री साबित हुए और जिन्होंने देशहीत में शानदार काम किया तथा जिनकी सोवियत रूस के ताशकंद में रहस्यमय मौत से आज तक पर्दा नहीं उठा सका है। तत्कालिन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी अपने व्यक्तिगत प्रभाव का दुरूपयोग कर लालबहादूर शास्त्री के रहस्यमय परिस्थिति में हुई मौत की जांच होने नहीं दी। कांग्रेस पार्टी के पास आज भी कोई जवाब है कि लालबहादूर शास्त्री के रहस्यमय मौत की जांच को जबरन क्यों रूकवा दिया? प्रधानमंत्री बनने के महज 18 महीने बाद पाकिस्तान,

चाउ एन लाई

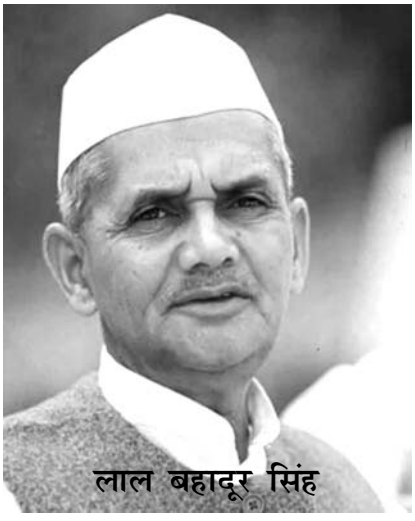
लाल बहादूर सिंह

अमेरिका, सोवियत रूस और भारत के तत्कालिन शीर्ष कांग्रेसी नेता या नेत्री मिलकर साजिशतन धोखे से बेहद लोकप्रिय अभिमन्यु प्रधानमंत्री लालबहादूर शास्त्री की हत्या करा दी गयी। लेकिन पूरा देश जानता है कि वह शीर्ष कांग्रेसी नेता या नेत्री थी, जिन्होंने लालबहादूर शास्त्री को अपने रास्ते से हटाकर पद पर बने रहने को सुनिश्चित कर लिया या कर ली। अगर कांग्रेस पार्टी में दम है तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से लालबहादूर शास्त्री की रहस्यमय मौत की जांच कराने की मांग करे। क्या कांग्रेस पार्टी इस लेख के लेखक की चुनौती को स्वीकार करेगी।

तमिलनाडू के श्रीपेरंबदुर में प्रधानमंत्री राजीव गांधी की नृशंस हत्या तमिल आतंकवादियों ने कर दी तब कांग्रेस पार्टी के पी.वी. नरसिंहा राव देश के प्रधानमंत्री बना दिये गये। नरसिंहा राव बहुत ही विद्वान, अनुभवी और काबिल प्रधानमंत्री थे। बगैर किसी साजिश के उनकी स्वभाविक मृत्यु हो गयी। लेकिन मृत्यु के बाद गांधी परिवार की सह पर उनके पार्थिव शरीर को कांग्रेस मुख्यालय में लाने नहीं दिया गया। इतना ही नहीं शमशान घाट पर उनके अंतिम संस्कार को भी ठीक ढ़ंग से पूरा नहीं होने दिया गया, जिसके चलते उनके अधजले पार्थिव शरीर को कुत्तों ने भी नोच-नोचकर खाया। ऐसी घिनौनी हरकत गांधी परिवार के अंधभक्तों ने गांधी परिवार के प्रति अपनी वफादारी का इजहार किया। आज भी मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह, कांग्रेस के मुख्य राष्ट्रीय प्रवक्ता रणदीप सिंह सूरजेवाला आदि यही कर रहे है।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि नेहरू-गांधी परिवार को अपने परिवार से बाहर के किसी भी व्यक्ति का प्रधानमंत्री बनाया जाना बर्दाश्त से बाहर की बात है। ऐसा देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के समय से ही होता चला आ रहा है। साजिश रचकर ही पंडित नेहरू ने सरदार वल्लभ भाई पटेल की हकमारी कर ली थी। शायद इसलिए पंजाब के मुख्यमंत्री द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सुरक्षा में अभूतपूर्व लापरवाही बरती गई। कांग्रेसजनों द्वारा नरेन्द्र मोदी के खिलाफ बेहद ओछी हरकतें तभी से लगातार की जाती रही है, जब वह 2014 में देश के प्रधानमंत्री बने। नरेन्द्र मोदी के व्यक्तिगत विरोध में कांग्रेस पार्टी इतनी अंधी हो गयी है कि उसे इतना भी नहीं सूझ रहा है कि नरेन्द्र मोदी देश की समूची 135 करोड़ जनता के प्रधानमंत्री हैं। ईश्वर ही जाने ऐसी उलूल-जुलूल हरकते करते रहने वाली कांग्रेस पार्टी का भविष्य में क्या हश्र होगा?

हम सभी जानते हैं कि 2002 में गुजरात के गोधरा रेलवे स्टेशन पर खड़ी साबरमती एक्सप्रेस की बोगी नं.-एस.6 में बाहर से पेट्रोल छिड़ककर आग लगा दी गयी थी, जिससे 59 कारसेवकों के जलकर मर जाने के चलते दंगा हुआ। उस दंगे में हिन्दू-मुसलमान मिलकार कुल 1044 लोग मारे गये थे। उस दंगे को लक्ष्य बनाकर नरेन्द्र मोदी के प्रति व्यक्तिगत प्रतिशोध की भावना से ग्रस्त कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्षा गलत बयानी करती थी कि नरेन्द्र मोदी मौत के सौदागर हैं। उनकी बयानबाजी बिल्कुल ही गलत थी। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष शरद पवार उनके साफ कर चुके थे कि गुजरात दंगे के लिए नरेन्द्र मोदी जिम्मेदार नहीं हैं। वह बहुत ही निष्पक्ष और साफ-सुथरे व्यक्ति हैं। असलियत भी यही है, वरना 31 अक्टूबर 1984 की तरह वहां भी बहुत ज्यादा लोगों की हत्या हो गयी होती। अदालत ने भी नरेन्द्र मोदी को दोषी नहीं माना, लेकिन अफवाह फैलाकर उनके विरोधियों ने उनको बदनाम करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी थी। परन्तु जो किसी मामले में दोषी न हो, उसपर 'खून की दलाली' और 'मौत का सौदागर' जैसे बेहद घिनौना आरोप लगाकर बदनाम करना घृणित कार्य नहीं तो और क्या है? यही काम सोनिया गांधी के पुत्र राहुल गांधी ने किया। उन्होंने राफेल युद्धक विमान की खरीद को लेकर हर जनसभा में कहते फिरते थे कि नरेन्द्र मोदी चोर है। इस झूठे आरोप को लेकर राहुल गांधी को सुप्रीम कोर्ट में सदेह उपस्थित होकर माफी मांगनी पड़ी थी। आज यही काम गांधी परिवार के स्टार चमचेबाज पंजाब के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी, पंजाब कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू, पंजाब सरकार के गृह मंत्री सुखजिंदर सिंह रंधावा, कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव व प्रमुख राष्ट्रीय प्रवक्ता रणदीप सिंह

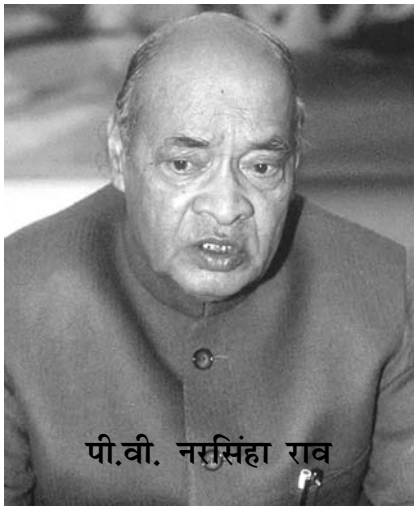
पी.वी. नरसिंहा राव

सूरजेवाला आदि कर रहे हैं। उपरोक्त सभी कांग्रेसजनों का कहना है कि प्रधानमंत्री के फिरोजपुर सभा के लिए 70 हजार कुर्सियां लगायी गयी थी, लेकिन 700 लोग ही आये, क्योंकि कोई उन्हें सुनना नहीं चाहता था। इसलिए प्रधानमंत्री ने सुरक्षा में चूक का बहाना बनाकर रैली रद्द कर दी। अर्थात् ड्रामा कर रैली रद्द कर दी। इनमें से किसी ने कहा कि पंजाब में नरेन्द्र मोदी को कोई नहीं सुनना चाहता है, कोई कहते हैं कि पंजाब में राष्ट्रपति शासन लागू कर पंजाब सरकार को सत्ता से बेदखल करना चाहते हैं। कोई कहता है कि साल भर से अधिक समय तक किसानों को बिल्कुल ही असुरक्षित अवस्था में रखा गया और फ्लाईओवर पर 15 मिनट में ही नरेन्द्र मोदी की हालत बहुत खराब हो गयी। लेकिन उक्त दोनो परिस्थितियों में आकाश-पाताल का अंतर है। दिल्ली के बॉर्डर पर आंदोलनकारी किसान बिल्कुल सुरक्षित थे, जबकि फ्लाईओवर पर प्रधानमंत्री का काफिला बिल्कुल असुरक्षित था। मैं सोनिया गांधी और राहुल गांधी के सिपहसलारों से पूछता हूं कि रास्ता पूरी तरह से जाम कर दिये जाने और उस दौरान प्रदर्शनकारियों द्वारा लाउडस्पीकर पर लगातार घोषणा करते रहने से की प्रधानमंत्री को आगे जाने नहीं देंगे, चाहे इसके लिए गोलियां ही क्यों न खानी पड़े तो ऐसे में प्रधानमंत्री रैली को संबोधित करने के लिए कैसे जा सकते थे। वह पहले ही तीन तरफ से प्रदर्शनकारियों द्वारा घेर लिये गये थे और यदि चौथी तरफ से भी घेर लिये जाते तो फ्लाईओवर से कैसे निकल सकते थे? अगर प्रधानमंत्री सब ओर से घेर लिये जाते तो क्या वह जिंदा रह पाते?●

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट www.psfsm.in

भारतीय संस्कृति के गौरव का प्रतीक है काशी विश्वनाथ धाम

● **ललन कुमार प्रसाद**

वर्ष 2014 में लोकसभा चुनाव के समय जब नरेन्द्र दामोदर दास मोदी काशी आये थे तो उन्होंने कहा था कि मैं आया नहीं हूँ, मुझे माँ गंगा ने बुलाया है तो लोगों ने उनके वक्तव्य का बहुत मजाक उड़ाया था, लेकिन आज काशी का निखरा हुआ भव्य स्वरूप को देखकर ऐसे लोगों की जुबां बंद हो गयी है। बाबा विश्वनाथ मंदिर के दमघोंटू माहौल का विस्तृत व भव्य स्वरूप देना बहुत ही दुष्कर कार्य था। नरेन्द्र मोदी के सामने चुनौतियों का पहाड़ था, लेकिन जिसके सर पर बाबा विश्वानाथ का बरदहस्त हो, वह क्या नहीं कर सकता है? वही बरदहस्त आज प्रधानमंत्री मोदी पर स्पष्ट नजर आ रहा है। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा काशी विश्वनाथ कॉरीडोर का लोकापर्ण इस भूमि की सदियों पुरानी आध्यात्मिक, शैक्षिक और रचनात्मक विरासत को पुन: जीवांत करने का एक विनम्र प्रयास है। काशी विश्वनाथ मंदिर परिसर का पुनर्निमाण बर्बरता पर सभ्यता की प्रधानता, ज्ञान के केन्द्र की पुनर्स्थापना और क्रूरता के स्थान पर श्रद्धा का भाव जागृत होने का भी ठोस प्रतीक है। यह देश को निर्णायक दिशा देगा और समृद्धि प्रधान कर उज्जवल भविष्य की ओर ले जायेगा। काशी विश्वनाथ धाम का नव निर्मित भव्य व खूबसूरत परिसर साक्षी है हमारे सामर्थ्य का, हमारे कर्तव्य का। अगर सोच लिया जाये, ठान लिया जाये तो कुछ भी असंभव नहीं है। हमारे पूर्व राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने ठीक ही कहा है-

'खम ठोक ठेलता है जब नर,
पर्वत के जाते पांव उखर।
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है॥'

इतिहास का निमार्ण करने वाले इतिहास पुरूष होते हैं। ऐसे इतिहास पुरूष सदियों में जन्म लेते हैं। काशी आज इतिहास के ऐसी अभूतपूर्व सृजन का साक्षी है। जो एक हजार साल में नहीं हो पाया उसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने महज साढ़े सात साल में कर दिखाया। उन्होंने 352 साल से मुक्ति की प्रतीक्षा में टकटकी लगाये हुए हिन्दू स्वाभिमान की यानि सनातन स्वाभिमान की पुनर्स्थापना की है। काशी विश्वनाथ धाम उनकी दृढ़ संकल्प शक्ति कस मिशाल है।

☆ **अत्यंत महिमा मंडित है काशी की संस्कृति** :- काशी विश्वनाथ कॉरीडोर के लोकापर्ण के समय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि यहां एक ही सरकार है, जिसके हांथों में डमरू है। अर्थात् यहां महादेव की सरकार है। यहां सब महादेव की इच्छा से होता है। जो कुछ भी हुआ है, महादेव ने किया है।

काशी में जहां गोमुख से निकलकर सैकड़ों मीटर चलकर पतित पावनी गंगा प्रवेश करती हैं तो वह अपनी धारा बदलकर उत्तरवाहिनी होकर भगवान भोले शंकर का पांव पखारने लगती हैं। इसीलिए तो अर्ध-चंद्राकार गंगा की घाट पर बसी काशी को सारी दुनियां से न्यारी नगरी कहा गया है। हमारे धर्म शास्त्र और पुराण बताते हैं कि माँ गंगा और भगवान शिव के बीच अटूट रिश्ता है। यहां गंगा अपने सम्पूर्ण वैभव के साथ युगों-युगों से बहती चली आ रही हैं। माँ गंगा के तट से बाबा विश्वनाथ दिखाई देते हैं और बाब विश्वनाथ के द्वार से माँ गंगा। अब शिव की जटाओं में उलछी मणिकर्णिका घाट की गंगा को अपने आराध्य का गलियारा मिल गया है। बाबा विश्वनाथ

से गंगा के सीधे जुड़ाव के लिए एक पाइप लाइन बिछायी गयी है। इस पाइप लाइन से गंगा का जल बाबा विश्वनाथ के गर्भगृह तक पहुंच रहा है, जबकि दूसरी पाइप लाइन से गर्भगृह में महादेव पर चढ़ाने के बाद दूध और गंगाजल वापस में गंगा में समाहित हो रहा है। माँ गंगा भारतीय संस्कृति की जीवित स्मृति हैं जो युगों-युगों से भौतिक जीवन को संभालने के साथ-साथ आध्यात्मिक जीवन को भी रससिद्ध करती आ रही हैं। माँ गंगा भारत की सनातक संस्कृति की जीवांतता का अविरल प्रवाह हैं। माँ गंगा प्रतीक है शुभ्रता का, पवित्रता का, उष्मा का, स्वास्थ्य और जनकल्याण का। माँ गंगा दु:ख और पीड़ा में सांत्वना देने का काम करती हैं। पतित पावनी गंगा मृत्युलोक में जीवनदायिनी हैं। इस क्षेत्र में मृत्यु होने पर मुक्ति निश्चित है, इसमें कोई संशय नहीं है। इसलिए देश के कोने-कोने से लोग मुक्ति की खोज में काशी की ओर स्वत: खिंचे चले आते हैं। यह संत रविदास की जन्मभूमि और संत कबीर की कर्मभूमि भी है। यही से कुछ दूरी पर स्थित सारनाथ बौद्धों का आध्यात्मिक धार्मिक केन्द्र है। इन सब का संयोग काशी के पुराने गौरव से परिचीत कराता है। भगवान शिव के गोपनीय त्रिशूल पर टिकी इसी काशी नगरी में महर्षी वेद व्यास ने चारों वेदों का उपदेश सबसे पहले दिया था। यहां मोक्ष प्रदान करने वाली सातों नगरी है। काशी को द्वादश आदित्यों और पांचों तीर्थों वाली नगरी मानी गई है। काशी का सनातक धर्म से गहन रिश्ता है, जो जीवन के सत्य को अंगीकार करता है। इसे दुनियां के सबसे प्राचीन नगरों में से एक ऐसा प्राचीन नगर माना जाता है, जो सदियों से लोगों का निवास स्थान रहा है। हिन्दी-संस्कृत के अलावा अंग्रेजी, उर्दू, अरबी और फारसी तक के कवियों ने इस नगर की महिमा का बखान किया है। प्राचीना और निरंतरता का अद्‌भुत मिश्रण काशी पूरी मानवता का अनमोल धरोहर है।

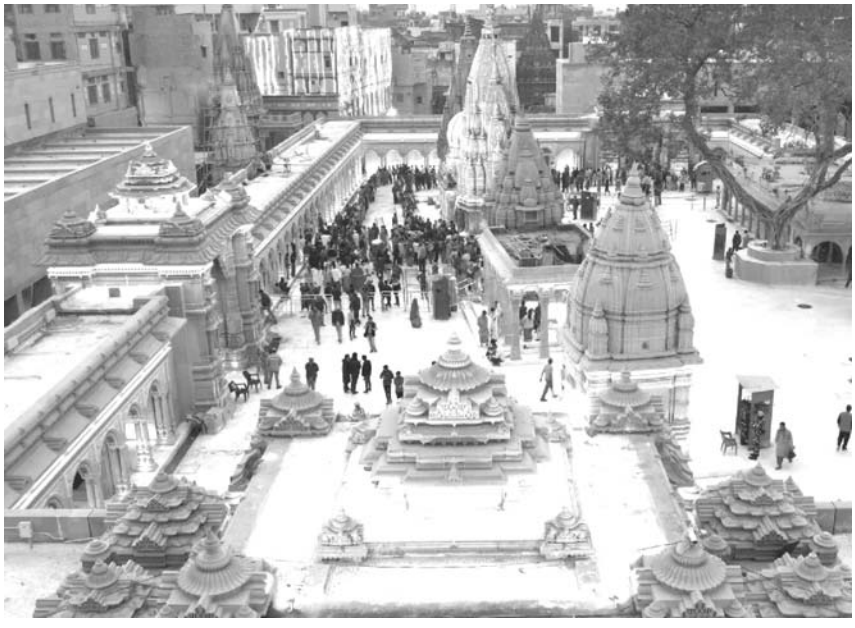

काल के साथ अठखेलियां करता यह नगर धर्म, शिक्षा, संगीत, साहित्य सहित संस्कृति और सभ्यता के हर पक्ष में अपनी पहचान रखता है। काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग की महिमा अपरंपार है। इसलिए इसके दर्शन की लालसा लिये देश के कोने-कोने से लोग, बाबा विश्वनाथ के हजारों अधारक यहां नित्य पहुंचते रहते हैं। नवनिर्मित काशी विश्वनाथ धाम के निर्माण के साथ इस पुण्य स्थल की गरिमा और बढ़ेगी तथा सांस्कृतिक एकता को भी बल मिलेगा। ऐसे काशी के असली स्वरूप को पुन: प्राप्त करने से भलां कौन रोक सकता था या कौन रोक सकता है? मनस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की संकल्पित परिकल्पना के अनुसार बाबा विश्वनाथ के आगमन में 352 वर्षों के बाद एक बार फिर अपने असल स्वरूप में विस्तार पा लिया है। काशी विश्वनाथ कॉरोडोर को सुंदर स्वरूप देने के लिए सात विशेष प्रकार के पत्थरों का इस्तेमाल किया गया है। इसमें मकराना का संगमरमर, चुनार का लाल बलुआ पत्थर, कोटा का ग्रेनाइट, बालेश्वर स्टोन और मैडोना स्टोन का मुख्य रूप से इस्तेमाल हुआ है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्रारंभ से ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की इस परिकल्पना को अंजाम तक पहुंचाने के लिए उनके कंधा से कंधा मिलाकर भरपूर साथ देते आ रहे हैं। करीब 900 करोड़ खर्च कर रिकॉर्ड 33 महीने में विस्तारित काशी विश्वनाथ धाम में आने वाले लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ धूप-बरसात में लंबी कतार और घंटों इंतजार से मुक्ति मिल गयी है। भक्त और भगवान के बीच का रास्ता सुगम-सहज हो गया है। इस भव्य सुंदर धाम में एक समय में लगभग 50 हजार श्रद्धालु प्रवेश कर सकेंगे, जबकि पहले काशी विश्वनाथ धाम में महज 15-20 श्रद्धालु ही बाबा विश्वनाथ का पूजन कर पाते थे। अब धक्का-मुक्की के बजाये यहां आने वाले हर श्रद्धालु चहुओर खुला-खुला आकाश

पायेंगे।

पहले काशी विश्वनाथ मंदिर तीन हजार वर्ग फीट क्षेत्र में सिमटा हुआ था। 8 मार्च 2018 को नरेन्द्र मोदी द्वारा मंदिर का जब शिलान्यास किया गया था, तब ज्यादातर लोगों को इसका आभाष भी नहीं हुआ था कि निकट भविष्य में शीघ्र ही हम काशी विश्वनाथ मंदिर सहित पूरे क्षेत्र को ऐसे भव्य व आकर्षक स्वरूप में देख पायेंगे, क्योंकि आसानी से ऐसी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। आज काशी विश्वनाथ धाम का परिसर 5 लाख 27 हजार 730 वर्गफीट क्षेत्र में विस्तार पा लिया है। किसी मंदिर के क्षेत्र को 170 गुना विस्तार देना और वह भी भारत जैसे देश में कितना दुष्कर कार्य है, इसकी कल्पना आप खुद ही कर सकते हैं। ऐसा इसलिए कि वर्ष 1947 में मिली आजादी के बाद से ही 67 वर्षों तक, बीच में 1998 से लेकर 2003 तक, को छोड़कर देश में कांग्रस का शासन था, जो सत्ता में बने रहने के लिए वोट के खातिर धर्मनिरपेक्षता के नाम पर मुस्लिमों के तुष्टिकरण हेतु हिन्दुस्तान में हिन्दुओं को प्रताड़ित करती रही तथा देश को तोड़ने में जुटी रही। मसलन, संविधान में धारा 370 और 35 ए का समावेा किया जाना कांग्रेस पार्टी की देन है, जिसे नरेन्द्र मोदी सरकार ने निरस्त कर दिया। कांग्रेस, नेशनल कांफ्रेंस, कम्युनिष्ट, पीडीपी आदि पार्टियां आज भी संविधान में धारा 370 और 35 ए के निरस्त किये जाने का विरोध कर रही हैं। भारत की कम्युनिस्ट पाटियां शुरू से ही देश विरोधी गतिविधियां में जुटी रही हैं। मसलन, 1962 में भारत-चीन युद्ध के दौरान देश की कम्युनिस्ट पाटियाँ भारत के बजाय चीन का साथ दिया था। बाबा विश्वनाथ के दर्शन हेतु शिवभक्तों का इंतजार और परेशानी अब दूर हो गयी है। टेढ़ी-मेढ़ी गलियों के जाल तथा आड़े-तिरछे भवनों के जंजाल से मुक्त देवादिदेव महादेव के आंगन का ऐसा विस्तार देखकर हम सब दांतों तले उंगलियां दबाने को विवश हो गये हैं। देश-विदेश में रह रहे भारतीय संस्कृति, परंपरा और सभ्यता के अनुगामी श्रद्धालु आज प्रफुल्लित हैं। अब देश-विदेश से आये धर्मानुरागी जिज्ञासु और ज्ञान-पिपासु एक ही स्थान से समूचे काशी की दिव्य, भव्य और आकर्षक शोभा को निखार पायेंगे। नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद विकास की गंगा पूरे देश में बही, लेकिन काशी में विशेष रूप से बही। वास्तव में जितना काम वाराणसी में पिछले सात सालों में हुआ, उतना नरेन्द्र मोदी के पहले के सरकारों के 67 साल में नहीं हुआ।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी वर्ष 1903 में पहली बार जब काशी में बाबा विश्वनाथ का दर्शन करने गये थे तो काशी की तंग गलियों और गंदगी को लेकर खिन्नता जतायी थी। उन्होंने कहा था कि जिस स्थान पर ध्यान और शांति के माहौल की उम्मीद करते थे, वह वहां बिल्कुल ही नदारद थी। काशी विश्वनाथ धाम का जीर्णोद्धार कर नरेन्द्र मोदी ने महात्मा गांधी के मन में उभरी पीड़ा को दूर कर दिया।

★ कितनी गौरवशाली रही होगी प्राचीन काशी नगरी :- प्राचीन काशी नगरी कितनी शानदार व गौरवशाली रही होगी, इस बात की पुष्टि दुनियांभर के संग्राहलयों और निजी किन्तु प्रबुद्ध संग्रहकर्ताओं के द्वारा संग्रह की गई उत्कृष्ट व दुर्लभ पुरावशेषों से हो जाती है, जो आक्रांताओं द्वारा इस नगरी के विध्वंश के दौरान अलग-अलग काल में प्राप्त हुई है।

★ कब का निर्मित है काशी विश्वनाथ मंदिर :- काशी विश्वनाथ कॉरीडोर परियोजना के तहत 320 भवनों के ध्वस्तीकरण के दौरान उनके बीच 43 मंदिर मिले हैं। इसमें धूतपापेश्वर महादेव, मानदंतेश्वर महादेव, त्रिसंघेश्वर महादेव, ज्ञानेश्वर महादेव, नीलकंठेश्वर महादेव, अमृतेश्वर महादेव, गणाध्यक्ष विनायक, इच्छापूर्ति गणेश, दुर्मुख विनायक, सुमुख विनायक, प्रमोद विनायक, त्रिमूतेश्वर, हनुमान मंदिर, एकादश रूद्र आदि मंदिर शामिल हैं। इन मंदिरों की अद्भुत वास्तुकला और मणिकर्णिका घाट स्थित कई मंदिरों पर बनी नक्कासेदार कलाकृतियां देखकर अनुमान लगाया जा रहा है कि ये मंदिर गुप्त काल (319 ई.-540 ई.) के बने हो सकते हैं। लेकिन मंदिर के निर्माण की वास्तविक काल की जानकारी कॉर्बन डेटिंग द्वारा लगायी जा सकती है। इसके लिए भवनों के ध्रवतीकरण के दौरान प्राप्त पुरावशेषों की कॉर्बन डेटिंग करानी होगी।

★ काशी का कायाकल्प :- काशी विश्वनाथ कॉरोडोर में 24 भवन, तीन यात्री सुविधा केन्द्र, चार बड़े-बड़े प्रवेश द्वार, मुमुक्षु भवन, सीटी म्युजियम, वाराणसी गैलरी आदि बनाये गये हैं। गंगा घाट और काशी विश्वनाथ कॉरीडोर के बीच एक भव्य मंदिर चौक बनाया गया है, जो 30 हैवी लाइट से जगमग है। ये लाइट उत्तर से दक्षिण की ओर पांच कतारों में लगायी गयी है। प्रत्येक कतार में छः हैवी लाइट लगायी गयी है। रौशनी से दमकते मंदिर के स्वर्ण शीखर को देखकर श्रद्धालु निहाल हो रहे हैं। काशी विश्वनाथ परिसर में संगमरमर के 22 स्तंभ के रूप में शिलालेख स्थापित किये गये हैं, जिनपर भगवान शंकर से

जुड़ी कथाएं और स्तुतियां लिखी हुई है। महारानी अहिल्याबाई होलकर, संत आदि शंकराचार्य और भारत माता की भव्य प्रतिमाएं काशी विश्वनाथ कॉरीडोर में स्थापित की गई है। काशी विश्वनाथ परिसर के मुख्य हिस्से के चारों तरफ नक्काशीदार खंभे, मेहराब और महिन जालियां लगायी गयी है। नक्काशीदार खंभों के पीछे दीवार पर साहित्य और पाषाण शिल्प का अनूठा संगम दिखायी देता है। गैलरी यानि कला दीर्घा के दक्षिणी हिस्से में संगमरमर पर उकेरी गई श्री डी आकृतियों में बाबा विश्वनाथ और माँ गंगा से जुड़े प्रसंगों को दर्शाया गया है। बुर्जुगों और दिव्यांगजनों की सुविधा के लिए विश्वनाथ मंदिर चौक स्थित आकर्षक इमारत पर जाने के लिए लिफ्ट लगायी गयी है। काशी विश्वनाथ ट्रस्ट ने यहां पर एक रसोई घर बनवाया है। इसमें बीस हजार श्रद्धालु एक साथ भोजन कर सकते हैं। यह रसोई घर चालू भी हो गई है। विश्वनाथ कॉरीडोर में वैदिक केन्द्र और मल्टीपरपस हॉल बनवाये गये हैं। काशी विश्वनाथ के सिगरा स्थित स्थल पर शिवलिंग की आकृति में रूद्राक्ष नामक भव्य अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर बनाया गया है। इस सेंटर में भारतीय संस्कृति की विविधताओं पर केन्द्रीत छायाचीत्र की प्रदर्शनी लगायी गयी है। सेंटर के बाहरी हिस्से में 108 सांकेतिक रूद्राक्ष लगे हैं। सेंटर में एक साथ 1200 लोगों के बैठने की व्यवस्था है। कॉरीडोर यानि परिसर में दिव्यांगजनों की सुविधा का विशेष ध्यान रखा गया है। करीब दस एकड़ में बना पंडित दीनदयाल उपाध्यय स्मृति उपवन का वैदिक उद्यान, शोद्य केन्द्र और सांस्कृतिक ऑडिटोरियम एक आकर्षक पर्यटन स्थल के रूप में उभरा है, क्योंकि यह स्थल पर्यटकों को बहुत पसंद आ रहा है।

काशी के गंगा घाट से पश्चिम बंगाल की हल्दिया तक देश के पहले अंतर्राज्यीय जलमार्ग के लिए गंगा घाट के रामनगर के राहुलपुर में 208 करोड़ की लागत से मल्टी मॉडल टर्मिनल

बनायी गयी है। बाहर से आने वाले श्रद्धालु गंगा में कॉरीडोर की गलियों के अलावा नाव से भी जाना चाहे तो जा सकते हैं। गंगा के तट पर कुछ साल पहले अलखनंदा क्रूज यानि जलयान की संचालन शुरू

किया गया था। बाद में केरल के कोच्चि शिपयार्ड से विवेकानन्द और मानेकशॉ जलयान लाकर चलाया जाने लगा। अब तीनों जलयान पर्यटन के लिहाज से बहुत ही महत्वपूर्ण साबित हो रहे हैं। दरअसल गंगा में तैरते जलयान से काशी विश्वनाथ की भव्य और मनोहर छटा को देखने का आनंद ही कुछ और है। गंगा सेवक नाविक मुन्ना सहनी का कहना है कि लगभग 20 हजार नाविकों के परिवार को आज नरेन्द्र मोदी ने खुद को जोड़ लिया है। जलमार्ग नाविकों के आय का बहुत ही अच्छा साधन साबित होरहा है।

★ **चाक-चौबंद है काशी विश्वनाथ धाम की सुरक्षा व्यवस्था :-** धाम के परिसर के चप्पे-चप्पे पर सशस्त्र जवानों की तैनाती के साथ हाइटेक सुरक्षा उपकरणों और सीसीटीवी कैमरों से निगाहबानी की व्यवस्था की गई है। तीन शिफ्टों में चौबीसों घंटे सशस्त्र जवान तैनात रहते हैं। काशी विश्वनाथ की भितरी सुरक्षा

हेतु 21 प्वाइंट्स और बाहरी सुरक्षा हेतु 102 प्वाइंट्स है। हर प्वाइंट पर एक सेक्शन हथियारबंद टुकड़ी मौजूद रहती है। सभी प्वाइंट्स को अतिरिक्त कैमरे लगाकर कंट्रोल रूम से जोड़ दिया गया है। काशी विश्वनाथ धाम के सभी एंट्री प्वाइंट पर मेटल डिटेक्टर, हैंडहोल्ड मेटल डिटेक्टर, महिला बूथ और एक्स-रे स्कैनर सहित अन्य आवश्यक उपकरण लगाये गये हैं।

☆ आगजनी की घटना से सुरक्षा की हाइटेक व्यवस्था :- काशी विश्वनाथ धाम में आग बुझाने की हाइटेक व्यवस्था की गई है। परिस में 100 से भी अधिक स्मोक डिटेक्टर अलग-अलग जगहों पर लगाये गये हैं ताकि परिसर में कही भी धूआं उठते ही कंट्रोल रूमें लगा अलार्म बजने लगे। कंट्रोल रूम में लगे सीसीटीवी कैमरे से उसी समय पता चल जायेगा, जब आग बिल्कुल ही प्रारंभिक अवस्था में होगी। परिसर में 30-30 मीटर की दूरी पर कुल 87 हाइड्रेंट लगाये गये हैं और उतने ही हौज बॉक्स बनाये गये हैं। परिसर में दो लाख लीटर क्षमता वाले दो स्टेटिक वाटर स्टोरेज टैंक बनाये गये हैं। फायर स्टेशन भवन की छत पर 20 हजार लीटर क्षमता का टेरेस टैंक भी बनाया गया है, ताकि किसी कारणवश वाटर स्टोरेज टैंक काम न करे तो आपात स्थित में टेरेस टैंक की मदद ली जा सके। फायर स्टेशन में डीजल से चलने वाला जेनरेटर भी है, ताकि आपात अवस्था में आग बुझाने हेतु बिजली नहीं रहने पर भी वाटर पंप चलाया जा सके। ऐसा इसलिए कि आग लगने पर बिजली की आपूर्ति रोक दी जाती है ताकि फायरमैन बगैर किसी भय के आग बुझा सके।

☆ बनारस का कायाकल्प :- जो काम तीन दशकों में नहीं हो सका, वह काम महज पांच वर्षों में करीब 90% पूरा हो गय। देखते-देखते काशी सहित बनारस के चार सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट बनकर तैयार हो गये और चालू भी हो गये हैं। नतीजा, गंगा में मलजल का गिरना बहुत कम हो गया है। उम्मीद है कि 2022 में बचे दो सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट का काम पूरा हो जायेगा और वह चालू भी हो जायेंगे, तब गंगा में एक बूंद भी मलजल बगैर उपचार के नहीं गिरेगा। पहले बिजली के ट्रांसमिशन यानि संचरण हेतु पूरे बनारस की

सड़कों तथा गलियों में बिजली के खंभों का जाल बिछा रहता था, लेकिन अब वहां बिजली के ट्रांसमिशन वाले तार अंडर ग्राउंड कर दिये गये हैं। इसलिए अब पूरा बनारस बिजली के ट्रांसमिशन के दौरान होने वाली दुर्घटनाओं से मुक्त हो गयी है। अब बनारस की सड़कें और गलियां भी गड्ढ़ा मुक्त हो गई हैं। उपर्युक्त दोनो कार्यों के पूरा होने से बनारस की सुंदरता निखर गयी है।

नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा अभियान के तहत पूरे बनारस के कुंडो और तालाबों का सुंदरीकरण कराया गया है। सुंदरीकरण किये गये कुंड व तालाब हैं-मंदाकिनी कुंड, पितर कुंड, बकरिया कुंड, लक्ष्मी कुंड, नदेसर तालाब, दुधिया तालाब, काल्हा तालाब, करौंदी तालाब, मछोदरी तालाब पहड़िया तालाब, सोना तालाब, लहरतारा स्थित कबीर प्राकट्य स्थल तालाब, रेवा तालाब, पिशाचमोचन, सोनभद्र, आशापुर, चकरा आदि का कायाकल्प हो गया है।

✯ अद्‌भुत था काशी विश्वनाथ कॉरीडोर लोकापर्ण समारोह :- वाकई अद्‌भुत था 13 दिसम्बर 2021 का दिन, जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी काशी विश्वनाथ कॉरीडोर का लोकापर्ण यानि उद्‌घाटन किया। सबसे पहले उन्होंने विशेश्वरगंज स्थित काल भैरव मंदिर पहुंचे। वहां उन्होंने काशी के कोतवाल बाबा भैरवनाथ की विधि-विधान से पूजा-अर्चना की और उनसे बाबा विश्वनाथ के दर्शन तथा पूजन की अनुमति ली। दरअसल, काशी के विश्वनाथ धाम की सुरक्षा की जिम्मेदारी बाबा भैरवनाथ के कंधे पर है। उस दिन काल भैरव मंदिर में दो मुस्लिम युवक मौजूद थे। जब दोनो की गतिविधियों पर सुरक्षाकर्मियों को शक हुआ तो उन दोनो युवकों की जांच की गई तो पाया गया कि दोनो ने ही हिन्दू नाम के फर्जी आधार कार्ड बनवा रखा था। उसी समय दोनो को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। यह कोई पहली घटना नहीं थी। इसके पहले भी मुस्लिम युवक हिन्दू नाम रखकर चंदन-टीका लगाकर मंदिर में नाजायज व घिनौना हरकतें कर चुके हैं। मसलन दिसम्बर 2020 को उत्तर प्रदेश

के मथुरा के नंदगांव स्थित नंद भवन मंदिर में दो मुस्लिम युवकों ने नामाज अदा की और उसकी तस्वीर सोशल मीडिया पर डाल दी। ऐसा 'खुदाई खिदमतगार' संस्था के सदस्य फैजल और उसकी साथी ने किया। जबकि किसी मुस्लिम के द्वारा मंदिर में नामाज अदा करना बिल्कुल ही अक्षम्य अपराध है।

बाबा भैरवनाथ की विधि-विधान से पूजा-अर्चना करने के बाद जब सड़क मार्ग से खिड़किया घाट जा रहे थे, तब लोगों ने नरेन्द्र मोदी पर गुलाब की पंखुड़िया बरसायी। पहले वह रविदास घाट पर संत रविदास की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर और तब खिड़किया घाट से अलकनंदा क्रूज पर सवार होकर ललिता घाटए पहुंचे। वहां उन्होंने गैरिक वस्त्र धारण किया और गले में रूद्राक्ष की माला पहनकर गंगा में कमर भर पानी में डुबकी लगायी, मंत्रोच्चार के साथ भगवान सूर्य को अर्घ दिया और तब बाबा विश्वनाथ की पूजा-अर्चना तथा अभिषेक करने के लिए ललिता घाट से ही रजत कलश में गंगाजल लेकर काशी विश्वनाथ मंदिर पहुंचे तो पूरी काशी नगरी 'हर हर महादेव' के उद्‌घोष से गुंजायमान हो उठा। काशी विश्वनाथ में मंत्रोच्चार के साथ विधि-विधान से पूजा-अर्चना और जलाभिषेक

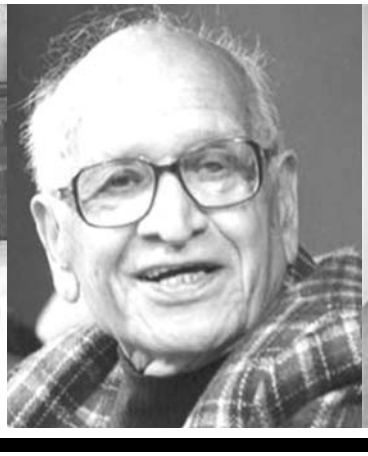
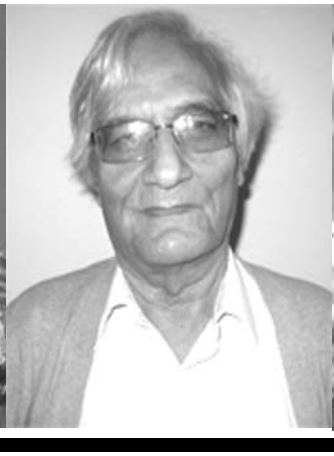

करने के बाद काशी विश्वनाथ कॉरीडोर का लोकार्पण कर महादेव के भक्तों को समर्पित कर दिया। उक्त अवसर पर न केवल काशी बल्कि देश-विदेश का जनमानस खुशी से झूम उठा। दरअसल, वह ऐसा क्षण था जब काशी में इतिहास गढ़ा जा रहा था या यूं कहिए की ऐतिहासिक भूल सुधार किया जा रहा था। आज जिस दिव्य काशी एवं भव्य काशी विश्वनाथ धाम की सृष्टि हुई है, वह प्रधानमंत्री मोदी के मस्तिष्क में पनपा ऐसा विचार था, जिसने इतिहास का काया पलट कर दिया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने धर्म के प्रति अपनी अनूठी भक्ति को साकार करते हुए काशी विश्वनाथ धाम के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय जोड़ दिया है। नरेन्द्र मोदी ने सनातन संस्कृति के केन्द्र को पुनर्जीवित करने का अनूठा काम किया है।

15 अगस्त 1947 को भारत के स्वतंत्र होने और 26 जनवरी 1950 को एक अधिकारिक गणतंत्र के रूप में सामने आने के बाद पहले प्रभासतीर्थ में गुजरात के सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धान, फिर उत्तर प्रदेश के अयोध्या में रामजन्म विवाद का निबटारा एवं राममंदिर के निर्माण की शुरूआत और अब काशी विश्वनाथ कॉरीडोर का लोकार्पण वास्तव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में हमारे संगठित गणराज्य की बहुत बड़ी उपलब्धि है। बात चाहे उत्तर प्रदेश में काशी विश्वनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार का हो या उत्तराखण्ड में केदारनाथ धाम के जीणोद्धार की, ये उपलब्धियां हर हिन्दू का सीना गर्व से फूला देती है, माथा ऊँचा कर देती हैं।

लेकिन बहुत दु:ख की बात है कि बाबर, औरंगजेब आदि जैसे जिन क्रूर और शैतान मुगल बादशाहो ने काशी विश्वनाथ मंदिर सहित हमारे हजारों धार्मिक आस्था के केन्द्रों को ध्वस्त किया, उन्हें आज तक ज्यादातर भारतवासी धिक्कारने के बजाय महिमामंडित करते आय हैं। देश की राजधानी दिल्ली में अखबर रोड, शाहजहां रोड और औरंगजेब रोड से गुजरते हुए हमारे चुने हुए ज्यादातर कांग्रेसी व कम्युनिस्ट गद्दार राजनेताओं को आज तक एक बार भी एहसास नहीं हुआ कि सड़कों की उपर्युक्त नामों ने भारत की आस्था-अस्मिता को धूल-धूसरित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। खासकर, कम्युनिस्ट इतिहासकारों ने मुगल बादशाहों को भारतीय इतिहास का हीरो सिद्ध करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। रोमिला थापर, बिपिन चंद, हरवंश मुखिया, ओम प्रकाश आदि इन कम्युनिस्ट इतिहासकारों को चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए। इन इतिहासकारों का एक ही मकसद है, चाहे जो भी मुस्लिमों का समर्थन इन्हें मिलते रहना चाहिए। इसके लिए चाहे जितना नीचे भी गिरना पड़े, गिरने के लिए तैयार हैं। धर्म-निरपेक्षता (सेक्युलरिज्म) के पाखण्ड के चलते देश के टूटने या गुलाम होने से इन्हें कोई परहेज नहीं है। पटना यूनिवर्सिटी

के इतिहास विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो० डॉ० राम शरण शर्मा के प्रिय शिष्य डॉ० ओम प्रकाश प्रसाद ने 'औरंगजेब' नामक एक किताब लिखा है, जिसे बिहार की राजधानी पटना के अशोक राजपथ के किनारे स्थित खुदाबख्श ओरियंटल लाइब्रेरी ने प्रकाशित किया है। उक्त पुस्तक में उन्होंने बेहद क्रूर, जालिम, शैतान और जुल्मी मुगल बादशाह औरंगजेब को महान साबित करने में कोई कसर नहीं छोड़ा है। उन्होंने लिखा है कि औरंगजेब बहुत ही सहिष्णु, दयालु, उदार तथा सभी धर्मों का अत्यधिक आदर-सम्मान करने वाला व्यक्ति था। मैं उनसे पूछता हूं कि औरंगजेब के बारे में उनके विचार ऐसे हैं तो बर्बर किये कहेंगे? जालिम किसे कहेंगे? हत्यारा किसे कहेंगे? हैवान किसे कहेंगे? उपरोक्त इतिहासकार समाज के निर्माता, देश के निर्माता तो हरगिज नहीं हो सकते। उपरोक्त इतिहासकार, भारतीय इतिहासकारों के नाम पर घिनौना धब्बा के सिवाय और कुछ भी नहीं हैं।

काशी विश्वनाथ कॉरीडोर के लोकापर्ण के बाद अपने 50 मिनट के संबोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि, 'यहां कई संतलत्नों का उदय हुआ और अंत हुआ, लेकिन काशी ने स्वयं को यथावत रखा। आताताियियों ने इस नगरी पर हमले किये, इसे ध्वस्त करने के प्रयास किये और बहुत हद तक नुकसान पहुंचाने में सफल भी हुए। मुगल बादशाह औरंगजेब ने तलवार के बल पर यहां की समृद्ध सभ्यता और संस्कृति को नष्ट करने का भरपूर प्रयास किया, लेकिन इस देश की माटी ही कुछ और है। यहां जब कोई औरंगजेब आता है तो कोई शिवाजी उठ खड़े होते हैं। कोई सालार मसूद गाजी खराब नियत से इधर बढ़ता है तो राजा सुहेलदेव जैसे वीर योद्धा सामने खड़े हो जाते हैं'। आगे नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आज के लोकापर्ण के पहले काशी विश्वनाथ मंदिर का अनेकों बार जीर्णोद्धार हो चुका है। दरअसल, काशी नगरी और काशी विश्वनाथ मंदिर को अतीत में कई बार ध्वस्त किया गया और जीर्णोद्धार हुआ। प्रारंभ में इस मंदिर को घुरित तुर्क सुल्तान कुतुब-उद-दीन ऐवक ने इसे नष्ट किया। बाद में उत्तर में मुगल बादशाहों ने तो दक्षिण में टीपू सुल्तान ने हिन्दुओं के धार्मिक स्थलों को चोट पहुंचाते रहे और हिन्दुओं को प्रताड़ित करते रहे। पहली बार गुजरात के एक व्यापारी ने काशी विश्वनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार कराया था। दूसरी बार वर्ष 1777 से 1780 के बीच इंदौर की महारानी अहिल्याबाई अहोरकर ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार करायी थी। माता अहिल्याबाई की जन्मभूमि महाराष्ट्र थी, लेकिन कर्मभूमि इंदौर माहेश्वर थी। तीसरी बार या आखिरी बार पंजाब के महाराजा रंजीत सिंह इस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाये थे। उन्होंने ही इस मंदिर के शिखर को 23 मन यानि 862.5 किलोग्राम सोना से मढ़वाया था, जो आज भी दिखता है। आगे नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आज का भारत मंदिरों के जीर्णोद्धार के साथ जरूरतमंदों के लिए पक्के मकान भी बनवा रहा है। अर्थात् विरासत के संरक्षण के साथ विकास भी।

☆ ऐसा पहली बार हुआ :-

☞ काशी विश्वनाथ मंदिर के अब तक के इतिहास में सिर्फ मंदिर का जीर्णोद्धार तो अनेक बार हुआ है परन्तु सम्पूर्ण काशी विश्वनाथ धाम का जीर्णोद्धार पहली बार देश के यशस्वी प्रधानमंत्री ने किया, जो अभूतपूर्व है।

☞ इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ कि करीब एक हजार साल के अन्याय के बगैर किसी लूटपाट, मारकाट, बदले की भावना, प्रताड़ित करने के इरादे और विनाश के किसी मंदिर की पहली जैसी स्थिति प्राप्त की गई है। इसे केवल निर्माण, सृजन और विकास के माध्यम से ही हासिल की गयी है।

☞ काशी विश्वनाथ कॉरीडोर के लोकापर्ण के बाद नरेन्द्र मोदी ने काशी विश्वनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार में शामिल मजदूरों पर फूल बरसाकर उन्हें सम्मानित किया। मजदूरों ने भी हांथ जोड़कर प्रधानमंत्री का अभिवादन किया। प्रधानमंत्री उनके बीच उनके साथ बैठकर तस्वीरें खिंचवाई और पंगत में बैठकर भोजन किया। किसी प्रधानमंत्री ने ऐसा पहली बार किया।

☞ पहली बार किसी प्रधानमंत्री ने धार्मिक स्थल का लोकर्पण किया।

☞ पहली बार किसी प्रधानमंत्री ने गैरिक वस्त्र पहनकर और गले में रूद्राक्ष का माला डालकर गंगा घाट के किनारे कमर भर पानी में डूबकी लगायी, मंत्रोच्चार के साथ भगवान सूर्य को अर्घ दिया और चांदी के कलश में गंगाजल भरा और तब बाबा विश्वनाथ के मंदिर के गर्भगृह में जाकर पूजा-अर्चना की, जलाभिषेक तथा आरती की।

★ अत्यधिक दुष्कर कार्य था काशीधाम का जीर्णोद्धार :- जीर्णोद्धार के बाद गंगा तट से बाबा विश्वनाथ मंदिर के गर्भगृह तक बने काशी विश्वनाथ धाम कॉरीडोर का नवनिर्मित स्वरूप 352 साल बाद दुनियां के सामने आया है। इतिहासकारों के अनुसार काशी विश्वनाथ धाम पर वर्ष 1194 से लेकर 1669 तक कई बार हमले हुए। इसका विध्वंश अनेक बार किया गया। स्वभाविक ही मंदिर के साथ आसपास के भवनों का भी विध्वंश हुआ होगा। काशी विश्वनाथ कॉरीडोर के मार्ग में पड़ने वाले 320 भवनों को हटाना एक बहुत बड़ी चुनौती थी, क्योंकि क्षेत्रीय विरोध, धरना प्रदर्शन, आंदोलन, अनाधिकृत कब्जेदारों से लेकर स्थानीय जनमानस तक में उपयुक्त निबटारे के साथ धाम का निर्माण एक बहुत बड़ी चुनौती थी। बावजूद इसके सभी 300 भवनों को तोड़ा गया। भवनों को तोड़ने के बाद 43 अद्भुत प्राचीन मंदिर सामने आये, जिन्हें वर्षों से किन्ही ने भी नहीं देखा था। इन मंदिरों को जीर्णोद्धार के दौरान संरक्षित भी किया गया। अद्भुत वास्तुकला की अनमोल पुरातात्विक धरोहर ये प्राचीन मंदिर आज माँ गंगा से बाबा विश्वनाथ मंदिर की ओर जाते भक्तों एवं पर्यटकों के लिए आकर्षण के केन्द्र बन गये हैं। तोड़े गये भवनों को बाजार भाव से ज्यादा कीमत करीब 400 करोड़ रूपये देकर खरीदे गये। 1400 मकान मालिकों, किरायदारों और दुकानदारों का सौहार्दपूर्ण ढ़ंग से पुनर्वास कराया गया और उन्हें आजीविका का वैकल्पिक साधन उपलब्ध कराया गया। काशी विश्वनाथ मंदिर को माँ गंगा से जोड़ने के साथ पूरी काशी नगरी को आध्यात्मिक-सांस्कृतिक-ऐतिहासिक विशेषताओं के अनुरूप नया कलेवर दिया गया, जो बहुत ही दुष्कर कार्य था। यहां भारत के उत्थान के लिए नया अध्याय लिखा गया है। काशी विश्वनाथ धाम के जीर्णोद्धार के बहाने काशी में इतिहास की एक ऐसी स्वर्ण मंजूषा निर्मित की गई है, जो सहस्त्राब्दियों तक अपनी ऊर्जा से धर्म, संस्कृति के इस धाम को रौशन करती रहेगी। ●

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट:www.psfsm.in

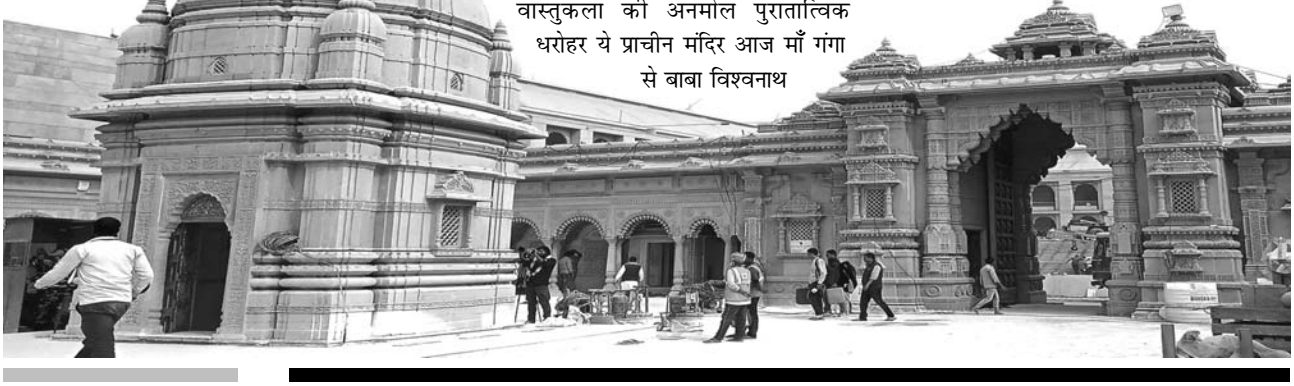

यूपी विधान सभा में घटता-बढ़ता रहा है मुस्लिम प्रतिनिधित्व

● **अजय कुमार**

उत्तर प्रदेश में कोई भी चुनाव हो मुस्लिम वोटर हमेशा एक बड़ा फैक्टर रहते हैं.यूपी की कुल आबादी में करीब 20 प्रतिशत हिस्सा मुसलमानों का बताया जाता है. (हालांकि कभी अलग से प्रदेश में मुसलमानों की कितनी आबादी है इसकी गणना नहीं की गई है.)बीस फीसदी मुसलमान,कोई इतना बड़ा संख्या बल नहीं है कि यह किसी प्रत्याशी की हार-जीत में अहम किरदार निभा सके,लेकिन मुस्लिम वोटर जिस तरह से एकजुट होकर किसी राजनैतिक दल के प्रत्याशी को हराने या फिर जिताने के लिए वोटिंग करते हैं,वह कई बार निर्णायक साबित होता है.मुस्लिम वोटरों के बारे में एक और आम धारणा यह है कि वह भारतीय जनता पार्टी को कभी जीतते हुए नहीं देखना चाहते हैं, इसी लिए जो प्रत्याशी या दल भाजपा से टक्कर लेता नजर आता है,मुसलमान उसी के पक्ष में एक मुश्त वोटिंग कर देते हैं.इसी लिए जब तक मुसलमान वोटर कांग्रेस के साथ खड़ा रहा तब तक यूपी में कांग्रेस की सरकार सहज रूप से बन जाती थी,लेकिन 1992 में अयोध्या में जिस तरह से कथित बाबरी मस्जिद को कारसेवकों ने ध्वस्त कर दिया,उसके बाद से मुस्लिमों का विश्वास कांग्रेस से खिसक गया. क्योंकि 06 दिसंबर 1992 को जब अयोध्या में ढांचा गिरा तब यूपी में भले बीजेपी की सरकार थी और कल्याण सिंह उसके मुख्यमंत्री थे,लेकिन केन्द्र में कांग्रेस की सरकार थी और नरसिम्हा राव प्रधानमंत्री थे. अयोध्या में कारसेवक विवादित ढांचे को गिराने की हुंकार भर रहे थे,लेकिन राव साहब वहां कोई कार्रवाई करने या फिर यूपी सरकार को कोई नसीहत देने की बजाय पूजा-पाठ करते रहे थे.उनकी पूजा तब खत्म हुई जब कारेसेवकों ने विवादित ढांचे को पूरी तरह से नेस्तानाबूत नहीं कर दिया.इसका हश्र यह हुआ कि मुसलमानों ने कांग्रेस का साथ छोड़ दिया और इसी के साथ यूपी में कांग्रेस के बुरे दिन शुरू हो गए जो अभी तक जारी हैं.

यूपी में मुस्लिम वोट बैंक कांग्रेस से खिसका तो समाजवादी पार्टी ने मुस्लिम वोटरों को लपकने में समय नहीं लगाया, वैसे भी 1990 में जब कारसेवक विवादित ढांचा गिराने अयोध्या पहुंचे थे तो तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने कारसेवकों पर गोलियां चलाकर ढांचे

को कथित रूप से शहीद होने से बचा लिया था. इसी के बाद से मुलायम मुसलमानों के नए रहनुमा बनते दिखने लगे थे और समय के साथ मुसलमानों का विश्वास मुलायम में बढ़ता ही गया. 2007 के विधान सभा चुनाव जरूर इसका अपवाद थे,जब मुस्लिम वोटरों ने बसपा की तरफ रूख कर लिया था और बीएसपी की पूर्ण बहुमत की सरकार भी बनी थी. यह वह दौर था,जब सपा प्रमुख मुलायम सिंह यादव ने बीजेपी से बाहर कर दिए गए पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह को आगरा के सपा सम्मेलन में अपने साथ सपा की टोपी और गमझा पहनाकर जोड़ लिया था. इससे नाराज मुस्लिम वोटरों ने खुलकर बसपा के पक्ष में मतदान करके मायावती को मुख्यमंत्री बनवा दिया था. उस समय समाजवादी पार्टी में अमर सिंह अब दिवंगत की चलती थी,मुलायम अमर सिंह के बिना कोई बड़ा फैसला नहीं लेते थे,इसी वजह से आजम खान तक को बाहर को पार्टी से जाना पड़ गया था,यह और बात है कि बाद में अमर सिंह के समाजवादी पार्टी से रिश्ते काफी खराब हो गए थे,खासकर अखिलेश यादव ने अमर सिंह को काफी अनदेखा ही नहीं अपशब्द भी कहे थे.

खैर, बात यूपी में मुस्लिम विधायकों के संख्याबल की कि जाए तो उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव में 2012 में सबसे अधिक 68 मुस्लिम विधायक चुने गए थे, इससे पहले 2002 में 64, 2007 में 54,1977 में 49,1996 में 38,1957 में 37 मुस्लिम विधायक चुने गए थे. मुस्लिम वोटर किसी की हार जीत का फैसला कर पाएं,लेकिन देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश मे 2017 में मुस्लिम विधायकों का ग्राफ काफी गिर गया और केवल 23 मुस्लिम विधायक चुने गए.इससे पूर्व 1967 के विधान सभा चुनाव में 23 मुस्लिम विधायक चुने गए थे,वहीं इससे भी बुरा हाल 1991 में मुसलमान प्रतिनिधित्व का हुआ था और मात्र 17 विधायक जीते थे. बात 2017 के विधानसभा चुनाव में मुस्लिम प्रतिनिधितत्व घटने की बात कि जाए तो ऐसा इस लिये हुआ क्योंकि बीजेपी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 300 से अधिक सीटें जीती थीं. सपा और बसपा की सबसे शर्मनाक हार हुई थी, इसी लिए यूपी विधानसभा में मुस्लिम प्रतिधित्व भी कम हो गया था, यूपी में योगी सरकार बनी तो यहां सरकार बनाने वाली भाजपा से एक भी मुस्लिम विधायक नहीं जीता था जबकि इसके पहले 2012 के विधानसभा चुनाव में 64 मुस्लिम प्रत्याशी चुनाव में जीत दर्ज करने में सफल रहे थे.

राज्य की जनसंख्या में मुस्लिमों की हिस्सेदारी करीब 20 फीसदी है. अब विधानसभा में मुस्लिम प्रतिनिधित्व गिरकर 5.9 प्रतिशत रह गया है. साल 2012 में मुस्लिम प्रतिनिधित्व 17. 1 प्रतिशत था. अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के राजनीति शास्त्र विभाग के प्रोफेसर आफताब आलम कहते हैं, 'पहली बात राष्ट्रीय पार्टी भाजपा ने मुसलमानों को एक भी टिकट नहीं दिया था, जिसके कारण मुसलमानों का यूपी विधानसभा में प्रतिनिधित्व तेजी से गिर गया था. आफताब सवाल खड़ा करते हैं कि क्या मुसलमान हितों की रक्षा के लिए उनका ही प्रतिनिधि विधायिका में होना जरूरी है? क्या सरकार में शामिल लोग उनके हितों की रक्षा नहीं कर रहे हैं? इस पर तमाम मत हैं.' वे आगे कहते हैं, 'अगर लोकतंत्र में सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व नहीं रहेगा तो विशिष्ट वर्ग की सरकार बनेंगी. अगर सभी वर्गों और समुदायों का उचित प्रतिनिधित्व रहेगा तो हम कह सकेंगे कि सर्वांगीण सरकार है. फिलहाल जहां तक विधायिका में मुसलमानों के घटते प्रतिनिधित्व का सवाल है तो इसका परिणाम यह हो रहा है कि सबसे बड़े अल्पसंख्यक समुदाय होने के बावजूद वह अलग-थलग होते जा रहा हैं. यह हमारे लोकतंत्र के लिए खतरनाक है.'

बहरहाल, 2012 और 2007 के विधानसभा चुनाव की तरह इस बार के विधान सभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी की मुखिया मायावती और समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव ने काफी बड़ी संख्या में मुस्लिम प्रत्याशी मैदान में उतारे हैं,ओवैसी की पार्टी भी बड़ी संख्या में मुस्लिम प्रत्याशियों को उतार रही है.लेकिन यूपी विधानसभा में मुसलमान विधायकों की संख्या कितनी बढ़ेगी यह नतीजे आने के बाद ही पता चलेगा. फिलहाल सपा हो या बसपा अथवा कांग्रेस और ओवैसी की पार्टी सभी मुस्लिम वोटरों को लेकर अति आत्मविश्वास में नजर आ रहे हैं. मुस्लिम वोट बैंक की सियासत ने उक्त दलों के नेताओं को ऐसा 'जकड़' लिया है कि वह सही-गलत, अच्छे-बुरे, छोटे-बड़े तक का फर्क भूल गए हैं. उनको लगने लगा है कि वह सत्ता हासिल करने के लिए जो भी फैसला लेंगे, वह सर्वमान्य होगा. खासकर समाजवादी पार्टी मुस्लिम वोटरों और

प्रत्याशियों को लेकर कुछ ज्यादा ही उत्साहित है. उसको लगता है कि मुस्लिम प्रत्याशी सपा के लिए तुरूप का इक्का साबित होगा. इसी लिए उसने बड़ी संख्या में दागी-दबंगों और दंगाइयों तक को टिकट बांट दिए हैं. ऐसे लोगों को भी टिकट दे दिया है जिनके ऊपर गैंगेस्टर और रासुका लगा है, इसी लिए तो 2013 के मुजफ्फरनगर दंगों और करैना से हिन्दुओं के पलायन के आरोपी तक को टिकट थमा दिया है. उम्मीद की जा रही थी कि पिछले पांच वर्षो से बीजेपी जिस तरह से समाजवादी पार्टी पर अपराधियों को संरक्षण देने और अपराध को बढ़ावा देने का आरोप लगा रही थी उसको ध्यान में रखते हुए इस बार शायद अखिलेश द्वारा अपराधियों व दुराचारियों को सत्ता से दूर रखा जाएगा। लेकिन सपा-रालोद गठबंधन की सामने आई सूची में प्रत्याशियों के नाम इन उम्मीदों से मीलों दूर दिखे। बेहतर कानून को स्थापित करने का विश्वास दिलाने वाली समाजवादी पार्टी ने एक बार फिर अपराधियों,दंगाइयों को सत्ता में आने का न्योता देते हुए विधानसभा का टिकट दे दिया। इसमें सबसे बड़ा नाम पश्चिमी यूपी में हिंदुओं के पलायन का मास्टरमाइंड नाहिद हसन था. उत्तर प्रदेश की कैराना सीट से गैंगस्टर नाहिद हसन को प्रत्याशी बनाकर सपा प्रमुख अखिलेश यादव घिर गए हैं। वहीं, सपा ने कैराना और मुजफ्फरनगर, बुलंदशहर और लोनी में हिन्दुओं के पलायन के आरोपी और माफियाओं को टिकट दिया है. सपा-रालोद गठबंधन द्वारा दंगों के आरोपियों को टिकट देने का मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच गया है. भाजपा के एक नेता ने चुनाव आयोग के निर्देशों का उल्लंघन का आरोप लगाते हुए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है। इसमें मांग की गई है सुप्रीम अदालत, चुनाव आयोग को अखिलेश यादव पर मुकदमा चलाने व सपा की मान्यता रद्द करने का निर्देश दे। खैर, 13 जनवरी को ओर से सपा-आरएलडी के गठबंधन वाले प्रत्याशियों की ओर से पहली सूची जारी की गई। इस सूची में समाजवादी पार्टी द्वारा शामली जिले की कैराना सीट के लिए नाहिद हसन के अलावा सपा गठबंधन ने बुलंदशहर सदर सीट से बसपा के टिकट पर विधायक बनते रहे हाजी अलीम की मृत्यु के बाद उनके छोटे भाई हाजी यूनुस को टिकट दिया है। यूनुस पर बुलंदशहर की कोतवाली नगर में ही 23 मुकदमे दर्ज हैं। प्रभारी निरीक्षक द्वारा एसएसपी को भेजी गई रिपोर्ट में हत्या, हमला, लूट, गुंडा एक्ट, गैंगस्टर एक्ट जैसे 23 मुकदमों का जिक्र किया गया है। मेरठ से समाजवादी पार्टी के विधायक रफीक अंसारी को दोबारा टिकट दिया गया है। उन पर भी कई आपराधिक केस लंबित हैं। वो अपनी ही पार्टी के एक अन्य नेता को मौत की धमकी देने के बाद चर्चित हुए थे। अक्टूबर 2021 में मेरठ की एक अदालत ने बुंदू खान अंसारी की शिकायत पर रफीक अंसारी को गिरफ्तार करने का आदेश दिया था। शिकायत में कहा गया था कि विधायक रफीक अंसारी ने उन्हें अपनी जमीन फर्जी कागजातों के आधार पर बेच कर उनका पैसा हड़प लिया है। इतना ही नहीं, नवम्बर 2017 में रफीक अंसारी का एक ऑडियो वायरल हुआ था। ऑडियो में वो समाजवादी पार्टी के ही एक अन्य नेता को नगर निगम चुनावों के दौरान जान से मारने की धमकी दे रहे थे। विधायक अंसारी की मेरठ के नौचंदी थाने में हिस्ट्रीशीटर भी है। सपा-आरएलडी के गठबंधन से जुड़ी प्रत्याशियों की इस सूची में एक नाम भाजपा नेता गजेंद्र भाटी की हत्या करने वाले अपराधी अमरपाल शर्मा का है। गाजियाबाद के खोड़ा में भाजपा नेता गजेंद्र भाटी उर्फ गज्जी की दो सितंबर 2017 को हत्या हुई।

शूटरों ने खुलासा किया था कि अमरपाल शर्मा ने उन्हें सुपारी दी थी। प्रशासन ने इस मामले में अमरपाल पर रासुका भी लगाई थी। अमरपाल पर साल-2018 में 10 लाख की रंगदारी मांगने का केस दर्ज हुआ। कभी बसपा और कांग्रेस के साथी रहे अमरपाल शर्मा आज सपा-रालोद गठबंधन से साहिबाबाद सीट से प्रत्याशी हैं। इसी प्रकार हापुड़ जिले की धौलाना विधानसभा सीट से सपा विधायक एवं मौजूदा प्रत्याशी असलम चौधरी विवादित बयान के लिए अक्सर चर्चाओं में रहते हैं। इसके चलते पिछले पांच साल में उन पर तकरीबन छह से ज्यादा मुकदमे दर्ज हुए। ●

बड़ी चुनौती के लिए तैयार हैं एस.पी. अशोक

● श्रीधर पाण्डेय

इरादे बुलन्द हो,जिसके कार्य में ईमानदारी एवं कर्मठता झलकता हो, जो 24 घन्टे आवाम की सुरक्षा के लिए जगता हो,जो अपराधियों के लिए काल हो वैसे ही पुलिस अधिकारी समाज की रक्षा के लिए एक विशिष्ट पहचान रखता हैं। ऐसे ही एक शख्स आज सुर्खियों में हैं और वह नाम हैं 2016 बैच के आईपीएस अधिकारी, बिहार के मूल निवासी अशोक मिश्र का। बेहतरीन पुलिसिंग के लिए बहुचर्चित रहे श्री मिश्रा लोगो के लिए एक उम्मीद की किरण हैं।चुनौतियों को स्वीकार करना और उसके प्रति वफादारी से कार्य करना,के साथ साथ नित्य नए प्रयोग से सुरक्षा एवं विधि-व्यवस्था का माहौल तैयार करना आईपीएस अशोक मिश्र का मुख्य लक्ष्य रहा हैं, इसी विलक्षण प्रतिभा की वजह से वह राजधानी पटना के अपराधियों के लिए काल बने हुई हैं तो लोगो के लिए आँख का तारा। राजधानी पटना में लगभग साढ़े तीन वर्ष की पुलिसिंग के दरम्यान पुलिस पब्लिक मैत्रेयी सम्बन्ध स्थापित करने के साथ-साथ वह लोगो के विश्वास जीतने में सफल तो रहे हैं और सरकार ने इनकी बेहतरीन कार्य शैली को देखते हुए राजधानी पटना के सिटी एसपी पश्चिमी से नालन्दा पुलिस अधीक्षक की जिम्मेदारी सौंपी गई हैं। पुलिसिंग की दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण एवं सूबे के मुखिया के गृह जिला होने की वजह से यह क्षेत्र हमेशा से कड़क माने जाने वाले आईपीएस को ही सौंपी जाती हैं ताकि पुलिस अधीक्षक पर कोई लोकल पॉलिटिक्स दबाव न बना रहे। मुख्यमंत्री के गृह जिला होने की वजह से एसपी नालन्दा अशोक मिश्रा के लिए यह काफी चुनौतीपूर्ण हैं क्योंकि जिस तरीके से शराब माफिया अपना वर्चस्व कायम किये हुए हैं वैसे में मुख्यमंत्री के गृह जिले होने की वजह से उनपर नकेल कसना प्राथमिकता में शामिल होगा। जिस प्रकार अशोक मिश्रा ने सिटी एसपी पश्चिमी का दायित्व संभालकर पुलिस की शाख को मजबूत किया है उस आधार पर ही नालन्दा जिला पुलिस की कमान सौंपी गई। ●

चीन पर भारत सख्त और सर्तक

● ललन सिंह

विश्व की नजर चीन पर है। भारत भी चीन के हर चुनौती से निपटने के लिए पूरी तौरपर सतर्क और तैयार हैं। चीन की दबंगई के खिलाफ पूरी दुनियां एक होती नजर आ रही है। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग दुनियां को यह जताना चाहते हैं की विश्व में महाशक्ति के रूप चीन का उदय हो चुका है और यही कारण है की चीन अपने शक्ति को व्यापक रूप से प्रदर्शन में तरह-तरह के कार्यक्रम एवं प्रोपगंडा के माध्यम से अपने सामरिक ताकत एवं अन्य क्षेत्रों में अपने काबिलियत को विश्व में अपने धाक जमाने में लगा हुआ है, सच यह है की विश्व के सबसे शक्तिशाली देश बनाने के सपना को पूरा करने में बिजिंग को महत्वकांक्षायें लगातार जटिल होती जा रही है और चीन के चालबाज और विस्तारवादी सोच के और दबंगई के खिलाफ विश्व के मजबूत देशों में एक मत और इस विस्तारवाद सोच पर नकेल कसने की कवायद जारी है। चीन के दादागिरी का मुकाबला भारत भी सैन्य शक्ति और आर्थिक

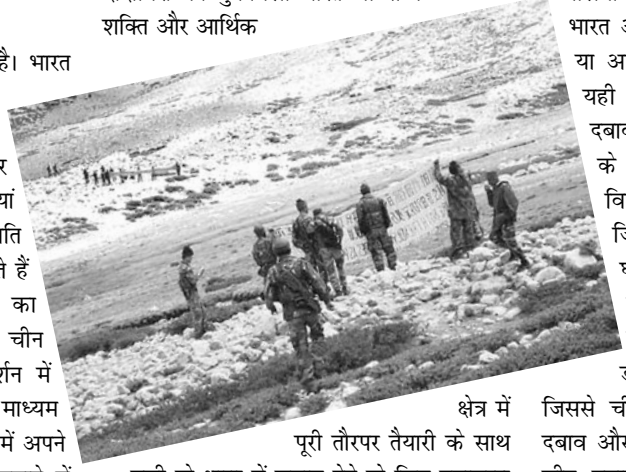

क्षेत्र में पूरी तौरपर तैयारी के साथ उसी के भाषा में जवाब देने के लिए प्रयासरत्त है। चीन की आक्रमकता एवं उसके असभ्यता और विस्तारवाद की हरकतों पर अंकुश लगाने में सफलता भी प्राप्त कर रहा है जो उत्तरी सीमा पर एलएसी पर साफ तौरपर नजर आ रहा है। भारत का नीति अैर इतिहास गवाह है की हमारा देश पहले किसी पर आक्रमण नहीं किया, ना ही एक इंच जमीन की कब्जा की, पर चीन एवं पाक की चालबाजी और नापाक हरकतों के मद्देनजर भारत अपने सैन्य क्षमता, चाहे वह जमीनी हो या आसमानी या समुद्री सब पर चौकस है, यही कारण है की चीन आज के भारत से दबाव में है, आज हमारा भारत अपने रक्षा के क्षेत्र में आत्म-निर्भरता के ताकत से विश्व में उदाहरण प्रस्तुत भी कर रहा है, जिसके ताकत से चीन और पाक में घबराहट साफ तौरपर दिख रही है। आज सामरिक उपकरणों एवं साजो-समान के बनाने में देश के रक्षा प्रतिष्ठानों एवं डीआरडीओ का बहुत बड़ा योगदान है। जिससे चीन जैसे देश पर हमारी तैयारियों का दबाव और घबराहट दिख रही है। यही कारण है चीन हमारी क्षमता एवं फौजी काबिलीयत के तैयारियों के कारण लगातार कई मौके पर एलएसी

और क्षेत्रों में विवादों को शांति से सुलझाने के लिए अपने आग्रह को कई माध्यमों से प्रयासरत्त रहता है और भारत के साथ लगातार सैन्य चर्चा, विशेषकर सीमा विवाद पर किया भी और कई मुद्दों पर भारत के साथ सहमति का माहौल बनाने की कोशिश भी किया है, चाहे वह डोकलाम हो या गलवान घाटी के सीमा विवाद के वक्त।

एक बात साफ है वीरता और सामरिक काबिलियत से पूर्णत: सक्षम भारतीय सेना लगातार सशक्त हो रही है और हमारी सेनाओं के मजबूत मनोबल और बेहतर काबिलियत के कारण चीन अपने एकाधिकारवादी हरकतों और नपाक हरकतों के कारण अपने सोच में परिवर्तन लाने को बाध्य है और एलएसी पर चर्चा से विवादो को खत्म करने में प्रयासरत्त हैं। याद रहे, डोकलाम में गलवान में भारतीय सेना का पराक्रम ही था, जिस कारण चीन को पीछे हटना पड़ा। चीन को इन घटनाओं के बाद यह समझ आ चुका है की भारत की सैन्य ताकत के सामने उसके पुरानी विस्तारवादी नीति कामयाब नहीं हो सकती, हांलाकि चीन बीच-बीच में अपने समाचार पत्र ग्लोबल टाइम्स में अपने नापाक सोच एवं विचारों एवं प्रोंपगंडा वीडियो से भारत एवं विश्व में अपने सैन्य ताकत का दिखावा एवं अपने देश के फौजियों एवं नागरिकों के मनोबल को बढ़ाना चाहता है। हाल के दिनों में गलवान के इलाके में चीनी झंडा फहराने का दुष्प्रचार किया है, उसका करारा जवाब भारतीय सेना ने उसी के भाषा में देकर बोलती चीन की बंद कर दी है। एलएसी के विवादों, जिसमें मुख्य रूप से हाट स्प्रिंग पर 14वें चक्र की सैन्य वार्ता जो होने जा रहा है भारत और चीन के बीच, जिसमें हमारे 14वीं कार्प्स के प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल अनिध सेन गुप्ता नेतृत्व करेंगे, जो हाल में पदभार ग्रहण किया है, जैसा की जानकारी सर्वविदित है कि पेगोग झील और गोगरा पहाड़ियों पर पूर्व स्थिति कायम करने पर सहमति बनी थी और चीन 2020 से पहले की स्थिति में वापस लौटी थी। भारत का आक्रमक जवाब भी चीन के पीछे हटने का कारणों में भी एक था। चीन की लगातार एलएसी पर अपनी सैन्य तैयारियों से और निर्माण कार्यों मे कारण भारत सर्तक है और उसके इन हरकतों के सामने के लिए अपने सैन्य को जरूरत के अनुसार संगठित कार्यक्रम को मुस्तैदी से तैनाती भी कर चुका है, जिसमें टैंक, तोपे आसामानी लड़ाकू विमानों के साथ बेहतर दबाव की प्रक्रिया से लैस होने में प्रयासरत्त है। मतलब साफ है कि चीन को कोई मौका ना हो देश के सीमाओं पर सेंध लगाने का। हर क्षेत्र में चीन पर नकेल कसने की कवायद भारत की रंग ला रही है।

चीन सेना की हर वक्त धूर्तता एवं अतिक्रमण की हरकतों की सोच रहता है पर भारत शांति से मतभेदों को विवाद में नहीं बदलना चाहता, पर भारत कभी भी अपनी अखंडता, संप्रभुता पर समझौता नहीं किया। इस बात को हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने संसद में भी साफ संदेश के तौरपर गलवान के चीनी नपाक साजिश के दौरान बतायी थी। यही बात हमारे देश के सेनाओं का सोच रहा है त्याग हमारी राष्ट्रीय चरित्र की विशेषता रहा है। हमारे देश के फौजियों के शहादत पर देश को गर्व है, चीन हो या पाक इस बात को याद रखना होगा। चीन को आज का भारत उकसावे एवं कोई भी गलत एक्शन पर उसका जवाब भारत के द्वारा उसी के भाषा में और सबक सिखाने वाला होगा। इस बात का आभास अब पाक और चीन को हो चुका है। हमारा सोच शांति का, पर देश के रक्षा पर किसी प्रकार का समझौता का सवाल ही नहीं और इस ही सोच के साथ हमारा देश का फौज अपने जज्बा से सीमा पर तनकर तैनात है।

भारत सरकार की नीति आज चीन पर नकेल कसने की कवायद केवल सैन्य क्षेत्र में ही नहीं बल्कि आर्थिक एवं कुटनीतिक माध्यम से भी लगातार हो रही है, जिससे चीन सरकार में खलबली है। भारत सरकार हाल के दिनों में पांच उत्पादों पर एंटी डीपिंग ड्यूटी का प्रावधान किया है, जिससे भारत के घरेलू उद्योगों को बढ़ावा और

लोकल औद्योगिक कार्यरत्त कार्यक्रमों को सस्ते आयात से बचाने के लिए कई कदम भी उठाये हैं, सीमा शुल्क बोर्ड ने अलग-अलग आदेशों को जारी किया है, जो इसी मुहिम का हिस्सा है। कई उद्योगों पर सस्ते आयात से बचने के लिए उठाए गये कदम से चीन के उत्पादों पर दबाव स्वभाविक है, जो चीन को आर्थिक दबाव का जर्बदस्त परिणाम के तौरपर होगा, इसमें कोई शक नहीं है। इसी तरह से भारत सरकार के सहयोग से इंडिया मार्ट का निर्माण यूएई दुबई में होने जा रहा है एवं इंडिया मार्ट के वेयरहाउस और कार्यालय तक सब्सिडी दी जा रही है, जिससे भारतीय निर्यातक अपना कारोबार बेहतर ढ़ंग से करे इसका असर अफगानिस्तान, अफ्रीका, इराक, इरान जैसे देशों में भारत की पकड़ और आर्थिक कारोबार का प्रगति निश्चित रूप से होगा। इस समझौते से यूएई के रास्ते से अन्य देशों के माल भारत में आ सकेगा। चीन पर दबाव और आर्थिक घेराबंदी होना तय है। भारत के दबाव एवं हर क्षेत्र के घेराबंदी का असर से चीन में एक समझ की चर्चाओं का दौर शुरू हो चुका है और आजकल कई मौके पर विश्व के आर्थिक नीतिगत बातों से अपना पक्ष को मजबूत करने की कोशिश में हैं। आजकल चीन अपने इर्द-गिर्द हर देशों के साथ व्यापारिक समझौतों से उस पर अपना प्रभुत्व कायम करने में भी लगा है, जिस पर भारत सचेत होकर हर संभावनाओं पर योजनावद्ध तरीके से चीन के इरादो को सामना करते हुए उस पर नियंत्रण की कोशिश में लगा हुआ है, चाहे वह नेपाल हो या श्रीलंका, म्यांमार या बांग्लादेश हो। चीन आजकल परमाणु खतरा बढ़ाता हुआ विश्व का सबसे ताकतवर देश बनने के सोच पर लगातार प्रयासरत्त है। चीन की सोच 2049 तक विश्व की सबसे बड़ी महाशक्ति बनने का है, जो जगजाहिर है। उसी वर्ष चीन की कम्युनिस्ट शासन को सौ साल पूरे होंगे। सैन्य और राजनीतिक महत्वकांक्षाएं के बढ़ते कदम भारत जैसे देश के लिए चिंता का विषय भी है और इन्ही कारणों से भारत हर क्षेत्र में अपने कावालियत क्षमताओं और इनके लिए आत्मनिर्भर वाले कार्यक्रमों में तेजी से कार्यरत्त भी है। भारत भी अपने परमाणु हथियारों के भंडार से संतुष्ट भी है, चीन के अपेक्षाकृत दौरे जरूर है पर यह बात साफ है। परमाणु हथियार अपने बचाव एवं जरूरत के अनुसार इस्तेमाल के लिए होते हैं, ना कि युद्ध लड़ने के लिए चीन, रूस एवं अमेरिका के विनाशकारी तथा बहुत अधिक परमाणु हथियारों के बराबरी के लिए लगातार लगा हुआ है। अपने परमाणु भंडार को बढ़ाने में लगा है पर इससे भारत को चिंता की कोई जरूरत नहीं है, यह भी बात भारत समझ रहा है। विश्व का महाशक्ति बनने का होर कारण है चीन के परमाणु भंडार बढ़ाने के कार्यक्रम का। भारत-चीन के पुराने इतिहास और विशेषकर 1962 के घात वाली यादों को कभी भूल भी नहीं सकता और इस बात का पूरी जानकारी है की चीन का बोलना और कार्यों का कोई संबंध नहीं है। वह हर मौके पर बोलता कुछ है और करता कुछ और है। चीन की धूर्तता और घात लगाकर साजिश के विरासत के मद्देनजर भारत एलएसी पर सजग है। हाल के दिनों में विश्व के सबसे आधुनिक एयर डिफेंस सिस्टम एस-400 सिस्टम की पहली बैटरी पंजाब के एयर फोर्स स्टेशन पर तैनाती का कार्यवाही शुरू कर चुका है, जो फरवरी से मुस्तैद हो जायेगा। करीब 4000 करोड़ का यह समझौता रूस से, जिसमें पांच बैटरी का सौदा का समझौता पूर्णत: रूप से हो चुका है।

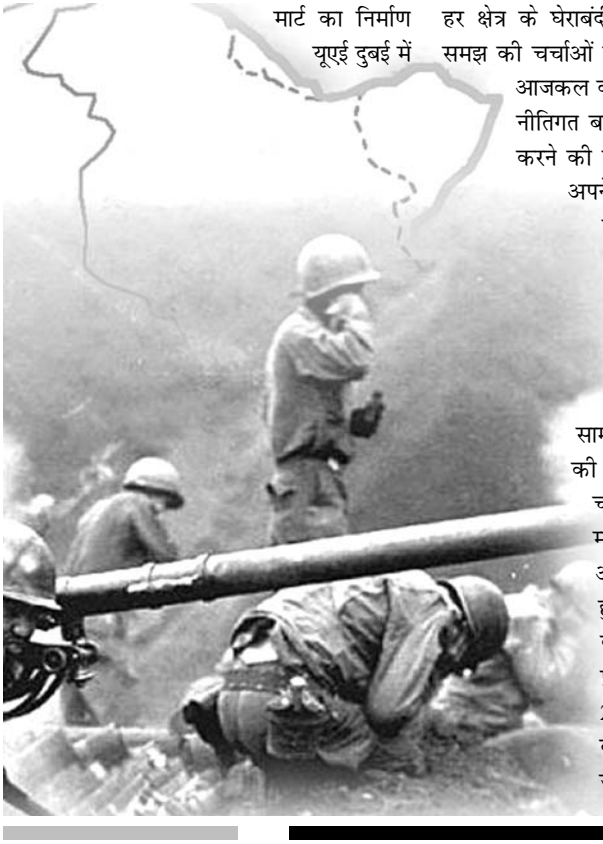

दुश्मन के मिसाइल, लड़ाकू विमान, अटेक हेलिकॉप्टर और ड्रोन को हवा में ही बर्बाद करने में सक्षम है। दुनियां के सबसे आधुनिक एयर डिफेंस माने जाने वाले रूसी वर्जन के खरीद पर भारत से अमेरिका खड़ा है। इसे ना खरीदने के लिए भारत को चेतावनी तक दिया गया। रूसी एयर डिफेंस एस-400 के भारत के रूस के साथ खरीद वाले समझौते पर, अमेरिका के दोनो सदनों के अधिकतर सांसदों ने पत्र लिखकर राष्ट्रपति अमेरिका को दिया था। जो भी हो, भारत अपने सीमा पर दो तरफा बेहद खतरनाक स्थिति को देखते हुए समझौता किया एवं अब बैटरियों को स्थापित हेतु कार्यवाही कर रहा है। जैसा कि पूरी दुनियां को जानकारी है की चीन ने हाल में नया सीमा कानून लागू किया है। इस कानून का मतलब और उसकी सोच है विस्तारवाद को सही ठहराने का, जो जमीन दूसरे देश का कब्जा किया है, अतिक्रमण के द्वारा उस पर अपना पक्का हक और अपने देश में मिलाने का, जिसका भुग्तभोगी भारत भी है। 1962 को चीन के द्वारा भारतीय सीमा के इलाके में उसके अतिक्रमण द्वारा कब्जा किया हुआ जमीन पर भारत अपना विरोध दर्ज कर चुका है और संदेश भी चीन को देता रहता है। चीन नये कानून के आड़ में अपने लोगों को सीमावर्ती इलाके में बड़े पैमाने पर बसाकर अवैध तरीके से कब्जा वाले जमीनों पर अपना हक को पक्का करने का मंसूबा को ध्वस्त करने का भारत ने भी मन बना लिया है और सैन्य और कुटनीतिक माध्यम से चीन के इस नापाक सोच को नहीं पूरा होने का प्रयास विश्व के मजबूत देशों के साथ मिलकर करने में हमारा देश तत्पर भी है। चीन लगातार अपने सरकारी समाचार-पत्र ग्लोबल टाइम्स के माध्यम से और प्रोपगंडा नक्शे के माध्यम से भारत के अरूणाचल प्रदेश को अपना बताता रहा है। हाल के दिनों में 30 दिसम्बर 2021 में एक नक्शे में अरूणाचल प्रदेश, जो भारत का अभिन्न हिस्सा है, उसके 13 स्थानों का नाम बदलकर विश्व पटल में अरूणाचल प्रदेश को अपना बताने की मूर्खता और अख्खरपन का नमूना पेश कर रहा है। चीन का नीति रहा है दूसरे देश के सीमा में अतिक्रमण करके विवाद पैदा करने का। नये सीमा कानून के तहत भारत एवं भूटान के सीमाओं पर एकतरफा मनमानी ढ़ंग से सीमांकित करने के इस सोच को भारत कभी भी होने नहीं देगा। भारत के तरफ से विदेश एवं रक्षा मंत्रालय के तहत विरोध चीन को दर्ज की गई है और चीन के सामरिक परमाणु प्रसार से भारत, जापान जैसे देश और अमेरिका भी चिंतीत है, जो जरूरी भी है।

हाल ही में भारतीय फौज ने चीन के दुष्प्रचार का करारा जवाब दिया। चीन के भ्रामक प्रोपगंडा वीडियो के जवाब में भारतीय सेना ने गलवान घाटी में अपने ताकत और मुस्तैदी का साफ संदेश चौतरफा जमी बर्फ की चादरों के बीच विशाल तिरंगा लहराते हुए अपने हथियारों के साथ जवाब दिया। इससे साफ हुआ कि गलवान घाटी की वर्तमान में यथास्थिति में कोई बदलाव नहीं हुआ है। इस तस्वीरों के जारी होने के बाद देश में अनावश्यक बयानबाजी और बेवजह की संदेह पर भी विराम लगा गया है। शान से लहराता हुआ तिरंगे पर पूरा भारत गर्व कर सकता है कि हमारा देश सीमाओं पर पूरी तौरपर मजबूती से खड़ा है। सवाल यह नहीं कि कोई दुश्मन देश अब हमारी भूमि का एक इंच पर अपने अतिक्रमण द्वारा घुसपैठ करके हक बना सके। सर्वविदित है कि भारत 13 बार सैन्य वार्ता के दौरान अपने रूख में कोई समझौता नहीं किया, जिसमें हमारे देश की जमीन पर चीन कोई मौका का कोशिश कर सेना भारत की जमीनी एवं आसामनी ताकत को लगातार पुर्नगठित तौर-तरीकों से मुस्तैद है। लगातार अपने सैन्य कावलियत, क्षमता को बढ़ोतरी के प्रयास में है, विशेषकर एलएसी और एलओसी पर।

आज हमारा देश सीमा पर चीन के उपर दबाव एवं सैन्य तथा साजो-सामान तथा जरूरत के अनुसार हालात से सामना के लिए अपने सीमा के इलाके में सड़कों एवं पुलों के निर्माण में तेजी से कार्यरत्त है, जिसका उदाहरण सीमा सड़क संगठन का उद्देश्य हाल के दिनों में 24 पुलों एवं 3 सड़कों का निर्माण पूरा करके दिया है, जो सामरिक दृष्टि से चीन के दबाव के कारण है। सीमा के इलाके में बुनियादि ढ़ांचाओं को बेहतर बनाने के कई उपाय से हमारी फौजी साजो-सामानों को कम समय में पहुंचाने की कवायद बहुत फायदेमंद साबित हो रही है। भारत

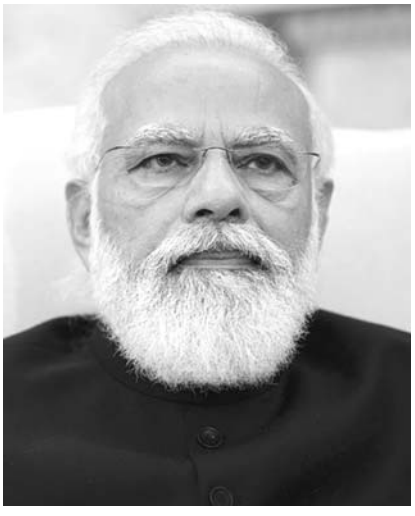

को यह आभास है कि चीन कभी भी उत्तरी सीमाओं पर अपने हरकतों को कर सकता है और संघर्ष की हालात में हमारी सड़के पुलों और सीमा के नजदीक निर्माण हुई रोड एवं पुलों से मदद और सफलता का माहौल मिलेगा। यही कारण है की स्वदेशी डबल लेन ब्रिज जो 11000 फीट की ऊँचाई पर 'फ्लैग हील' जो डोकला रोड पर बना है, जिसकी लम्बाई 33 किलोमीटर की है, जिससे कम समय में भारतीय सेना डोकला एवं डोकलाम के नजदीक पहुंच पाते हैं, जो सामरिक दृष्टि से बहुत ही उपयोगी है।

चीन की दबंगई से उबारने के लिए भारत को चीन पर तिब्बत के स्वतंत्र बनाने के लिए विश्व के मजबूत देशों के साथ प्रयास करने की जरूरत है। तिब्बत के स्वतंत्र होने और चीन से मुक्त होने पर उतरी सीमा पर चीन का अनावश्यक दबाव कम होगा और विस्तारवाद प्रयासों में कमी आयेगी। भारत और भूटान के सीमाओं पर विवादों में कमी आयेगी। आज कई फोरम पर चीन के असम्य और एकाधिकार वाली नीति पर विश्व के कई देश एक साथ खड़े हैं, जिसका प्रमाण क्वाड भी है। हिंद प्रशांत क्षेत्र में चीनी दबंगई को चुनौती का तोड़ इस क्वाड के जरीय किया जा रहा है, जिसके कारण चीन में घबराहट और बेचैनी साफ झलकता है। भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया का एक साथ होना इस समुद्री इलाके में बहुत अच्छा और तटस्थ परिणाम प्रदान करेगा। इसकी पूरी उम्मीद है जो भारत के लिए बहुत सही दिशा देगा। एक बात और बहुत साफ है कि पाक एवं चीन के नापाक इरादों से भारत पर सुरक्षा के लिहाज के हमेशा गहरी एवं आंतरिक दबाव बना हुआ है, जिसमें राष्ट्र विरोधी तत्वों का भी समर्थन रहता है। इस पर हमारे देश की एजेंसिया सर्तक भी है। एलएसी पर 14वें चक्र की सैन्य वार्ता 'हाट स्प्रिंग' पर निकट भविष्य में।

चीन के 1962 के धोखा एवं विस्तारवाद का याद भारत को है और आज का भारत हर क्षेत्र में पूरी तौरपर सजग एवं सतर्क है, साथ ही विकास के मार्ग पर लगातार आगे बढ़ता हुआ महाशक्ति विश्व गुरू बनने का सोच भी रखता है। हमारा देश शांति एवं पूरी दुनियां को भाइयों एवं प्यार का संदेश भी देता रहा है पर चीन का जो छवि है विश्व में, वह साफ है। एक चालबाज एवं अपने स्वार्थ हित पर कमजोर देशों को नए प्रलोभनों से उस पर अपना वर्चस्व की कोशिश में रहता है। जो भी हो अब भारत अब चीन के किसी भी मौकापरस्ती और झूठ पर विश्वास करने के मूड में नहीं है। जो भी हो, साफ हो। सीमा पर कोई अतिक्रमण ना हो, ना ही किसी और क्षेत्र में उठे दबंगई का मौका नहीं हो, इस पर प्रयास होते रहेंगे। भारत बचाव के मुद्रा में नहीं बल्कि आक्रामक तरीकों से अब चीन और पाक पर अपना दबाव बनाता हुए सशक्त देश के जैसे उभर रहा है, जिसको विश्व के हर देश इस पर सहमत और साथ है। तीनों सेनाओं के अंगों के चीफ का साफ संदेश आता रहा है चीन पर हमारी नजर है और किसी भी समस्याओं को निबटने के लिए तैयार हैं। तीनों सेनाओं के समन्वय थियेटर कमांड के तहत सुरक्षा के योजनावद्ध कार्यक्रम जारी है, जो हमारे दुश्मन को परास्त करने के लिए सही और पक्की है। पूरे देश को हमारी सेनाओं के काविलियत और क्षमता पर गर्व होना चाहिए और सुरक्षा पर पूरी तौरपर संतुष्ट रहने की जरूरत है, जिसका प्रमाण एलएसी, एलओसी पर साफ नजर आ रहा है। चीन के गैर कानूनी कब्जे को भारत नहीं स्वीकार किया, यह संदेश चीन को साफ है। ●

(लेखक बी.एस.एफ. के पूर्व अधिकारी हैं।)

साल 2022 में कारा हम धरती की सुध ले लेते!

● ऋतुपर्ण दवे

यह नए वर्ष 2022 में कोरोना के साथ विकास से पैदा प्रदूषण भी मानव अस्तित्व के लिए बड़ी चुनौती बनेगा। वहीं तापमान बढ़ने के सिलसिले को यदि इस बरस भी गंभीरता से लिया गया तो बस 8 साल ही बचे हैं जब धरती का बुखार का लाइलाज होगा! साल 2022 का यह सबसे बड़ा सवाल है? सबको पता है 2030 से 2052 तक धरती का तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस बढ़ेगा जो पर्यावरण के लिए खासा प्रतिकूल होगा। रिसर्चर बताते हैं कि वाहनों, उद्योगों, कारखानों से निकली कॉर्बन डाईऑक्साइड से पादप, फंफूदी पराग, बीजाणुओं का उत्पादन बढ़ता है जो हवा संग हमारे शरीर में पहुंच अस्थमा, राइनाइटिस, सीओपीडी, स्किन कैंसर एवं अन्य तमाम एलर्जी सरीखी घातक बीमारियों की वजह बनता है। हमने जेट रफ्तार से तरक्की तो कर ली। अंधाधुंध औद्योगिकीरण, शहरीकरण को अंजाम भी दे दिया। नए-नए मुकाम हासिल किए। लेकिन इन सबसे तेज सुपरसोनिक रफ्तार से अपने विनाश की कहानी भी रच डाली। इसी सत्य को स्वीकारना होगा। विकास और बढ़ती जनसंख्या की जरूरतों के बीच मानव सभ्यता की यही तथा-कथा है। खुद की बेहतरी की आड़ में हमने प्रकृति को लगातार विकृत किया उसके स्वरूप और संसाधनों को छलनी कर डाला। महज चंद वर्षों में घोरतम अन्याय करते हुए यह तक भूल बैठे कि जिसे हम तहस-नहस कर रहे हैं, उसे बनने में लाखों बरस लगे थे! ग्रीन हाउस गैसें कार्बन डाईऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड, हैलोकार्बन का भारी उत्सर्जन ही जलवायु परिवर्तन का प्रमुख कारण है। यह भी सच है कि तीन लाख साल पहले धरती पर 9 मानव प्रजातियों की उत्पत्त हुई थीं जिनमें अब हम अकेले हैं। अपनी सुख, सुविधाओं के लिए लाखों वर्ष पुराने प्राकृतिक स्वरूपों, संसाधनों को इस कदर रौंदा कि नदियां समय से पहले सूखने लगीं, जंगल पेड़ों बिन वीरान हो गए, पहाड़ टूटकर ईमारतों के लिए गिट्टियां में तब्दील हुए, पानी से लबालब धरती की कोख सूख-सूख कर पाताल छूने को मजबूर हुई और प्राणदाता वायुमण्डल प्राण विरोधी जहरीली फिजाओं से भर गया। प्रकृति के संग भी तो विकास संभव था, लेकिन तमाम तरह की प्रतिस्पर्धाओं की होड़ में हम लगातार भूलते गए और अब भी नहीं चेत रहे हैं। बढ़ता वायुमंडलीय तापमान असहनीय होता जा रहा है। उद्योगों, कल कारखानों से उत्सर्जित दूषित गैसें बुरी तरह सांसों को लीलने के लिए अनेकों समस्याएं पैदा कर रही हैं। आंकड़े देखें तो बस 10 बरसों में दुनिया भर में जीवाश्म ईधन यानी लगभग 65 करोड़ वर्ष पूर्व जीवों के जलने व उच्च दाब और ताप में दबने से बना कोयला, पेट्रोल, डीजल, मिट्टी के तेल आदि की जितनी खपत की वह वातावरण को बिगाड़ने खातिर बहुत ज्यादा है। जीवाश्म ईधन व दूसरी औद्योगिक प्रक्रियाओं के चलते विश्व में कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जन में 4,578.35 मिलियन मीट्रिक टन की बढ़ोत्तरी क्या हुई कि वायुमंडल गर्माता मिजाज बेकाबू हो रहा है। यही तो ग्लोबल वार्मिंग है, उसका कारण है। जलस्रोत, ग्लेशियर, जैव विविधता, कृषि उत्पादकता और मानव जीवन सब कुछ बुरी प्रभावित हो रहे हैं और फिर भी हम हैं कि मानते नहीं! प्राकृतिक आपदाओं से बीते केवल 2 वर्षों में दुनिया भर में बेघर हुए लोगों की संख्या 10 बरसों में सबसे ज्यादा रही। जहां साढ़े 5 करोड़ लोग अपने-अपने ही देशों में विस्थापित हुए वहीं ढ़ाई करोड़ से ज्यादा दूसरे देशों में मजबूरन शरणागत हुए। चीन के हेन्नान में भी एक हजार साल की बारिश का रिकॉर्ड टूटा। बड़ी संख्या में लोग मरे, सड़कें हफ्तों पानी से लबालब रहीं। यूरोप में दो दिन में इतना पानी बरसा जितना दो महीने में बरसता। नदियों के तट टूट गए। पानी गांवों और शहरों में जा घुसा। हजारों घर, दूकान, दफ्तर, अस्पताल सब पानी-पानी हो गए। जर्मनी, बेल्जियम में सैकड़ों मौतें हुईं। सदियों पुराने आबाद गांव एक ही रात में बह गए। भारत में भी महाराष्ट्र, उप्र, उत्तराखण्ड, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, मप्र, बिहार, झारखण्ड प.बंगाल, सहित दक्षिणी राज्यों कुल मिलाकर पूरे देश का काफी बुरा हाल रहा। हर कहीं से बारिश की तबाही खौफनाक तस्वीरों ने जब-तब खूब डराया। वहीं अमेरिका के वाशिंगटन और कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया में हीट डोम बनने से हवा एक जगह क्या फंसी कि तापमान 49.6 डिग्री सेल्सियस तक जा पहुंचा। अमेरिका के ऑरेगन जंगल की आग ने दो हफ्ते में ही लॉस एंजेलेस जितना इलाका राख कर दिया। पर्यावरण को बहुत भारी नुकसान हुआ। हरे-भरे जंगल वीरान रेगिस्तानों में बदल गए। सुलगते जंगलों की जलती लकड़ियों का धुंआ न्यूयार्क तक सांसों पर भारी पड़ा। ब्राजील का मध्यवर्ती इलाका भी शताब्दी के सबसे सूखे की चपेट में आ गया और अमेजन के जंगलों के अस्तित्व पर आन पड़ी। पर्यावरणीय असंतुलन से पहले ही बेलगाम बारिश और तपिश ने प्राकृतिक आपदाएं बढ़ा रखी हैं। आगे कितना कहर ढाएंगी सोचकर सिहरन होती है। चिन्तातुर पूरी दुनिया बैठकों और विचार विमर्श में मशगूल है, नतीजा कुछ निकलता नहीं उल्टा सब मेरा प्रदूषण-तेरा प्रदूषण में ही उलझ जाते हैं। इधर धरती का तापमान बढ़ता जा रहा है और हम हैं कि मानते नहीं! जलवायु परिवर्तन है क्या? इसकी समझ अभी भी कई लोगों के लिए आसान होकर भी आसान नहीं है। बिना लाग लपेट बस इतना समझ लें तो काफी होगा कि दुनिया में औद्योगिक क्रान्ति की शुरुआत 1850 से 1900 के बीच हुई। उस वक्त धरती का जितना तापमान था उसे ही मानक इकाई मानकर स्थिर रखना है ताकि पर्यवारण भी स्थिर रहे। बस यही जरा सी नासमझी इंसान के वजूद पर भारी पड़ रही है। फिल्म ही सही हमने विनाश का ट्रेलर देख लिया है, सवाल बस इतना कि आखिर हम चेतेंगे कब? प्रकृति के साथ अपनी हैवानियत भरी करतूतों को काबू भी करेंगे या नहीं? प्रकृति के संग, प्राकृतिक वातावरण में भी तो विकास संभव है। इतिहास गवाह है कि हजारों बरस पहले भी दुनिया भर की तमाम प्राचीन सभ्यताएं बेहद विकसित थीं, तब तो पर्यावरण को कभी मानव सभ्यता ने नुकसान नहीं पहुँचाया था जो अब है। समूची दुनिया को इस बारे में सोचना ही होगा वरना इस बात से भी इंकार नहीं कि लाखों वर्षों में बने जीवाश्म ईधन के बेतहाशा दोहन की भरपाई का जरिया भी हम ही तो बनेंगे! काफी कुछ बिगाड़ने के बाद भी काश हम, सब वक्त रहते चेत पाते।●

'हिन्दुत्व' विश्वबंधुत्व का आयाम

● प्रो० रामजीवन साहू

सम्पूर्ण भारत में अभी शब्दों पर बहुत चर्चा है। हिंदुत्व और राष्ट्रीयत्व। इन दोनों शब्दों पर वे लोग अधिक व्यग्र हैं जिन्हें शब्दों की जानकारी नहीं है। जैसे एक व्यक्ति ने मुझसे कहा भगवान राम का जन्म बिहार के मुंगेर जिला में हुआ है।

विश्व में सिर्फ एक ही धर्म है वह है हिन्दू धर्म। इस धर्म की स्थापना व्यक्ति के द्वारा नहीं की गई है। अन्य पंथ जो अपने पंथ को धर्म मानते हैं उन्हें देख लीजिए वे सभी किसी न किसी एक व्यक्ति द्वारा स्थापित किया गया है। क्या आप बता सकते हैं कि हिन्दू धर्म की स्थापना किस व्यक्ति ने की है ? आपके पास इसका उत्तर नहीं है वैसे यह सत्य है कि जिनके ग्रहण करने या धारण करने से अपना और अपने राष्ट्र का कल्याण हो उसे धर्म कहते हैं। हिंदू धर्म को सनातन धर्म भी कहते हैं क्योंकि यह धर्म पहले भी था आज भी है और आगे भी रहेगा हिंदू धर्म पर आस्था रखने वालों में हिंदुत्व पाया जाता है। हिंदुत्व शब्द में कुल 7 अक्षर है इन सातों अक्षर में हिंदुत्व के लक्षण समाहित है इ+ह+न+उ+द+त+व त्र हिंदुत्व इ से ईर्ष्या, ह से हत्या, न से नफरत, द से दगाबाजी, उ से उद्दंडता, त से तिरस्कार और व से बदतमीजी। जो ईष्या, हत्या, नफरत, दगाबाजी, उद्दंडता तिरस्कार और बदतमीजी जैसे सातों दुर्गुणों से दूर रहे उसे हिन्दुत्व कहते हैं।

ऐसे आचरण के कारण ही भारत विश्वगुरु कहलाया और इन्हीं के कारण धन धान्य से सामर्थ्यवान बना जिनके कारण भारत सोने की चिड़िया कहलाया। भारतवासी को जाति, भाषा, क्षेत्र एवं उपासना के पद्धति से ऊपर उठकर एक सूत्र में पिरोने वाला कोई सूत्र है तो वह है अध्यात्म। अध्यात्म आधारित जीवन दृष्टि एवं जीवन का चिंतन भारतीय समाज की एकता का आधार है। इसी को हिन्दुत्व कहा जाता है। हिन्दू इस राष्ट्र की पहचान है। आज के विघटनकारी तत्व इस एकता में सेंध लगाने में बाज नहीं आ रहे हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 30 वर्षों तक भारत के शिक्षा मंत्री मुस्लिमबंधु रहे हैं। फलस्वरुप भारत की शिक्षा नीति वैसी नहीं बन पाई जो स्वरोजगार उन्मुख हो इसके कारण हिन्दू विरोधी शक्तियाँ पनपीं। हिन्दूत्व नगरो, गाँवों, पढ़े–अनपढ़े सभी लोगों के हृदयस्थली में इतना गहरा पैठ बन गया है कि विरोधी शक्तियों के सभी योजनाओं को समझते हैं और राष्ट्रधर्म के प्रति पूरी तरह से सजग रहते हैं। अब उनका कहना है कि हिन्दूज्म तो कुछ ठीक है परंतु हिन्दुत्व बेहद खराब है। हिन्दुत्व के कारण वर्ण–भेद, जाति भेद और ऊंच–नीच जैसे समस्या खड़ी होती है ।इस तरह का विचार राष्ट्रविरोधी लोगों के मन में आती है। यहाँ जाति भेद कभी नहीं रहा है। हिंदू धर्म तो कहता है कि प्रत्येक जीव में ईश्वर है तो भला ईश्वर को कौन दूर रखना चाहेगा ? भारत में अभी भी सभी संतो में शंकराचार्य सबसे श्रेष्ठ हैं। उनके जीवन की एक घटना है – यह कि एक दिन उनके सामने एक चांडाल आ गया। उन्होंने कहा दूर हटो, दूर हटो। तब चांडाल ने कहा दूर हटने के लिए किसको कह रहे हो? मेरे शरीर को! तुम्हारा शरीर जिन पांच तत्वों से बना है, उन्हीं पांचों तत्वों से मेरा शरीर भी बना है। फिर क्या फर्क है? अगर मेरे शरीर के अंदर आत्मा की बात कर रहे हो तो तुझमें और मुझमें एक ही आत्मा है। चांडाल के इस कथन से शंकराचार्य को ध्यान में आया कि मेरा यह व्यवहार अपने दर्शन के अनुकूल नहीं है और साक्षात शिव ने इस चांडाल के रूप में मेरी आंखें खोल दी। तब वह तुरंत गुरु मानकर उस चांडाल के पैर को छूते हैं। बाद में वे अपनी पुस्तक मनीषा पंचम में लिखते हैं कि ''चंडालोऽस्तु संतु द्विजोऽस्तु गुरुरित्ये मनीषा मम'' अर्थात मेरे अंतर्मन के अनुसार चाहे चांडाल हो या ब्राह्मण वह मेरा गुरु है। इसी प्रकार रामानुजाचार्य के जीवन की एक घटना है वे प्रतिदिन कावेरी नदी स्नान करने जाते थे। जाते समय दो ब्राह्मण के कंधों पर हाथ रखकर जाते थे और जब स्नान कर लौटते थे तब दो अनुसूचित जाति के लोगों के कंधे पर हाथ रखकर लौटते थे। लोगों ने जब पूछा कि संत महोदय ऐसा आप क्यों करते हैं ? उन्होंने कहा मैं स्नान करता हूँ इससे शरीर शुद्ध होता है और इन अनुसूचित जाति के साथ आता हूँ मेरा मन शुद्ध हो जाता है। इस घटना से विदित होता है कि भारत में छुआछूत कभी नहीं था। सत्य, प्रेम, अहिंसा और ब्रह्मचर्य का संदेश हिंदुओं के द्वारा दिया जाता है। इतना ही नहीं हिंदुत्व कहता है कि भारतीय संस्कृति अमर है, सत्य अमर है, श्रद्धा अमर है, धर्म अमर है, न्याय अमर है। ये सभी कभी मंद भले हो जा सकते हैं लेकिन मर नहीं सकते। साथ ही धर्म का पालन करने के लिए न व्यक्ति की, न समाज की, न किसी की भी शांति और उसकी व्यवस्था स्थिर नहीं रह सकती है। यह उतना ही आवश्यक है जितना वायु, जल और अन्न।

★ jk"Vf;Ro %& भारत में राष्ट्र शब्द का उद्‌गम प्रतिक्रियात्मक नहीं हुआ है बल्कि यह भावनात्मक है। इसका वर्णन विश्व के सबसे पुराना धर्म ग्रंथ अर्थववेद में है। वह यह है –'' सत्यं वृहत्मुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथ्वीं धारयन्ति। अर्थात राष्ट्र के 8 अधिष्ठान हैं :–

☞ lR; %& सत्य मात्र व्यवहारिक नीति नहीं है बल्कि अडिग आचरण है। सत्य से डिगो मत। यह वैदिक आदेश है। परस्पर विश्वसनीयता का प्राण है। प्रकृतिजन्य सत्य है। परिस्थितिनिरपेक्ष शाश्वत मूल्य है – सत्य, राष्ट्र का आधार तत्व सत्य है।

☞ ogr %& वृहत् अर्थात बड़ा राष्ट्र के सभी अंगों को वृहत् भाव रखना होगा। मानव स्वार्थी नहीं निःस्वार्थी होना चाहिए। उसका मन संकुचित ना हो। राष्ट्र का वायुमंडल पारस्परिकता से ओत–प्रोत हो।

☞ _ r %& ऋतं का अर्थ पर्यावरण का परिरक्षण है। पृथ्वी का संचालन एवं परिरक्षण सृष्टिकर्ता की परियोजना से तालबद्ध चलता है। मानव पृथ्वी का मालिक नहीं है, संतान है। राष्ट्र की शाश्वत रक्षा के लिए यह अनिवार्य है। इस प्रकार के व्यवहार के कारण भूमंडल, अंतरिक्ष, पृथ्वीतल, जलाशय, वनस्पति, औषधि, पशु–पक्षी जगत, समस्त प्राणी जगत इसमें सुखद, शुभद शांति बनी रहेगी।

☞ mx %& उग्रं का अर्थ होता है स्वबोध से उत्पन्न सावधानी। इसमें वीरता, धीरता, पौरूष, पराक्रम आदि सद्‌गुण सम्मिलित है। किसी कार्य को करने के लिए प्रखर सजगता आवश्यक है वह है उग्रं।

☞ nh{kk %& दीक्षा का अर्थ होता है समर्पित कर्मशीलता। अत्यंत ज्ञान देनेवाली और कृत पापों को क्षीण करने वाली शक्ति ही दीक्षा है। राष्ट्र के सभी अंगों की राष्ट्रीय प्रतिबद्धता और प्रमाणिकता इस अमोल दीक्षा का परिचायक है।

☞ ri %& सुख, दुःख, जय, पराजय, लाभ, हानि इनकी ओर से आँखें मूंदकर आगे बढ़ते जाना तप है, सहनशीलता उसकी मुख्य प्रकृति है। निरंतरता और नित्य जागरूकता उसका श्वासोच्छवास् है।

☞ cã %& विज्ञान सहित ज्ञान ब्रह्म है। राष्ट्र का तत्व केवल भौतिकता न होकर शाश्वत तत्व होना चाहिए। जिसको शुद्ध ज्ञान कहते हैं, उसी के आधार पर राष्ट्र टिकेगा। वह आलस्य का अमित्र है और अनवरत का मित्र है।

☞ ;K %& श्रेष्ठ जनों का आदर, सामूहिक एकत्रीकरण और दीन दुखियों को सांत्वना, यह है यज्ञ । यज्ञ कोई अकेले नहीं कर सकता। सबों की उपस्थिति और भागीदारी उसमें अपेक्षित है। संचित संपत्ति का सार्वजनिक संवितरण उसकी परिपाटी है।

ये आँठों गुण जिनमें व्याप्त हैं वहीं राष्ट्रयित्व है। ●

भारत में मिर्ची भी रंग बदलती है
गांधी की सात चेतावती, नेताओं का मुहावरा बन कर रह गया

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

भारत की आजादी के पूर्व ब्रिटिश चर्चिल ने ठीक कहा था ''भारत आजादी के काबिल नहीं है। इस देश के नेता बेईमान, कमीशनखोर और जनता को लूटने वाले डाकू होंगे। उस समय चर्चिल के शब्दों पर लोगों को गुस्सा आया था। देश के प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरु ने अनाज की उपज बढ़ाने के लिए उपाय इस प्रकार सुझाए की हमारे देश की मकानों की छत बेकार पड़ी रहती है। अगर छत पर हर परिवार खेती करे तो हमें अपनी जरुरत का अनाज मिल सकता है तथा शहर में रहने वाले गमलों में खेती करे तो अनाज की समस्या दूर हो सकती है। नेहरु जी की ऐसी विद्वतापूर्ण बातों को खिल्ली उड़ाते हुए डॉ. लोहिया ने जवाब में कहा जिस देश का ऐसा प्रधानमंत्री हो उस देश का भविष्य कैसा होगा? उन्हीं दिनों कन्हैया लाल मुंशी देश के अनाज मंत्री थे उन्होंने तंगी (कमी) का सुझाव दिया कि चावल, चना, गेहूं की छिलका का उपयोग करने से भी अनाज की तंगी दूर हो सकती है। इस विद्वतापूर्ण सुझाव को क्या कहा जाए? महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री को कुछ लोगों ने सलाह दिया कि चारे की कमी है अत: किसानों से गन्ना खरीद कर चाय का प्रबंध करें, मुख्यमंत्री बाबा साहेब भोंसले ने कहा कि गन्ना खरीदने में आपत्ति नहीं है परंतु गन्ना बातौर चारे पशु को खिलाया जाये तो क्या जानवरों को डायबिटीज की बीमारी नहीं हो जाएगी। मुख्यमंत्री की इस अक्लमंदी से सभी विपक्षी नेता एक ही स्वर से बोलने लगे कि भीषण अकाल में इस प्रदेश को ऐसा योग मुख्यमंत्री मिला है। राजस्थान के कृषि मंत्री मिर्ची का खेत देखने गए तो देखा कि सभी पौधों पर हरी मिर्ची लगी हुई है मंत्री महोदय ने कहा कि जब लोग लाल मिर्च खाते हैं तो आप लोगो हरी मिर्च क्यों उपजाते हैं मंत्री जी को बताया गया कि हरी मिर्च, लाल मिर्च बन जाती है तो कृषि मंत्री ने कहा कि दुनिया का आठवां आश्चर्य हुआ कि मिर्ची भी रंग बदलती है। अंग्रेजों के बारे में प्रचार किया जाता था कि हमारा शोषण कर देश का धन अपने मुल्क में ले जा रहे हैं। कहा जाता था कि आजादी के बाद जनता का जनता के द्वारा जनता के लिए जन शासन होगा तथा शोषण पूरी तरह समाप्त हो

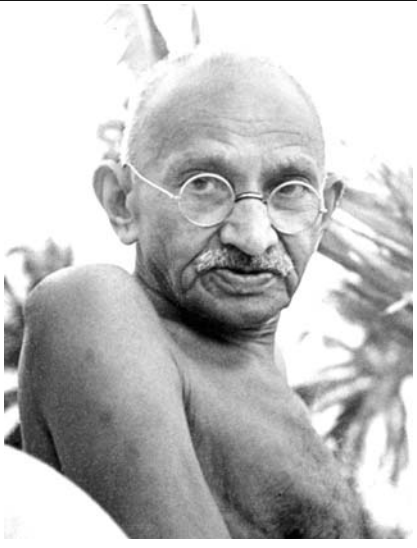

जाएगी। रही बात शोषण की तो जनता पर पहले टैक्स आयकर और एक्सर्साइज के सिवाय दूसरे टैक्स नहीं थे, बदले में निशुल्क सेवाएं काफी थी खासकर स्वास्थ्य और शिक्षा, निशुल्क व्यवस्था के गुणवत्ता में कोई अंतर नहीं होता था। आजादी के बाद शराबबंदी की एवज पर सेल्स टैक्स लगाया गया बाद में शराब की बिक्री। इसी तरह बांग्लादेश के शरणार्थियों के नाम पर टिकट सरचार्ज लगा था। उन्हें वापस गए 35 वर्ष का समय हो गया फिर सरचार्ज जारी है टैक्सों कि हालत यह है कि रोटी से लेकर पानी तक बिजली से लेकर मरने तक टैक्स ही टैक्स उस पर उनकी कोई सीमा नहीं है। हर बजट के समय लोगो का दिल धड़कता है कोई न कोई अंदेशा बना रहता है।

आकड़ों के मुताबिक देश के लगभग ज्यादा 11 हजार रेल पुल ऐसे हैं जिसकी स्थिति नाजुक है और कभी भी ध्वस्त होकर बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकती है। रेल पुल का निर्माण करने में खरबों रुपये की आवश्कता पड़ेगी। अंग्रेज के समय के पुल गंडक, कोईलवर, मोकामा आदि अपनी उम्र पार करने के बाद भी सीना तान कर खड़ी है तथा आपके सामने ठेकेदारों द्वारा निर्माण किया गया गंगा नदी पर पुल निर्माण होते करोड़ों लोगों ने देखा है तथा निर्माण करने वाली व्यक्तियों ने गंगा पुल को अंतिम सांसे गिनते भी देख रहा है। गंडक, कोईलवर, मोकामा और हावड़ा आदि पुल निर्माण के आंखों देखा हाल बनाने वाले क्या इस दुनिया में बच्चे रहे होंगे, शायद नहीं? अंग्रेज के समय निर्माण किया गया अधिकांश पुल लोहा का है किंतु आज के ठेकेदारी प्रथाओं में लोहा के पुल का निर्माण असंभव है क्योंकि इस तरह के पुल में ठेकेदार एवं अभियंता को कमीशन मिलना मुश्किल है एक कहावत है:- एक ही अभियंता का दो चेहरा देखो, अपनी मकान की मजबूती और सरकारी पुल को ढहते देखो। कमीशन की समस्या जनता द्वारा चुने गए कर्णधार से संभव नहीं है ऐसे ही जिसे नई मॉडल के गाड़ियों का लंबा-चौड़ा काफिला नारा जयजयकार और फूल, माला, बैंड, बाजा रास्ते में जुटे लोगों से मुस्कुराते चेहरे हाथ हिलाकर अभिनंदन मैनेजमेंट के नाम पर हजारों खर्च करवाने वाले होते हैं क्योंकि कमीशन का एक हिस्सेदार वही है भले कभी-कभी इन नेताओं का नकली चेहरा देखने का मौका मिल जाता है जब कोई नरसंहार या बड़ी दुर्घटना प्रभावित गांव के थोड़ा पहले ही काफिला ठहरता है, पहने हुए मालाएं फेंक दी जाती है। जयकार एवं नारा पर पाबंदी लग जाती है। चेहरे पर पानी छिड़कर आंसू झलकाने लगते हैं। नेताजी का चेहरा ऐसा कि अब रोने लगेंगे बच्चों को पुचकारने और महिलाओं के सांत्वना देने का दौर शुरू हो जाता है। कुछ ही देर बाद लाउडस्पीकर पर आवाज गूंजने लगती है जोशिले भाषण तालियों की गड़गड़ाहट घोषणाओं ऐलानो की भरमार शुरू हो जाती है। वापसी में वही मस्ती-मुस्कुराहट जो पहले था अखबारों द्वारा देश भर में फैला की काफी मर्माहित है और व्यवस्था बदलने की कितनी इच्छा है। महात्मा गांधी ने दुनिया को साथ खतरों से सावधान किया था :-1. पहला सिद्धांतविहीन राजनीति, 2. श्रम हीन संपत्ति, 3. विवेकहीन सुख, 4. चरित्रहीन ज्ञान, 5. दयाहीन विज्ञान, 6. नीतिहीन व्यापार, 7. त्यागहीन पूजा।

अगर गांधी जी की चेतावनी को समझा जाए तो गांधी की तस्वीर को फ्रेम में कैद है और कील ठोक कर सरकारी दफ्तरों के दीवारों पर लटका दिया गया है। क्या आज के नेता गांधी के सिद्धांतों को अपने आचरण में उतारने की स्थिति में है कितने नेता बाहर और भीतर से एक है जनता आज के नेताओं के आचरण पर भरोसा करने की स्थिति में है ऐसे अनगिनत सवाल आज हमारे सामने खड़ा है। ●

● ई० हिमांशु शेखर

भारत गांव का देश है, इसकी ग्रामीण संस्कृति प्राचीनतम है। दुनिया में अनेक संस्कृतियों के बीच भारतीय संस्कृति की अलग ही पहचान है। भारत के गांव सामाजिक संगठन की एक महत्वपूर्ण इकाई है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने ग्राम स्वराज का परिकल्पना किया था। उनका सपना था कि गांव की अपनी सरकार हो। गांव से जुड़े सभी निर्णय ग्रामीणों द्वारा ग्रामसभा में लिया जाए। गांव की सरकार चुनने में किसी तरह के राजनीतिक दलों का हस्तक्षेप नहीं हो सके। गांधी जी के सपनों को साकार करने के लिए सरकार ने त्रिस्तरीय पंचायती राज का गठन किया।

बिहार में पंचायत चुनाव संपन्न हो चुका है। अब जीते हुए जनप्रतिनिधियों का शपथ समारोह आयोजित किया जा रहा है। 15 जनवरी से नई जनप्रतिनिधियों के हाथों में गांव की सरकार होगी। पंचायत चुनाव सबसे अधिक मुखिया का पद महत्वपूर्ण है। इंदिरा आवास, शौचालय, शिक्षा, हर घर नल का जल, स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं सड़क जैसे कार्यक्रमों की जिम्मेदारी मुखिया के कंधों पर होता है, यदि उन कार्यक्रमों की किसी प्रकार त्रुटि आती है, तो उसकी भी जिम्मेदारी मुखिया पर ही आती है। मुखिया का पद सर्वाधिक महत्वपूर्ण होने की वजह से मुखिया प्रत्याशियों की संख्या भी सर्वाधिक रहती है। नामांकन के दौरान मुखिया पद के उम्मीदवार अपने समर्थकों की भारी भीड़ जुटाई । गाड़ियों की लंबी -लंबी कतारें देखने को मिली। कई प्रत्याशी बैंड -बाजे और घोड़ों के साथ नामांकन दाखिल करने के लिए प्रखंड मुख्यालय आया करते थे। प्रखंड मुख्यालय पर सभी समर्थकों के लिए भोजन की व्यवस्था होती थी, उनमें अधि कांश समर्थक भाड़े पर लाए जाते थे। यह आश्चर्य का विषय रहा कि प्रशासन के सभी पदाधिकारी नामांकन प्रक्रिया के दौरान मूकदर्शक की भूमिका में बनी रहे। सिर्फ नामांकन दाखिले के दिन अनेकों मुखिया प्रत्याशियों ने लाखों रुपये खर्च किए है, जो आचार संहिता का खुल्लम खुल्ला उल्लंघन है, लेकिन उसके बावजूद भी प्रशासन चुपचाप तमाशा देखता रहा। चुनाव प्रचार के दौरान भी मुखिया प्रत्याशियों द्वारा पानी की तरह पैसा बहाया गया। शराबबंदी कानून के बावजूद भी मतदाताओं को लुभाने के लिए शराब बांटी गई। कहीं- कहीं पर प्रति वोट हजार रुपए की कीमत से मतदाताओं को पैसा बांटा गया। यह लोकतंत्र की हार है। पंचायती चुनाव में भी ध नबल और बाहुबलियों का बोलबाला बढ़ता जा रहा है। सरकारी पदाधिकारी भी जान बूझकर चुनाव प्रचार के दौरान आंख बंद किए हुए रहते है। वे जानते है कि, जब तक भ्रष्ट जनप्रतिनिधि चुनाव जीतते रहेंगे,तब तक उनकी भी ऊपरी कमाई चलती रहेगी, क्योंकि वेतन तो पूर्णमासी का चांद है, और ऊपरी आय बहती हुई गंगा है। एक ईमानदार जनप्रतिनिधि ही नौकरशाही में व्याप्त भ्रष्टाचार पर अंकुश लगा सकता है।

लोकतंत्र के लिए दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि आज पैसों के दम पर लोग चुनाव जीत रहे हैं। पंचायत चुनाव से लेकर लोकसभा चुनाव तक धनबलियों और बाहुबलियों की भरमार है। पूर्व में जन आंदोलन के द्वारा नेता पैदा होते थे, लेकिन यह दुर्भाग्य है कि बिहार में जे पी आंदोलन के बाद कोई भी आंदोलन नही हो सका। आज राजनीति में वंशवाद और परिवारवाद हावी होता जा रहा है। राजनीति में अपराधी और पैसे वालों का बोलबाला बढ़ता जा रहा है। मुखिया पद पर ऊपरी कमाई अत्यधिक होने की वजह से इस पद को पाने के लिए बड़े-बड़े लोग लालायित रहते है। एक दौर में सरकार को यह स्वीकार करना पड़ा था, कि मुखिया पद हासिल होते ही लोग स्कोर्पियो और पजेरो से घूमने लगते है। सुशासन बाबू नीतीश कुमार से भी मुखिया के भ्रष्टाचार पर अंकुश नहीं लग सका, तब उन्होंने भ्रष्टाचार को बांटने का काम किया। वर्ष 2016 के पंचायत चुनाव के बाद सरकार ने एक नया आदेश लागू किया, कि मुखिया वार्ड सदस्य के खाते में पैसा भेजेंगे, वार्ड सदस्य काम कराएंगे। सभी वार्ड में एक सचिव का चयन किया जाएगा एवं वार्ड सदस्य और सचिव के संयुक्त हस्ताक्षर से पैसे की निकासी होगी, इस प्रकार सरकार ने मुखिया के भ्रष्टाचार को तीन भाग में बांटने का काम किया। सरकार की यह नीति अच्छी है। यदि भ्रष्टाचार पर अंकुश लगा पाना मुश्किल है, तो उसे बांटना ही बेहतर है। अब यदि मुखिया स्कॉर्पियो से घूमेंगे तो कम से कम वार्ड सदस्य भी बाइक से घूम सकेंगे।

मुखिया की कार्यशैली को देखकर आज बापू की आत्मा रोती होगी। बापू ने ग्राम सभा का सुझाव दिया था। ग्राम सभा में गांव के ग्रामीण अपने गांव के लिए योजनाओं का चयन करेंगे, लेकिन आज ग्राम सभाएं सिर्फ कागजों पर कोरम पूरा करने के लिए किया जाता है। इस नई गांव की सरकार से यह उम्मीद करते हैं कि बापू के सपनों को साकार करते हुए ग्राम सभा की बैठक नियमित रूप से बुलाएं एवं ग्रामीणों द्वारा चयनित कार्यो को पूरा करने की कोशिश करें।

पंचायत चुनाव समापन के बाद प्रखंड प्रमुख और जिला परिषद अध्यक्ष के चुनाव की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। पंचायत समिति के सदस्यगण मिलकर प्रखंड प्रमुख का चयन करते है, एवं जिला परिषद के सदस्य गण मिलकर जिला परिषद अध्यक्ष का चयन करते है। इन दोनों चुनाव में वोटरों को अपनी ओर लाने के लिए पैसा का ऑफर दिया जाता है। कई बार इस चुनाव के दौरान पंचायत समिति सदस्य गण एवं जिला परिषद के सदस्य जनों का अपहरण तक कर लिया जाता है। दावेदार अपने समर्थकों को जिला एवं राज्य से बाहर किसी होटल और रिसॉर्ट में छुपा कर रखते है। वहां उनके सुख सुविधा का पूरा ख्याल रखा जाता है, एवं मतदान के दिन उन्हें सीधे कार्यालय में लाया जाता है। बिहार में

दलीय आधार पर पंचायत चुनाव नही कराए जाते है, लेकिन उसके बावजूद भी प्रखंड प्रमुख एवं जिला परिषद अध्यक्ष के चुनाव में स्थानीय विधायक और सांसद अपने मनोकूल व्यक्ति को उस पद पर बैठाने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा देते है। चुनाव आयोग इन सभी बातों को जानते हुए भी खामोश बैठा हुआ है इनके चयन प्रक्रिया में बदलाव लाने की आवश्यकता है। जिस प्रकार मुखिया का चयन सीधे चुनाव के सम्पन्न किया जाता है, उसी प्रकार प्रखंड प्रमुख एवं जिला परिषद अध्यक्ष का चयन भी चुनाव द्वारा कराया जाना चाहिए।

आम जनता बेबस भरी नजरों से चुपचाप तमाशा देखती रहती है, और समय आने पर अपने मत की ताकत से ऐसे लोगों को हराने का काम करती है। इस चुनाव में कई पुराने चेहरे बदल दिए गए। बिहार में कुल 8067 मुखिया में 6000 से अधिक पुराने मुखिया चुनाव हार गए । इस बदलाव को समझने की आवश्यकता है। अनेकों मुखिया पर गबन एवं भ्रष्टाचार का आरोप है। जब धरातलीय स्व-शासन की व्यवस्था का नींव आकंठ रूप से डूबे भ्रष्टाचार से होगा तो समझना स्वाभाविक है कि इससे उपर की जन व्यवस्था में कितनी अनियमितता का अनाचार होगा। जरूरत इस बात की भी है कि हजारों मुखिया के विरुद्ध सरकारी राशि के दुरुपयोग/गबन के मामलों का त्वरित निपटारा किया जाए।

यदि इस पद का उपयोग सिर्फ पैसा कमाने के लिए किया जाएगा, तो निश्चय ही आगामी चुनाव में जनता आप को माफ नहीं करेगी। कई पंचायतों में बड़े-बड़े पंचायत भवन बने हुए है, लेकिन शायद ही कभी कोई मुखिया पंचायत भवन में बैठकर जनता की समस्याओं को दूर करने का प्रयास करता है। पंचायत स्तरीय सभी कार्यों का निष्पादन पंचायत भवन में होना चाहिए। पंचायत से जुड़े सभी कर्मचारियों को नियमित रूप से पंचायत भवन में आना चाहिए। यदि पंचायत स्तरीय कार्यों के लिए आम जनता को प्रखंड कार्यालय का चक्कर लगाना पड़े, तो यह ग्राम स्वराज की हार है। मुखिया के ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, उन्हें इमानदारी पूर्वक अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए। गांव के विकास में ही देश का विकास है। ●

(लेखक सह समाजिक कार्यकर्ता हैं, केसपा, गया)

भारत लोकतंत्र की प्रयोगशाला है, अनपढ़ भी विद्वानों से सैलूट लगवाते हैं

● **डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह**

भारत के लोकतांत्रिक व्यवस्था का प्रयोगशाला संसद है प्रयोगशाला में ऐसे लोगों को जाने एवं प्रयोग करने की छूट है। जो प्रयोग करना जानता ही नहीं है। यदि बहुमत के आधार पर बैलगाड़ी चलाने वाले को हवाई जहाज का पायलट बना दिया जाए तो हवाई जहाज एवं यात्री की क्या दुर्गति होगी यह सोचनीय विषय है तथा यह एक गंभीर प्रश्न है प्रयोगशाला रूपी सांसद में प्रयोग करके देश की ऐसी दुर्गति कर दी है लगता है कि अब भारत का स्वाभिमान कभी नहीं वापस होगा संसद रूपी प्रयोगशाला में पहुंचे लोगों ने देश की ऐसी स्थिति बना दी है कि जैसे कारखाना में सामान उत्पादन होता है उसी तरह देश में लाखों अपराधी एवं घूसखोर नित्य दिन पैदा हो रहे हैं। जिसके कारण लाशों की कतारें सज रही है तथा विकास योजनाओं की गुणवत्ता समाप्त हो चुकी है अंग्रेजों के जमाने में अपराधी और पुलिस के बीच संबंध इस तरह होता था जैसे अंधकार और रोशनी के बीच होता है। प्रयोगशाला में ऐसे-ऐसे ठेकेदार पैदा होते हैं कि उस ठेकेदार द्वारा निर्मित भवन-पुल आदि ठेकेदारों की मृत्यु से पहले ही ध्वस्त हो जाते हैं आपकी आंखों के सामने गंगा पर बन रहा गांधी सेतु जो जर्जर की स्थिति में है और कभी भी धाराशायी हो सकता है जबकि पुल निर्माण करने वाला अधिकांश अभियंता जीवित होगा तथा पुल निर्माण में लगे अभियंता का अपना मकान देखेंगे तो शायद अभियंता के पुत्र की मश्त्यु के बाद भी शानदार ढंग से खड़ा मिलेगा। अंग्रेजों के जमाने का निर्मित पुल गंडक कोइलवर, हावड़ा सोन, के पुल देखकर आप दंग रह जाएंगे आज इस पुल को बनाने वाले इंजीनियर की कौन कहे बेटे और पोते भी इस दुनिया में नहीं होंगे लेकिन पुल अब उसी शान से बरकरार है।

प्रयोगशाला में जुटे लोगों ने पूरे देश में ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी है कि जिस-जिस अधिकारियों को अथाह पैसा है उसे मुफ्त में इलाज, फोन, गाड़ी, भोजन की व्यवस्था है। पैसे के अभाव में इलाज करवाने में जो असमर्थ है उसके लिए कोई व्यवस्था नहीं है। हत्यारा, गुंडा, गबनकर्ता, घोटालेबाज को जेल में मुफ्त भोजन की व्यवस्था तथा जो किसान, मजदूर, आम जनता कर्ज में डूब कर कराह रहे रहा है तथा कर्ज के कारण जिंदगी और मौत के बीच झूल रहे हैं वैसे लोगों से जेल में भी भोजन का पैसा लिया जाता है। आज सुसज्जित शिक्षा को विदेशी हाथों में देने जा रही है। ब्रिटेन में विश्वविद्यालयों की ऊंची फीस चुकाने के लिए 25 फीसदी छात्रों को देह व्यापार में उतरने को मजबूर होना पड़ रहा है। यदि यही हाल रहा तो भारत की संस्कृति मिट जाएगी तथा कॉलेज की महंगी फीस चुकाने के लिए भारत की छात्रा को भी देह व्यापार करने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है। प्रयोगशाला में प्रयोग कर रहे सांसदों ने कई बार सुप्रीम कोर्ट के फैसले को जो समाज के हित में था उसे रद्द कर दिया। दूसरी ओर व्यस्कों द्वारा शादी के पूर्व यौन संबंध पर सभी सांसद चुप हैं। शायद लग रहा होगा कि सभी सांसदों को भी नई-नई युवती रखने की खुली छूट मिल गई हो। क्या चुप्पी साधे सांसद महोदय बताएंगे कि शादी पूर्व यदि भाई-बहन के यौन संबंध, चाचा-भतीजी के यौन संबंध, मामा-भांजी के यौन संबंध से जो बच्चा पैदा होगा, उसके रिश्ते का क्या नाम होगा? यह रिश्ता सांसदों को ही आविष्कार करना होगा। परंतु रिश्ता को भारतीय संस्कृति एवं समाज मान्यता नहीं देगी। जनता जब चुप्पी साधे रहेगी तो प्रयोगशाला में जुटे लोग ऐसे-ऐसे कानून बना सकते हैं जो देश को बर्बाद करके रख सकता है। आज एक तिहाई सांसद अपराधिक चरित्र के हैं। यदि आधा से ज्यादा सांसद अपराधी हो जाएगा। तब संभव है कि यह लोग ऐसा कानून बनवा देंगे कि सांसद और विधायकों पर किसी भी स्थिति में मुकदमा नहीं होगी और यदि है तो समाप्त हो जाएगी साथ ही सांसद विधायक के अनुशासन पर हत्या तथा मुकदमा समाप्त कर दिया जाएगा तो उस समय जनता और न्यायालय क्या करेगी क्या मालूम है अब सांसदों ने ऐसा काम कानून भी बना दिया है कि गवन घोटाला करने वाले के विरुद्ध आम जनता थाने में मुकदमा नहीं कर सकता है तथा निर्दोष आम जनता पर कोई भी व्यक्ति तथा पुलिस मुकदमा कर जेल भेज सकता है सांसद और विधाानसभा में दिन-प्रतिदिन अपराधियों का बोलबाला बढ़ते जाना लोकतंत्र के लिए कितना घातक है या तो आने वाला समय ही बताएगा लेकिन आम जनता के भीतर इन अपराधियों के विरुद्ध खोलते गुस्से के भव्य परिणामों को भी नहीं भूलना चाहिए जनता की अदालत में इन्हें देर सवेर हाजिर होकर अपने गुनाहों को स्वीकार करना ही होगा। ●

विलुप्त होती मर्यादा

● विपिन बिहारी वर्मा

हम आज भी अपने सदियों या हजारों वर्षों पुराने उन्ही सस्कारों से जुड़े हैं जो घर में हमारे बुजुर्गों ने हमें सिखाये है। हम मानते हैं कि हमारे में और चीटियों में, बिल्लों में पशुओं में यहां तक कि पेड़-पौधों में पहाड़ों में कोई अंतर नहीं है। 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' वाली सोच से हम एकाकार है। हमारे लिये कोई गैर नहीं क्योंकि हम मानते हैं कि 'वसुधैव कुटुम्बकम'।

दूसरी तरफ जो स्थिति है उसमें मजबूरन कहना पड़ता है कि 'रहने को घर नहीं है, सारा जहां हमारा'।

दुनियां में विकास की बयार बह रही है, 'नमो' वाली नहीं कुछ और ही और इसी बीच पिस रहे हैं हम! इन्ही दिनों कतिपय अलग-अलग मत उभर आये हैं, जिनके मानने वाले नेताओं या नरपशुओं में इंसान जैसी कोई बात ही नहीं। गजब है कि इंसानियत की मांग उन्ही लोगों द्वारा की जाती है। आप ऐसे नेता चुनो जिसे 'आप कहो कि उठ तो उठे, आप कहो कि बैठ तो बैठे, आप कहो कि भाग तो भागे, आप कहो कि उठ तो उठे, आप कहो कि मार तो मा.., अरे नेता चुनना है कि नौकर? इस हिसाब से तो नौकर ही चुनना कहा जायेगा लेकिन जिस कौम में नौकर को ही नेता कहा जाये उसे आप क्या कहेंगे? यह भी गजब है कि शरणार्थी बनने जाना है तो अपने संतावन देशों को छोड़कर किसी अन्य प्रजातांत्रिक देश में! तो प्रजातांत्रिक देश बनाने में भी कोई एजेन्डा ही था क्या?

कुल जमा चौदह सौ साल का इनका इतिहास है लेकिन संतावन देश है उनके। इनकी विशिष्ट जानकारियों के कुछ नमूने देखे जाये, ये मानते हैं कि पृथ्वी ही केन्द्र में है और सूरज, चांद, सितारे सभी इसी की परिक्रम करते हैं। ये पृथ्वी को चपटी मानते हैं और अपने अनुयाइयों को बताते हैं कि किनारे में जाने पर गिरने का खतरा है। एक और कौम है जो अपने को ज्ञान में, विज्ञान में, जानकारियों में सबसे उपर मानती रही है, इनके पास दो सौ से अधिक देश हैं। पता नहीं हमारे नेताओं को कौन सा लकवा मार गया था, जो इस देश को प्रजातांत्रिक बना दिया और उपर से कह दिया कि इस देश के प्राकृतिक संसाधनों पर पहला हक मुसलमानों का ही है। कुछ लोग और उपर जाकर कहते हैं कि मुसलमानों की बेटियां ही उनकी अपनी बेटियां हैं। अखिलेश यादव हैं, ये भारत माता के अनोखे सपूत जो अपने बाप को बाप नहीं समझते! ऐसे लोगों की मंशा पर शक पर भी होता है, मुसलमान तो अपनी ही बेटियां को नहीं छोड़ते, पता नहीं ये चाहते क्या है?

तो मुझे लगता है और मैंने इस बात के लिए आपको ही सही पाया है कि एक विमर्श की शुरूआत की जाये कि क्या हम हिन्दुओं को अपने प्राचीन टेक्सट में कुछ अंतर करना पड़ेगा? और अगर अंतर करना पड़ेगा तो क्या? देखा जाये तो हमारी सभी पुस्तकें उस दौर में लिखी गयी है जब हमारे अलावा कोई था ही नहीं और उदारता भी इतनी थी कि अन्य मतावलम्बियों को सामने आने और खुलकर खेलने का मौका मिल गया! इस पर कृपया विचार किया जाये और उत्तर देने की भी पहल होनी चाहिए।●

कानूनी सलाह

शिवानंद गिरि

(अधिवक्ता)

Ph.- 9308454485
7004408851

E-mail :-
shivanandgiri5@gmail.com

☆ क्या वकील अपने घर का इस्तेमाल चेंबर या ऑफिस के लिए कर सकता है इस संबंध में क्या है कानून जानिए?

यह काफी सामान्य बात है कि ज्यादातर मामलों में अधिवक्ता अपने घर से अपना कार्यालय /चेंबर चलाते हैं लेकिन इससे यह सवाल उठता है कि क्या घर या रिहायशी परिसर का इस्तेमाल ऑफिस /चेंबर चलाने के लिए करना व्यावसायिक गतिविधि है और इस पर वाणिज्य कर लगाया जाना चाहिए या नहीं? समाज में कानून का उद्देश्य व्यवस्था को बनाए रखना और समाज को धारण करने वाली नैतिक पवित्रता को बनाए रखना है। वकील अदालत के अधिकारी होते हैं और न्याय वितरण प्रणाली के सबसे महत्वपूर्ण स्तंभों में से एक होते हैं। कानूनी पेशा एक महान पेशा होता है और वाणिज्य और व्यापार से बिल्कुल अलग है । यह एक पेशेवर सेवा है क्योंकि यह बहुत ही व्यक्ति विशिष्ट है और व्यक्ति के कौशल और ज्ञान पर आधारित है । सेवा की प्रकृति के कारण बार काउंसिल ऑफ इंडिया रूल्स के नियम 36 में प्रावधान है कि अधिवक्ता प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विज्ञापन नहीं करेगा और जिन मामलों में वर्गीकृत रहा है उसके संबंध में विज्ञापनों सर्कुलरो, दलालों, समाचार पत्रों की टिप्पणियों को प्रस्तुत करने या प्रेरित करने या अपनी तस्वीरों को प्रकाशित करने के लिए काम की याचना नहीं करेगा।

क्या आवासीय परिसर से अधिवक्ता कार्यालय चलाना एक व्यवसायिक गतिविधि है?

वी शशिधरण बनाम पीटर और करुणाकर के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि अधिवक्ता का कार्यालय कोई वाणिज्यिक प्रतिष्ठान नहीं है इसलिए इस पर पंजीकरण की दुकानें और प्रतिष्ठान अधिनियम के कानून लागू नहीं होते हैं । मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने अपने एक फैसले में शिवनारायण और एक अन्य बनाम एमपी बिजली बोर्ड और अन्य में उस कानून को रद्द कर दिया जिसमें अधिवक्ता के घर पर बने चेंबर और ऑफिस को बिजली बिल के भुगतान के लिए वाणिज्यिक श्रेणी के तहत वर्गीकृत किया गया था। कोर्ट ने इस वर्गीकरण को मनमाना और संविधान के अनुच्छेद 14 का उल्लंघन पाया । मध्यप्रदेश हाईकोर्ट के उस निर्णय के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट में अपील सिविल अपील नंबर 1065/ 2000 दिनांक 27. 10. 2005 दायर की गई थी । जिसे तीन जजों की पीठ ने खारिज कर कहा कि वकील के लिए बिजली की घरेलू दर लागू होगी अगर उनका चेंबर या ऑफिस घर में बना है। हाल ही के मामले में कोलकाता उच्च न्यायालय में आरोप सरकार बनाम सीईएससी लिमिटेड और अन्य में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि एक अधिवक्ता का पेशा बिल्कुल भी व्यावसायिक गतिविधि नहीं है। यदि कोई वकील अपने चेंबर ऑफिस को अपने घर में चला रहा है तो यह संपत्ति का व्यावसायिक उपयोग नहीं माना जाएगा। बीएन मांगो बनाम दक्षिण दिल्ली नगर निगम में दिल्ली हाईकोर्ट ने कहा कि महज एक अधिवक्ता अपने घर से कार्यालय चला रहा है यह उसे व्यापारिक इमारत नहीं बना देता है । हाई कोर्ट ने दिल्ली के मास्टर प्लान 2021 का हवाला दिया जिसमें आवासीय परिसर का उपयोग डॉक्टरों, वकीलों, चार्टर्ड अकाउंटेंट ,आर्किटेक्ट आदि द्वारा व्यवसायिक गतिविधियों के लिए किया जा सकता है। मुंबई हाई कोर्ट ने राजेंद्र जी शाह बनाम महाराष्ट्र राज्य विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड के मामले में माना कि अपने कार्यालय के उद्देश्य के लिए वकील डॉक्टर आदि जैसे पेशेवर द्वारा उपयोग किए जाने वाले आवासीय परिसर को बिजली शुल्क उद्देश्यों के लिए घरेलू उपयोग के रूप में चार्ज किया जाएगा। इस तथ्य के बावजूद की व्यावसायिक गतिविधि उक्त आवासीय परिसर में की जा रही है लेकिन यदि उक्त आधार का उपयोग किसी अन्य स्वतंत्र अधिवक्ता के साथ और विशेष रूप से कार्यालय के उद्देश्य के लिए किया जाता है तो इसे एक वाणिज्यिक गतिविधि माना जाएगा और तदनुसार शुल्क लिया जाएगा।

इसी प्रकार राजस्थान एचसी जे वी वी एन लिमिटेड और अन्य बनाम श्रीमती परिणीति जैन और एक अन्य AIR 2009 राज 110 के मामले में हाईकोर्ट ने माना कि घर से अपना कार्यालय चलाने वाले वकील से वाणिज्यक आधार पर अतिरिक्त शुल्क वसूलना अवैध है लेकिन यह भी स्पष्ट किया गया कि यदि वकील एक स्वतंत्र वाणिज्यक स्थान पर कार्यालय चला रहा है तो ऐसे आवास को वाणिज्यिक दरों से छूट नहीं दी जा सकती है। पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय ने जिला बार एसोसिएशन पंचकूला बनाम हरियाणा राज्य के मामले में हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण के नियमों को रद्द कर दिया जिसमें वकील को घर आवासीय परिसर को चेंबर या ऑफिस के लिए उपयोग करने के लिए शुल्क निर्धारित किया गया था। कोर्ट ने कहा कि यदि कोई लेखक कोई किताब लिखता है और वह उसकी कमाई का स्रोत बन जाता है तो क्या इसे व्यावसायिक उपयोग कहा जा सकता है ? कोर्ट ने माना कि एक वकील का पैसा भी कागजात , किताबों के अध्ययन पर आधारित होता है इसके लिए वह एक पुस्तकालय रखता है एक नेक पेशा होने के कारण यह एक व्यावसायिक गतिविधि नहीं हो सकती है।

दिल्ली प्रदेश नागरिक परिषद बनाम भारत सरकार (2006) 6 (SCC 305) में सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि सीए, वास्तुकार, वकीलों और डॉक्टरों द्वारा व्यवसाय की गतिविधि कुल आवासीय क्षेत्र की 50% सीमा से अधिक पर नहीं किया जा सकता है, साथ ही ऐसी गतिविधि कोई ऐसे व्यक्ति द्वारा नहीं किया जा सकता है जो उस आवासीय परिसर का निवासी नहीं है। इसलिए उपरोक्त निर्णय और बार काउंसिल ऑफ इंडिया के नियमों के प्रासंगिक प्रावधानों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यदि कोई अधिवक्ता अपने घर से अपना कक्ष कार्यालय चलाता है तो इसे व्यावसायिक गतिविधि नहीं कहा जा सकता है लेकिन यह नियम पूर्ण रुप से लागू नहीं हैं और स्थानीय कानून द्वारा प्रतिबंध के अधीन है। नगरपालिका प्राधिकरण घर और कार्यालय के लिए आवासीय परिसर के उपयोग के अनुपात की शर्तें लगा सकता है जिसमें यह शर्त है कि केवल घर में रहने वाले व्यक्ति द्वारा ही ऑफिस चलाया जा सकता है यह विधि मान्य शर्त है । इसके अलावा यदि कोई वकील अपना कार्यालय कक्ष किसी स्वतंत्र स्थान से चलाता है तो वह पूर्णता वाणिज्यिक माना जाएगा।

PATNA INSTITUTE OF NURSING & PARAMEDICAL SCIENCE

Recognized by: Health Deptt. (Govt. of Bihar)
Approved by: Indian Nursing Council (Govt. of India)
Affiliated by: Aryabhatta Knowledge University (Govt. of Bihar)

नामांकन के लिए सम्पर्क करें

Paramedical P.G.
Degree / Diploma
Lateral Entry Course

- फिजियोथेरापी
- हॉस्पीटल मैनेजमेंट
- इ.सी.जी.
- मेडिकल लेबोरेट्री
- ऑपरेशन थियेटर
- ऑपथोमोलॉजी
- आकुपेशनल थेरापी
- रेडियो इमेजिंग
- ड्रेसर
- सिनेटरी इंस्पेक्टर

NURSING COURSE

- A.N.M. • G.N.M.
- B.Sc. Nursing
- Post Basic B.Sc.Nursing
- M.Sc. Nursing

Brahampur, New Jaganpura, New Bypass Road, Patna
Mob. 9835686853, 8789409251
website: www.pathaparamedical.com | email: riantuma@gmail.com

नववर्ष, गणतंत्र दिवस एवं बसंत पंचमी के अवसर पर ग्राम पंचायत-सोनवर्षा, भोजपुर की समस्त जनता को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ।

-: निवेदक :-

पप्पू साह
पंचायत समिति सदस्य, सोनवर्षा
सह उप प्रमुख, चरपोखरी, भोजपुर

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
रजिस्ट्रेशन नं०:-03-9284 of 2000-2001
Estd. 2000
पाटलिपुत्र स्कूल ऑफ फायर एण्ड सेफ्टी मैनेजमेंट
बिहार सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
रजिस्ट्रेशन नं०:-3745 of 2009
ISO 9001:2015 Certified, Reg No.: QMS260918707
इंटरमीडिएट तथा स्नातक पास विद्यार्थियों के लिए
SAFETY INSPECTOR & SAFETY OFFICER
बनकर देश तथा विदेश में बेहतर रोजगार का सुनहरा अवसर
कम खर्च और कम समय में
शानदार नौकरी पाइये

Lalan Kumar Prasad
Director
+91-9334107607, 9234729075
Patna : 410, 4th Floor, Ashiana Galaxy, Exhibition Road, Patna-800001
website : www.psfsm.in | Email us on :- lalan1944@gmail.com

केवल सच, केवल सच टाइम्स,
केवल सच पोर्टल न्यूज, kewalsach news (youtube)
केवल सच समाजिक संस्थान
की ओर से नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएँ।
निवेदक : श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट

गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर समस्त भारतवासियों को हार्दिक बधाई।

मेथोडिस्ट हॉस्पीटल
प्रताप सागर,
बक्सर-802101 (बिहार)

-: सुविधाएँ :-
सभी सुविधाओं से लैश। मुफ्त रेलवे पास। गरीब रोगियों को विशेष छूट।

डॉ० आर.के. सिंह

Hotel Maurya
Patna

Hotel Maurya – Patna is a pioneer project of **Bihar Hotels Limited (BHL).** It is the only **Five Star** category hotel in the State of Bihar with friendly face of affordable luxury. BHL has been successfully operating its Five Star Hotel in Patna since **1978.** Situated in the heart of the city, Patna, the hotel reflects the **historic grandeur** of this city.

Corporate Facilities & Services: Centrally located in the Commercial heart of Patna the Hotel provides Intricately & elegantly designed rooms, Central Air- Conditioning, Direct dialing from rooms with call detail print-out facility, Satellite LED television, Choice of **Seven Convention Halls** of varied capacities, **Heritage rooms** for private dining , **Business Centre, Shopping Arcade, Bank facility, Travel counter, Swimming pool, Safe deposit lockers, Fitness centre & Wi-fi**, all within the hotel premises.

Dining:

- *Vaishali Café* - Walk-in for Breakfast and Business Buffet Lunches. The a-la-carte table offers a multi cuisine and buffet spreads to tinkle those taste buds.
- *Spice Court* – Restaurant serving Indian, Continental, Thai & Chinese cuisine.
- *The Pastry Shop* – Provides all kinds of Baker's confectionery viz; Mouthwatering cakes, Crossiants, Breads, Muffins etc. It also provides free home delivery of cakes of 6 pound onwards.
- *Bollywood Treats*- A matchless meeting point for Munchies, Music, TV shows, Pool Table, Games for kids. Thus, providing Masti not only for adults but also for kids.

Rooms:

- Step into an universe of old world nobility & colonial charm at the spacious VVIP suite of rooms, where your every demand for luxury is met in a manner that's perfected to please. What's more, it's accommodating enough to entertain an entourage of guests. Elegantly designed premium rooms with beautiful interiors and excellent facilities

Total Rooms: 77 – Double: 73, Suites: 04
Credit Cards: Visa, Master, Amex, Bob Cards
Access (in kms): Apt: (07), Rly. Stn.:(01)